उत्तराधिकार

(हिन्दी उपन्यास)

प्रफुल्ल प्रभाकर

प्रकाशक

हिमकर प्रकाशन

अजमेर

प्रकाशक निवास—
चन्द्रमोहन 'हिमकर'
3, गुलराज क्वार्टर्स
नसीराबाद रोड,
अजमेर (राज) 305001


संस्करण – 1990
मूल्य – 60 00 रुपये
आवरण – प्रकाश आर्टिस्ट

मुद्रक—
मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स
कड़क्का चौक, दक्षिणी वाडा,
अजमेर–305001


Hindi Novel—Uttradhikar (Hindi Novel
By—Prafulla Prabhakar


आदरणीय सुविख्यात
कथाशिल्पी एवं उपन्यासकार
श्रीयुत् राजेन्द्र अवस्थीजी
को
सादर भेंट

उत्तराधिकार मेरा नही आपकाही है !



उत्तराधिकार आजादी के वाद आये सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक अवमूल्यन का महज एक स्थिर-चित्र (स्टिल-फोटोग्राफ) है। इसमे लेखक, द्रष्टा के रूप मे मैंने अपनी ओर से कुछ भी तो नही जोड़ा है।

घर, सडक, नुक्कडो, चाय की दुकानो, अखवारो, कार्यालयो की मेजो पर ताश खेलते वावूओ की गर्म वातचीत, चर्चाएँ अनिरजित हो ऐसा नही। यह चित्र ही कुछ ऐसा है।

इतिहास मे पढे उजले, गौरवमय समाज का कोई सकेत, चिन्ह, अवशेष ढूढने पर भी नही मिलता। यदि है तो किताबो, वाचिक या सस्कृति की मौखिक झूठी आत्मप्रशसा के ढकोसलो मे। दोष किसका और कहा है समझने मे आपको अधिक परेशानी नही होनी चाहिये।

नई पीढी को उत्तराधिकार मे जो मिलना चाहिये और जो मिला है उससे वह पूणरूप से व्यक्तिवादी, स्वार्थलोलुप, भौतिकता से नमित, कठोर शब्दो मे कहू निमम हो चुकी है तो भी गलत नही होगा। जिसके परिणाम हर क्षण कौन सहन नही कर रहा आप ही विचार करले। सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, विघटन चरमोत्कर्ष पर है अभी और होगा। पर सच यह है सस्कार मे इन्हें आपने दिया भी क्या है, तव वह उत्तरादायी हो तो क्यो ?

इन सवके वावजूद आईये। आप-हम मिल वतमान समाज के जर्जर, गलित चित्र को मनमोहक उजले इतिहास के अनुरूप वनाने का यत्न तो करें। सभवत कोई सुधार आये।

जिससे कल नई पीढी प्रस्तुत उत्तराधिकार जैसे प्रश्न फिर आपके-मेरे सामने ला खडे न करदे।

प्रस्तुत उपन्यास का चित्र कसा है स्वय देख ले। मेरे प्रस्तुत उपन्यास से कही अलग तो नही।

धन्यवाद !

विनीत

प्रफुल्ल प्रभाकर

एक

शाम में सर्दी मे जल्दी ही पीले रग को छोड काले में बदल जाती हैं। चारो ओर एक सन्नाटा, चुप्पी। आवाज के नाम पर पेडो पर बने घोसलो मे पक्षियो का फुदकना या हल्के चहचहाना भर।

अपने वार्ड मे चुपचाप बिस्तरे पर लेटे ट्यूबलाईट पर मडराते दो-चार मच्छर जसे कीटो को लगातार इधर से उधर उडते देख रहा हू। घात लगाये छिपकली से वे बेखबर हो ऐसा नही उधर छिपकली भी अपने काम मे दत्त-चित है। तभी पीछे से डॉक्टर प्रसाद और नर्स की आवाजे आती है।

कहिये। श्रेयास बाबू कैसे हैं अब।

कैसे नहीं। कहिये बस मैं हूँ। विनीत का कोई समाचार।

नही। अब तक तो नही। आ जायेंगे वे। फोन पर उनके सचिव ने बताया था कि दिल्ली से बाहर हैं और उनका कार्यक्रम भी व्यस्त है।

क्या करेगा वह इतने पैसो का। यहाँ मैं अपनी अंतिम श्वासें ले रहा हू।

खैर। आप परेशान न हो। डाक्टर्स की रिपोर्ट भी आ गई है। वही इलाज लिखा है जो चल रहा है।

छोडिये भी, डाक्टर प्रसाद। कौन सा इलाज करना रह गया है। अब चाहता था विनीत एक बार आ जाता तो उसे सब सम्भला चैन से इस शरीर को छोड देता मैं। उसको सूचना तो मिल ही गई होगी अब तक। तीन महीने पूरे होने जा रहे हैं आपके अस्पताल मे। एक सप्ताह छोड ऑपरेशन, लगातार आपरेशन से घबरा गया हू। इस तरह जीने का क्या अर्थ है। महज सुबह होते सूरज को देखते शाम तक दिन को काटना, फिर लम्बी रातों को। सब अनावश्यक लगता है।

आपने दवा तो ले ली थी। कुछ देर बाद इंजेक्शन भी लगाने हैं।

हाँ, दवा दे गई थी नर्स। आप आराम करें डॉक्टर सब चलता रहेगा।

डॉक्टर प्रसाद पास खडी वाली नर्स को निर्देश देते चले गये हैं।

अब फिर अकेला हू अपने कमरे मे। सामने कोने म बैठी नर्स स्वेटर बुनने म लगी है। उसका ध्यान मेरी ओर नहीं है। सीने मे तेज दद उठने लगा है। चाहते हुए भी बिस्तर पर रखी घण्टी के बटन को नही दबाता मैं।

इस दद मे भी अनजाने सुख को ढूँढने लगता हू। आखें बन्द कर चाहता हू सो जाऊ। पर एसा नहीं कर पाऊँगा जानता हू। तीन महीने से ऊपर बीते यहाँ केवल सो ही तो रहा हू। डॉक्टर्स ने उठकर चलने तक के लिए मना किया हुआ है। अपने वक्ष पर आपरेशन के टाको म चुभन का अनुभव करता हू। पूरा वक्ष काट-छाँट दिया गया है। हाथो की अगुलियों से पैरो तक कोई स्थान नहीं ढूँढ पाता जहा इन्जक्शनो की सुईयाँ नहीं गडाई गई हो। सारा शरीर छलनी सा जान पडता है मुझे।

विनीत के नही आने का अथ उसकी व्यस्तता नही हो सकती। अवश्य ही उसका अहँकार ही अधिक है। तीस वष से अधिक एस ही निकल है। जब उसने और मने कभी बैठकर ठीक से बात भी नहीं की। एक टेबल पर बठ कर साथ खाना खाया एक घर की छत के नीचे सोये। पर कभी मुझे और न कभी उसे ही पिता अथवा पुत्र होने की किसी हल्की सी सवदना ने छुआ तक भी हो। हर क्षण मेरा ध्यान अपने व्यवसाय के विस्तार को ढूँढता रहा। एक के बाद दूसरे उद्योग, मशीनो को बनाते चले जाने का भूत मेरे पर सवार था। उन सारी योजनाओ म विनीत को कैसा भी अधिकार नही दे रखा था कि उसका कोई दखल भी हो। सारे काम मेरे अपने मेरे निर्देशों, मेरी योजनाओ को साकार करते चले जाते थे। उन सारी भागदौड उलझनो व्यस्तताओ म उम्र कब गुजर गई याद नहीं आती। अब समय मेरी पकड से दूर हो गया है। चाहते हुए भी उसे छू तक नहीं सकता। समय हाथ से बालू मिट्टी की तरह कैसे खिसकता चला गया अब हो जान पाया हू मैं। विशाल औद्योगिक संस्थानो को बनाने वाला म इस बिस्तर पर लेटा उनके निर्वासित होने, हाथ-पाव पसारने की कल्पना भर कर सकता हू और अधिक क्या।

श्रेयास बाबू। थोडा हाथ दीजिये। इन्जेक्शन लगाना है।

कौन। सोनल। हाँ, इधर आकर लगा दो। यह हाथ भी कहा है मेरे बस म। हिला भी नहीं पाता म।

डाक्टर सोनल मेरे बिस्तर की दूसरी ओर या इन्जक्शन लगाती है।

म तरा नींद आ गई थी श्रेयास बाबू।

हां। जागी रातों के स्वप्न देख रहा था डाक्टर और हो भी क्या सकता है।

आराम करें आप। दिल्ली से इजेक्शन्स आ गये अभी शाम को।

विनीत के आने की कोई खबर, डाक्टर।

नहीं। मुझे बताया नहीं प्रसाद साहब ने।

ठीक है।

डाक्टर कमरे से बाहर चली गई है। नर्स को देखता हूं कोई किताब पढ़ रही है वह। हाथ को रजाई के अन्दर कर लेना चाहता हूं। हिला नहीं पाता। चाहते हुए भी नर्स को नहीं कहता। घड़ी पर नजर जाती है दस ही बजे हैं अब तक। लगता ऐसा है रात के कोई दो बजे हों। अनन्त शांति है सारे अस्पताल परिसर में। कैसी भी आवाजें नहीं, हो भी क्या सकती है।

विनीत के सचिव ने ही भेजे हैं इंजेक्शन्स। वही करता है यह काम। उसे समय कहां है कुछ करने तक का। पता नहीं कहां होगा वह। एक बेवजह जिन्दगी क्यों जी रहा हूं मैं समझ में नहीं आता। सारे कारोबार अथाह सम्पत्ति को भूल जाना चाहता हूं। सिर्फ दौड़ता जाना और अपनी उस हालत पर सोचता हूं तो कुछ भी तो नहीं। बस इतना सा एक बिस्तर, डाक्टर्स, दवायें, ऑपरेशन्स इनसे अधिक कुछ भी तो नहीं। लगता है पूरे जीवन की भागदौड़ का अर्थ इन्हें पा लेने से अधिक कुछ भी नहीं। न जाने क्या [illegible] उस दौड़ में भागता रहा मैं। अपना कहने को कोई भी नहीं। एक [illegible] विनीत। उसे समय नहीं मुझसे मिलने आने तक का। हां, [illegible] दौड़ में उलझ गया है। उसे अन्त मालूम है नहीं। अभी [illegible] जाना अच्छा लगता है और कुछ नहीं।

श्रेयास बाबू दवा ले लें।

क्या करोगी, देकर

दवा का समय हो गया।

दे दो। तुम्हारी ड्यूटी है [illegible]

श्रेयास बाबू आप सोते नहीं। [illegible] मिलते हैं आप।

जागने और सोने में [illegible]

या सोने रहना जैसे काम ही तो बचे हैं। अब हमेशा के लिये सो जाना चाहता हू।

ऐसा न कहें आप।

क्यो न कहू। सोते-जागते कर भी क्या रहा हू म। बस कहने को जी रहा हू। सच तो यह है विनीत स मिलने की चाह मे कही मेरे प्राण तो नही अटके है यही।

आप सोचिये नही। आराम करें। यह दो कैपस्यूल ले लें।

हां, दे दो। ग्लास थोडा और पास लाओ। अब ठीक है।

हां बस यो ही लटा हूं। तुम आराम करो जाकर।

बिना कोई उत्तर दिय अपनी कुर्सी पर जा बैठती है।

देखता हू नस टेबल पर रखी बाईबिल को उठा किसी रेशमी कपडे म लपट अपनी टेबुल की दराज मे रख दिया है। हाथ से वक्ष पर क्रॉस सा बनाते आखें ब न्द कर ली हैं। उसका ऐसा करना सुखद लगता है मुझे। हल्की नींद ले लेना चाहता हू।



दो

कमरे के बाइं ओर वाली खिड़की के पास लगे जामुन के घने पेड से पत्तियो की तेज आवाज से मेरी नींद खुल गई है। खिड़की पर लगे कॉच के बाहर धुंध सी जमी है। बाहर पेड़ के होने का आभास सा होता है। ऊपर रोशनदानो से पक्षियो की आवाजें लगातार मेरे कानो मे गूंज रही है। उसमे ताजगी है, उत्साह है। एक पूरे दिन की यात्रा पर निकलने से पूर्व बैठे बतिया रहे हैं। रोज ऐसा ही होता है। सुबह उडकर दूर आकाश में परो को तौलते शाम होने से पूर्व लौट आते हैं। उन्हे कुछ भी तो पता नही कहा जाते है वे, कितनी लम्बी दूरियां पूरी कर शाम को फिर वहीं लौट आते हैं। सोचता हू चाहे नही भी जानते हो कहाँ तक जाकर लौट आना है पर शाम को लौट आने मे उनके किसी घर, घोसले का ज्ञान तो उन्हे है ही। जहाँ नन्हे पक्षी, पक्षी न सही अण्डे ही मान ले लौटकर उन्हे सहेजना है, दुलराना है, चहचहाना। उनकी अबूझ जिन्दगी का यह छोटा सा अहसास ही उनकी उन्मुक्तता, स्वच्छंदता, आह्लाद का आभास अनंतत बिखेरता है।

सोचता हू पूरे जीवन दौडते-भागते मैं कही लौटा भी या तो वह घर कहीं से भी नहीं था। बस चूने-पत्थर से बनी शानदार इमारतें जिनमे लौटकर थके शरीर को बस डाल दिया था मैंने। सिर्फ सूरज के निकलने की प्रतीक्षा म और फिर उठकर चल दिया था शाम थकान ओढ़ने अपने शरीर पर, अपनी आत्मा पर। वह सिर्फ खुद की निर्मित व्यस्तता ही थी जिसका उम्र के इस पडाव पर आकर, शरीर मे झांककर, मन मे समाकर देखता हू तो लगता है फिजूल था वह सब। पर मन के धागे से बँधा न जाने कहाँ-कहाँ की ऊँचाईयो को छूकर आज टूटे पतग सा डाक्टर के स्पेशल कॉटेज मे पडा हू। ऐसे पतग की तरह जिसे कोई छूना तक नही चाहता।

सामने टेबल पर रखी अलार्म बज उठती है। सुमधुर हल्की ध्वनि। नर्स ने जागते ट्यूबलाईट को जला दिया है। कमरे मे रोशनी फैल गई है। दीवार पर लगे शीशे मे झाँकते उसने अपने बालो को सवारा। टेबल से ग्लास को उठा मुँह साफ करती है। वहीं रखी दवा की शीशियो से दवा ले मुझ तक आती है।

श्यैाम बाबू ।

हा, कहो।

आप जाग रहे हैं।

नहीं, कुछ देर पहिले ही जागा था।

पर मन देखा तो आपकी आखें तो ब द थीं।

नहीं। तुम्ह लगा होगा।

आप दवा ले लें।

इतनी सुबह भी दवा ही दोगी तुम।

हाँ। यह दो गोलिया तो लेनी ही है ना आपको।

भूल जाते है आप भी रोज नही लते क्या।

नाराज हो गई तुम।

नही वैसे ही कह रही थी। दवा राज ही तो लते है आप।

वह तो ठीक है। ले लूगा। तुम नाराज नही होओ।

कहाँ नाराज हू आपसे। डाक्टर प्रसाद भी आते ही होंगे। आपका चक-अप होगा। याद है आपको। आज आपरेशन होगा आपका। कल ही तो कह रह थे डाक्टर प्रसाद इजेक्शन स आ जायें तो आपरेशन हो।

मिस मजुला कितने ऑपरशन होगे मेरे।

उसकी चिन्ता न करे आप।

चिन्ता नही कर रहा। पूछ रहा हू बस।

आप दूध ले लें।

मेरे सीने पर तौलिया रख चम्मच स धीरे-धीरे दूध पिलाने लगी है वह। दूध खत्म कर मेरे होठो पर दूसरे तौलिये से पोंछ देती है। दूध का बतन टेबल पर रख देती है।

आओ डाक्टर।

गुड मानिंग। श्यैाम बाबू। यह लीजिये आपके लिये गुलाब लाई हू। आज तो जल्दी जाग गये आप।

गुड मॉर्निंग डाक्टर। कितने अच्छे हैं गुलाब।

सुबह बगीचे म घूमना अच्छा लगता है। वहीं से ले आयी आपके लिए।

घूमना तो मुझे भी अच्छा लगता है।

पर जब तक आप बिल्कुल ठीक न हो जायें। घूमने के बारे में सोचिये भी नहीं। नम, ब्लड प्रेशर चैक किया।

नहीं। कर हो रही थी।

डाक्टर सानल। आपरेशन है मेरा।

हां। श्रेयास बाबू। माईनर ऑपरेशन है। विनीत साहब का फोन आया था रात का।

विनीत का फोन आया था। क्या कह रहा था। आ रहा है क्या।

आपके लिये जानकारी ले रहे थे डाक्टर प्रसाद से। आने के बारे में तो नहीं सुना मैंने।

नहीं आयेगा वह। बस जानकारी ही ले रहा होगा। आना होता तो कह अवश्य देना। तुमने कहा नहीं सीरियस हूं मैं। आज फिर आपरेशन होगा मेरा।

यह तो डाक्टर प्रसाद ने बता दिया था उनको।

तब भी नहीं कहा उसने कब आ रहा है वह।

आप भी श्रेयास बाबू, बच्चों की तरह जिद करने लगते हैं।

बच्चों की तरह नहीं सानल एक बूढ़े पिता की तरह कहो। जिसके जीवन और मृत्यु की डोर पिता को ही न मालूम हो कब टूट जाये वह।

ऐसी अशुभ बात नहीं कह आप। आराम करें। मैं चलती हूं। नस, श्रेयास बाबू का ब्लड प्रेशर चैक कर लेना।

सुबह के सूरज की पहली किरणें मेरे चेहरे, कमरे में फैल गई हैं। नस ने मेरा ब्लडप्रेशर लिखा है। हल्के पीले प्रकाश में कमरे में रखी हर चीज पीली दिखने लगी है। मेरे मन पर छाया बोझ कम होने लगा है। एकटक उगते सूर्य की किरणों में कुछ खोजने लगता हूं तीन महीने बीते। पहली बार खुद विनीत ने बात की है डाक्टर से। सुखद लगता है यह सोच। उसे ध्यान है मेरा। व्यस्त हो गया होगा। व्यवसाय है। मेरा भी तो यही हाल रहा है। कई सप्ताह महीना घर का ध्यान नहीं रखता था मुझे भी। विनीत का कोई दोष नहीं। आ जायेगा वह। सोनल कहती है अब तो मैं पहिले से अच्छा भी हूं पास रखी छोटी टेबुल पर रखे गुलदस्ते में रखे गुलाब देखने लगता हूं कितने सुन्दर, ताजा है यह। पास बैठी नस से कहता हूं—

मजुला, यह गुलाब देना मुझे।

यह लीजिये।

कितने सु दर हैं यह।

हा बहुत सुन्दर।

मजुला। इनमे खुशबू कहा है। नही है ना। अधिक खुशबू तो नही।

यही तो कह रहा था मै वैसे सु दर बहुत है। पर इनमे अपनी कैसी भी महक नही। दिखावटी ज्यादा लगते हैं। इनमे खशबू क्यो नही है मजुला।

खुशबू वाले नही है यह। देशी गुलाबो म खुशबू होती है। यह तो कलम बाध कर तैयार किये गय हैं।

तुम ठीक कह रही हो मजुला देशी, अपनी परम्परा वाले गुलाब नही हैं यह। सब खुशबू कैसे हो सकती है। लो डाक्टर प्रसाद भी आ गये।

और कसे है श्याम बाबू। खूब प्रसन्न नजर आ रहे हैं आज तो।

हा। इन गुलाबो के लिये मजुला से पूछ रहा था इनमे खुशबू क्यो नही होती।

आप भी आन द लेते है बातो का। ऐसे हजारो लाखो फूल आपकी कोठिया मे लगे है और आप ही पूछ रहे हैं इनके लिए।

मजुला कह रही है देशी गुलाबो मे ही खुशबू आती हैं। इनमे वैसे नहीं।

यह तो ठीक ही कहती है वह। देखिये नौ बजे आपरेशन है आपका। हा विनीत साहब का फोन आया था। आपके लिये पूरी जानकारी ली मुझसे उ हाने।

कब आन को कहा उमन।

यहा आन के लिय तो कुछ नही बताया उन्होन। अब तो दिल्ली ही हैं। जब चाहग चले आयेंगे।

देखो कब आना है वह।

आप थोडा और आराम कर लें। नस यह लो। इजेक्शन लगा देना।

यस, सर।

म चलता हू। ठीक नौ बज ऑपरेशन है।

तीन

ऑपरेशन के बाद कमरे में डाक्टर प्रसाद की आवाजें मेरे कानों में सुनाई दे रही थीं। मैं पूरी तरह से उनकी बातचीत समझ नहीं पा रहा था। बेहोशी की स्थिति छायी थी मुझ पर। तब ही अतीत में याद आता है—

मेरे पिता मुझे अपनी गोद में लिए बैठे हैं। बड़ा सा चौक जिसमें भीड़ लगी हुई है। मेरी आयु कोई छः वर्ष की रही होगी। पंडित ने मेरे पिता के, फिर मेरे ललाट पर तिलक लगाते कहा था—

आपके सुपुत्र का नाम श्रेयांस प्रसाद ही शुभ रहेगा।

मेरा नामकरण संस्कार था वह। पिता के अलावा दादी थीं। मेरी माँ मुझे जन्म देने के बाद ही शरीर छोड़ चुकी थीं। पिता लक्ष्मीनारायण उस क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यापारी थे। उन्होंने दोबारा दादी के लाख कहने पर भी विवाह नहीं किया। दिन रात अपने काम में लगे रहते। कई बार लम्बे समय के लिये घर से बाहर रहते। दादी की देखरेख में मैं बड़ा हुआ। उनका सुबह से मन्दिर जाना, घर पर पूजा पाठ का कार्य अनवरत चलता रहता। तेज सर्दी में भी सूर्योदय से पहले उठ आंगन में लगे तुलसी चौरे की परिक्रमा, पूजन, सूर्यदर्शन उनके जीवन के स्थायी अंग थे। वे चुपचाप करती रहतीं। मैं यथावत् कुछ समझा न समझा देखा करता। उन दिनों शिक्षा का प्रसार इतना नहीं था। गाँव के पण्डितजी आकर अक्षर ज्ञान कराया करते। अपनी आयु में मैं ऐसे ही दिन जोड़ता चला गया। पिता अपने काम में लगे रहते उन्हें घर में आते-जाते देखता इससे अधिक कुछ नहीं। उनका क्या व्यवसाय था तब नहीं समझता था मैं।

यों ही समय बीतता गया। दीपावली की रात थी ठीक से याद है। मैं सोया हुआ था। पिता वाले कमरे में लोगों की भीड़ थी। दादी उनके पास बैठी थीं। तेज रोने की सामूहिक आवाजों से चौंक गया था मैं।

मेरी आयु पन्द्रह के आसपास रही होगी। एक अबोध उम्र थी वह। बिस्तरा से उठ पिता के कमरे की चौखट पर खड़ा हुआ था। दादी की दृष्टि मुझ पर पड़ी उन्होंने मुनीमजी से कुछ कहा। मुनीमजी मेरे पास आ मेरा हाथ

पकड कर अन्दर ले गये और दादी के पास बिठा लिया था। उन्होंने मुझे अपनी बाँहों मे भर लिया था। उनके चेहरे पर दृढता का भाव था। अपनी धीमी आवाज मे उन्होंने कहा—

श्रेयास बाबू। तुम्हारे पिता नही रहे अब। म भी पता नही कब तक साथ हू तुम्हारे। सोचती हू जीवन का लम्बा सफर तुम्हे अकेले ही पूरा करना होगा। लक्ष्मी को व्यापार मे घाटा लगा था और उसी सदमे म प्राण त्याग दिये उसने। मेरा पूरा आशीर्वाद है तुम पर। धीरे-धीरे घर, कारोबार सम्भालो। मु शीजी, श्रेयास बाबू को व्यापार सिखाते जाना।

जी। बुआजी।

मु शीजी। लक्ष्मी का नाम रखने वाला हो यह बचा है इतनी बडी हवेली कारोबार को अब तुम्हीं सम्भालो। मैं तुम्हारे काम म समझती नही।

उस बडे कमरे म लोग जब निस्पद आखो से मेरे पिता के शव को लगातार देखते रहे। दादी मा दीवार पर सिर टिकाये बन्द आखो मे कुछ सोचती रही थी बस। वे सब सुबह होने की प्रतीक्षा मे बैठे थे। मुझे दादी की गोद मे नींद आ गई थी।



चार

समय कैसे बीत जाता है पता नही चलता। आज मुशीजी, दादी मा ई भी तो नही बचा। दादी माँ ने उनकी मृत्यु से पूर्व ही मेरा विवाह कर ा था। कहती थी मेरे विवाह के बाद ही सुख से मर पायगी वे। पिता जगह सारा व्यवसाय, कारोबार सम्भाल लिया था मैंने। मुशीजी एक ग प्रहरी की तरह हर क्षण मेरे साथ लग रहते। उन्ही का किया है सब । आज समाज मे जो भी प्रतिष्ठा है उसके पीछे उन्ही का वरदहस्त रहा ुझ पर। यही कारण है पिता के तैलचित्र के पास उनका भी बड़ा सा लगाया हुआ है मैंने। पिता से अधिक मेरे जीवन को व्यावहारिक बनान उत्तरदायी रहे है वे।

आप नाश्ता कर लेते।

हा, मनोरमा। कितना समय हुआ।

नौ बज रहे है।

आज तो आपको कही बाहर भी जाना था। आपके सचिव माणिक कह थे फोन पर।

मनोरमा। ईश्वर की कृपा है आज मेरे सातवें प्रतिष्ठान का उदघाटन गये दिनो इसी कपड़े के मिल की तैयारी म लगा था मै।

आपको बधाई। ईश्वर आपको और सक्षम बनाय। आपकी मेहनत रग रही है।

रमा मेरा कुछ भी तो नही है। सब तुम्हारा ही है। मै तो निमित्त मात्र पता नही सब कैसे होता जाता है। कौन—

मै माणिक।

आओ। बैठो। सब व्यवस्था ठीक से हो गई।

जी हाँ।

मन्त्री महोदय ने फोन पर बताया शाम चार बजे तक ही पहुच पायेंगे वे। वे पहिले केबिनेट मीटिंग है बाद मे भी दो कार्यक्रमो को निबटाकर ही येंगे।

कोई बात नही। आ तो जायेंग ना वे।

आयेंग जरूर मेरी सीधी उनसे ही बात हुई है।

ठीक है। अब तुम चीफ सैक्रेटरी माथुर से भी बात कर लो। उन्हे मन्त्रीजी के बदले हुए कार्यक्रमो की सूचना दे दो।

कर दूगा। आप कब तक पहुचेगे मिल पर।

तीन बजे के आस पास मन्त्रीजी को साथ लेता हुआ पहुच जाऊगा। तुम जाकर सारी व्यवस्थाओ को एक बार और देख लो। मैं अभी दो बजे तक आफिस मे ही हू कोई खास बात हो तो फोन पर बता देना।

अच्छा मै चलता हू। नमस्कार।

मनोरमा तुम भी चलती तो अच्छा था।

मै क्या करूगी वहा जाकर। आप तो वहा की भीड, चकाचौंध मे खो जाते है। फिर आपके समय का कोई पता नही कहा तक रहोगे।

यह गलत नही। करें भी क्या। सारे काम हैं ही कुछ ऐसे। सत्कार, उसके अफसरो, मन्त्रियो का तालमेल बिठा लेना कठिन काम है। पर ईश्वर की कृपा है सब हो जाता है। ज्यादातर काम माणिक ही निबटा लेता है। मुझ तक तो आने ही नही देता कैसे भी कामो को। विनीत स्कूल से कब लौटेगा।

शाम को ही आयेगा।

तुम विनीत को लेकर चली आना।

नही। कठिन होगा मेरा आना। वैसे भी करूगी क्या।

जैसी तुम्हारी इच्छा।

फोन की घण्टी बजती है। फोन उठा बात करता हू।

कौन। हरिबाबू। कैसे हैं आप। माणिक बता रहे थे शाम चार बजे तक ही आ पायेंगे आप। हाँ हाँ। आप चिन्ता न करें। सब कृपा है आपकी। अभी कुछ देर आफिस मे हू फिर आपके बगले पहुच रहा हू। ठीक है। एक बजे तक घर पहुँचेंगे आप। मैं आ जाऊगा। नमस्कार।

अच्छा मनोरमा चलू म। आफिस मे बैठूगा थोडी देर। फिर सारे दिन यही काम चलता रहेगा आज तो। हरि बाबू का फोन था। तुम्हारा क्या कायक्रम है वैसे।

कोई विशेष नही। शाम लेडिज क्लब जाना है। वहाँ सगीत का कायक्रम है। उसके बाद घर लौटना।

अच्छा है मन बहल जायेगा तुम्हारा।

चलता हू।

पाँच

हरिबाबू प्रदेश के वरिष्ठ मंत्री है। उम्र पचपन साठ के आस-पास। पर मन से वही भी बूढे नही हुए हैं। मिल के उद्घाटन भाषण मे उन्होंने देश की गरीब जनता के लिए सस्ता कपडा उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी कपडा निर्माताओ को आह्वान के रूप म कही। श्रोताओ मे अधिकाश मजदूर वर्ग था। वह मत्रीजी के भाषण मे निमग्न था। उनक चेहरे पर आशा की लहरें हिचकोले खा रही थी।

माईय। हरिबाबू। आपका उद्बोधन बडा ओजस्वी, प्रेरणादायी रहा। हमारे मिल के सारे कार्यकर्त्ता, श्रोताओ ने जी भरकर सराहा।

श्रेयांसजी। छोटी सी बात है हमारा काम ही यह है शब्दो से लोगो के सामने सुनहरी स्वप्न प्रस्तुत कर देना। अमल करना न करना तो आप पूँजी-पतियो के हाथ म है। हम तो कह सकते है, आपको याद दिला सकते हैं आपके कर्त्तव्यो की।

यह भी आवश्यक है। आप याद दिलात रहते ह यही,क्या कम है वरना इन गरीब फुटपाथो पर जिन्दगी बिता देने वाला के लिये किसी के मन मे कोई हमदर्दी कहाँ है।

श्रेयांसजी। उदघाटन सम्पन्न हो गया। आपको बधाई। आगे क्या इन्तजाम है वह भी देख लें हम। आपके-अपने हरिबाबू के हिस्से की मिठाई का क्या हुआ।

आप निश्चिन्त रह। आखिर आपके हिस्से की मिठाई आपके बगले दिन मे ही छोड आया है कीमती अटैची मे सजाकर। आपने इतनी आबादी के क्षेत्र मे मिल लगा देने की आज्ञा दे दी, जमीन कौडिया के भाव बख्शीश कर दी। यही क्या कम है। फिर हमारा भी तो कोई फर्ज बनता ही होगा।

यह तो आप जाने। हमने तो आपके इस क्षेत्र की गरीब आबादी को रोजगार मिले, देश का उत्पादन बढ़े यही सोच जो भी कर पाये किया। हमारे आवास की व्यवस्था तो की ही होगी आपने। आप भी किन बातों में उलझ गये। श्रेयांसजी। देश की गरीबी, तरक्की, उत्पादन, विकास जैसे काम हमारे जिम्मे छोड दें।

सामने दरवाजे से ट्रे मे ग्लासेज कीमती द्राक्षासव की लबालब भरी दो बोतलें लिये साहिला हरिबाबू के सोफे के पास रखी तिपौनी टेबुल पर रख देती है। साहिला, हरिबाबू को विशेष रूप से प्रिय है। उसने शरीर पर कहने भर कपडे पहन रखे है। उसके झुकने से विस्तृत हो भारी हो गई गोलाईयो को देख हरिबाबू खुद को नियन्त्रण मे नही रख पाते—

साहिला जी। इस द्राक्षासव की क्या जरूरत रह गई है। जब आप आ गई है। आप मे कौन सी कम मादकता है इस अंगूर के रस से। आओ मेरे पास बैठो।

आपकी सेवा मे पहिले यह शीशे तो तैयार कर दूं।

श्रेयास जी बुरा नही मान तो साहिला खुद शीशा भी है और अंगूर भी। इन्हे देखकर कुछ भी याद नही रहता। सब भूल जाते हैं हम।

हरिबाबू, आपकी सेवा करना तो हमारा धर्म है। साहिला भी आपकी खूब प्रशंसा करती है।

लाओ। एक उधर श्रेयास जी को। आप नही लेंगी।

नही, मै नही लेती। आप नहीं पिला सकते क्या। अपने हाथो से छुआ तक नहीं मैंने कभी।

तुम्हें जरूरत भी क्या है हम जो हैं। लो मेरे हाथो से ही पीओ।

नही। पहिले पिलाऊँगी आपको। हम सेवा तो करने दीजिये। आखिर आप हमारे मेहमान है।

यह तो ठीक है। पर इतने दूर बैठकर सेवा नही होती।

हरिबाबू ने उसे खीच अपने शरीर से लिपटा लिया है। ट्रे मे रखे अंगूर के गुच्छे को उठा साहिला को खिला रहे हैं।

साहिला। एक बात यह अंगूर जैसी कोमलता और मादकता दोनो चीजें एक साथ तुम मे ही देखी है। तुम्हारे स्पर्श से ही नशा हो आया है मुझे।

अभी न तो आपने द्राक्षासव ही पिया और मुझे छुआ ही नहीं है। इतनी जल्दी नशा हो जाता है आपको।

तुम जो मेरे पास हो मेरे। श्रेयांस बाबू थोडा आप भी तो चख लते इन अंगूरो को।

तब ही टेलीफोन की घण्टी बज उठती है। श्रेयास बाबू उठते हुए कहते

हरिबाबू। हमारे भाग्य मे कहाँ है। मैं आया मालिक का फोन आया होगा।

श्रेयास बाबू सोफे से उठ पास वाले कमरे मे चले जाते हैं।

साहिला। लो मेरे हाथो से पियो तुम।

अभी कहाँ। आप तो पी लें पहिले।

और कितनी पिलाओगी।

चलो और नही पिलाती हरिबाबू। अब तक आपने जो पी वह तो फलों का रस था। मेरी आँखो मे झाक कर तो देखो आप खुद ही जान जायेंगे अभी तो बहुत प्यासे हैं आप।

क्या कह रही हो साहिला। यह सब मुझे कहने दो। सच कहा तुमने बहुत प्यासा हू अभी तो मैं।

उधर श्रेयास बाबू ने कमरे में घुसने को पर्दा उठाया वही रुक जाते हैं। हरिबाबू साहिला के पूरे शरीर को तेजी से सहला रहे है। उसने भी हरिबाबू को अपनी बाहो म पसकर जकड रखा है।

साहिला। और पिला दो आज तो। तुम्हारे हाथो पीते मर जाना चाहता हू। सच तुम ही समझी हो मेरी प्यास को।

हरिबाबू। जितनी पी सको पियो। आपकी सेवा में कैसी भी कमी नहीं आने दूगी।

साहिला। कौन सा नशा हो तुम। समझा नही मैं।

हरिबाबू। यह कोई बद शराब की बोतलो का नशा तो नही जो सुला दे आपको। मेरा नशा तो किसी को भी जगा सकता है। जीने की चाह पैदा कर सकता है उसमे।

सच कहती हो साहिला! वाकई हरिबाबू को जगा दिया तुमने। कहते हरिबाबू सोफे के कोने पर सिर टिका देते हैं।

श्रेयास बाबू पर्दा हटा अन्दर आते हैं।

उठो। बहुत समय हो गया।

साहिला खुद को हरिबाबू की बाहों से अलग होती, कपड़े ठीक करती उठती है।

आज तो परेशान कर डाला हरिबाबू ने।

कोई बात नहीं। आयुर्वेद मंत्रालय भी तो इन्हीं के पास है प्रदेश का। प्रदेश के सारे वैद्य कीमती भस्मों से बनी दवाओं से जवान बनाये रखते हैं इनको। इन्हें यहीं आराम करने दो। और यह तुम्हारे लिये कुछ पत्रम्-पुष्पम्।

सौ-सौ के नये नोटों की पांच गड्डियां साहिला के हाथों में थमा देते हैं।

इन कागजों की क्या जरूरत है। श्रेयांस जी, वैसे ही सेवा करने दीजिये ना मुझे। आपके लिये तो दुनिया ही छोड़ रखी है मैंने।

साहिला। रख भी लो। सच तुम्हारे रूप के आगे कागज के टुकड़े ही हैं यह। चाहो तो तुम भी यहीं बेडरूम में आराम करो।

ठीक कहते हैं। आप भी यहीं सो जाओ ना आज तो।

सुबह से निकलना है। चलूंगा अब।

अच्छा, चलें आप। मुझे भी तेज नींद आ रही है।

लड़खड़ाते पैरों से दरवाजे तक छोड़ने आती है।

गुडनाईट, श्रेयांस साहब। अब सोयेंगे हम भी।

खट से दरवाजा बन्द कर अन्दर चली गई है। सीढ़ियां उतर कार में आ बैठता हूं। कार स्टार्ट कर तेजी से मिल के अहाते से निकल सन्नाटे में बेसुध शान्त सड़क को चीरता घर की ओर निकल जाता हूं।



सुबह जल्दी घर से निकल दफ्तर म जा बैठा हू । नये मिल के मैनेजमट के साथ बातचीत करनी थी । माणिक के आने की प्रतीक्षा कर रहा हू । कमर मे नये दिनो हुए उदघाटन के बडे-बडे रगीन चित्र लग रहे हैं जिनमे हरिबाब मन्त्री महोदय विशेष रूप से मुखरित हैं। दरवाजे पर हल्की आहट होती हैं ।

आओ, माणिक ।

नमस्ते ।

बैठो । कार्यक्रम के चित्र बडे जल्दी बनकर आ गये । आपने लगवा भी दिये ।

यह तो करना ही था । अपने कार्यक्रम का समाचार पत्रो, रेडियो, दूरदर्शन पर अच्छा प्रचार रहा ।

हाँ, देखा, पढा था ।

आपने इस मिल के मैनेजर की पोस्ट के लिये नाम नही बताया ।

मै क्या कह सकता हू । कल ही हरिबाबू का फोन आया था उनका कहना है साहिला रायजादा को मनेजर बना दूँ म । मन्त्रीजी की बात टालन की स्थिति मे नही हू । मन साहिला को नियुक्ति पत्र भिजवा दिया है । वैस पढी-लिखी, स्मार्ट है ही वह । सोचता हू काम सभाल लेगी ।

सभालने जैसा तो है भी क्या । सारा काम तो आप देखते ही ह । आपकी विश्वासपात्र भी है साहिला जी । म त्रीजी का सुझाव मान लेने म कोई हज नही है ।

चलो जैसा भी है । लो साहिला खुद भी आ गई ।

नमस्कार, श्रेयासजी ।

आइये बैठिये । कैसी हैं आप ।

अच्छी हूँ । कौन सी उलझन म डाल दिया है । मिल के मैनेजर के पद के लिये कहा है आपने । मेरे बस का तो नहीं लगता यह काम ।

आपको करना क्या है। आराम से मिल के आफिस में बैठिये। थोड़ा बहुत मिलना, डीलर्स, एजेन्टस से बिजनेस प्रमोशन पर बातचीत करना। बाकी सारे काम तो श्रेयांसजी और मैं मिलकर करते रहेंगे।

माणिक जी, आप तो जानते ही हैं। इतनी रेग्यूलर कहां हूँ मैं। मेरी पर्सनल लाईफ भी छिपी नहीं। सुबह ग्यारह-बारह बजे से पहिले तो सोकर भी नहीं उठती मैं। दूसरा आज यहाँ, कल वहाँ घूमना।

वह सब करिये। हमारी मिल को क्या आपत्ति है। आपकी यात्राओं में मिल के प्रमोशन के बारे में भी बातचीत करती रहें। हमारा काम तो आपके बड़े लोगों के सम्बन्धों में और सरल हो जायेंगे। श्रेयांसजी का भी पूरा सहयोग मिलता रहेगा।

साहिलाजी, आप निश्चिंत रहें। धीरे-धीरे सब समझ जायेंगी आप। लो सबसे पहले तो हम जो शेयर्स ओपन कर रहे हैं उसके विज्ञापन पर पहिला हस्ताक्षर मैनेजर के रूप में करें। आपके शुभ हाथों से ही जारी करें शेयर्स।

कितनी राशि के शेयर्स हैं माणिक जी।

तैंतीस करोड़ रुपये के हैं। दो महीने में सारा पैसा इक्टठा हो जायेगा। हमारे दूसरे प्रतिष्ठानों के शेयर्स का बाजार भाव देखिये कितनी ऊँची दामों में बिक रहे हैं। श्रेयांसजी की प्लानिंग का जवाब नहीं।

माणिक जी। देखा आपने साहिलाजी में कितनी योग्यता है। दो मिनिट में काम को समझ लिया है इन्होंने।

सर, श्रेयांसजी आप भी हस्ताक्षर कर दें ताकि यह विज्ञापन समाचार पत्रों को भेजे जा सकें।

आपने इसके लिये सारी व्यवस्थाएँ कर ली हैं। शेयर मार्केट, दलालों को फार्म भिजवा दिये हैं ना।

सब काम गये सप्ताह ही पूरा हो चुका है। आज विज्ञापन जा रहा है। इसी सप्ताह देश के सभी पत्रों में छप जायेगा। इस महीने के आखिर तक तीस प्रतिशत पैसा तो हमारे पास आ ही जायेगा।

हाँ, चालीस प्रतिशत से ज्यादा शेयर्स जारी भी नहीं करें। सात परसेंट शेयर्स साहिलाजी के नाम करवा देना। बाकी सब आप समझते ही हैं। कोशिश करें आज आप उद्योग भवन जाकर मिस्टर पाण्डे से मिलें। कोशिश करें केबल वाली फैक्टरी की फाईल का क्या हुआ।

पाण्डे साहब से मिला था मैं । कुछ अड़चने बता रहे थे वे ।

अब नही कहेंगे वे । इण्डस्ट्री मिनिस्टर ने उनसे बात कर ली थी। सारी समस्या पैसा की है । वह भी कर दिया है मैंने । पाण्डे साहब प्रसन्न हैं अब । आप केवल यही कह भेजियेगा बाबू के सचिव हैं आप । हो आयें आप । अभी आॅफिस मे ही हू । कोई दिक्कत हो तो फोन पर मुझसे बात करें ।

नहीं अब क्या परेशानी हो सकती है । चलूँ मैं ।

माणिक कमरे से बाहर निकल आते हैं ।

श्रेयासजी । आपके उपकारो से कैसे उऋण हो पाऊँगी मैं । आपके मन की विशालता की कोई सीमा ही नहीं है ।

ऐसा कुछ भी नही । तुम्हारा भी कितना सहयोग है मुझे । सच तो यह है कि बिना विश्वासपात्र लोगो के इतने बडे प्रतिष्ठान चलाना कठिन काम है । मिलजुल कर जितना हो जाये काफी है । उस दिन कोई दिक्कत तो नही हुई ना ।

नहीं । कोई विशेष नही । हरिबाबू जागने पर मेरे कमरे मे आ गये थे । सुबह दोनो ने साथ ही नाश्ता किया । मेरी गाडी से ही घर लौटे थे वे । आपकी प्रशंसा करते रहे थे ।

मेहरबानी है उनकी । उनका पूरा सहयोग है मुझे । चार मिल्स तो उन्ही के सहयोग से लगे हैं जब वे उद्योग मन्त्री थे । जमीनें दिलाना, विदेशी मशीनो के आयात की सुविधा, अधिकतम रुपया सरकार से दिलवाने जैसे काम बडी सहजता से करवा दिये थे उन्होने । पूरे राज्य के मन्त्रीमण्डल मे प्रभावशाली मन्त्रियो की श्रेणी मे आते है । उधर केन्द्र की राजनीति मे भी अपनी टाग अडाए रखते हैं । राज्य और केन्द्र दोनो जगह एक जबदस्त प्रभामण्डल बना रखा है उन्होंने । कई बार मजाक मे कह भी देता हू उन्हे मुख्यमन्त्री क्यो नहीं बन जाते । जवाब मे कहते हैं किंग मेकर हैं वे । कहते हैं राजा बनने से अच्छा है राजा बनाकर शक्तिशाली बने रहो । तुम्हारी प्रशंसा करते नहीं थकते वे ।

मुझे भी कहते रहते हैं । पता नही क्या देखते हैं मुझमे । पागल से हो जाते हैं और मेरे पास आकर तो वे ।

तुम कह रही हो तुम्हारे मे क्या देखते हैं वे । तुम्हारे मे क्या नही है। सच तो यह है तुम्हे पाकर तो कोई भी पागल हो सकता है ।

आप बातें कितनी करते हैं उस दिन रात का यही कहने को कहा मने तब तो टाल गये आप ।

अभी मैं काम करना चाहता हू पागल होना नहीं । आज तो इतना मेकअप, खादी सिल्क की साडी । खूब सरल और आकर्षक लग रही हो ।

आपके मिल की मैनेजर इतनी सादी और शालीन तो होनी ही चाहिये । जब समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से मिलना है तब तो और भी जरूरी हो जाता है ।

तुम सब समझती हो । यह जान लेना कि लोग क्या चाहते हैं, उनकी आशाएँ क्या हैं जरूरी है और यही सफलता हो सकती है किसी के जीवन की ।

और आपकी सफलता किस में है ।

मेरी सफलता तुम हो ।

मुँह देखी बातें खूब कर लेते है आप ।

हाँ । सुनो । मिल के मैनेजिंग स्टाफ की एक मीटिंग रख लेना । मैं उपस्थित होऊँगा उसमें । तुम्हें जिनके साथ काम करना है उनसे परिचित तो होना चाहिये ।

वह सब मुझ पर छोड़ें । सब कर लूँगी मैं ।

यह तो अच्छी बात है । मेरी एक चिन्ता और कम हो गई । कब रख रही हो मीटिंग । तुम्हारा नाम नये मिल के पूरे स्टाफ को भेजा जा चुका है । कुछ जरूरी मिल सम्बन्धी, व्यवसाय सम्बन्धी, उत्पादन के बारे में समय समय पर माणिक बताता रहेगा । उस पर अवश्य ध्यान देना होगा तुम्हें ।

श्रेयासजी । धीरे-धीरे सब समझ जाऊंगी । बल तो आपने पद दिया है मुझे । देखिये कैसे काम करती हू मैं भी । सच तो यह है मेरे पास भी कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं था जिन्दगी का । सुबह उठना, देर रात घर जाकर सो जाना । आलसी हो गई थी मैं । अब कुछ तो अनुशासन आयेगा जीवन में ।

अनुशासन की कोई बात नहीं । जरूरी तो है नहीं हर रोज मिल जाओ ही । रोज की डाक, पत्र व्यवहार घर पहुंच ही जायगा ।

देखा जायेगा ।

ठीक है । कहीं जाना है ।

हां। बाजार जाऊँगी कुछ खरीददारी करनी है। शाम घर पर आईये आप।

आज आना कठिन रहगा। उद्योग म श्रीजी के घर जाना है। जरूरी बातचीत करनी थी उनसे। माणिक गया है क्या जवाब लाता है वह। तुम चलो। आफिस के दूसर काम निबटा लेता हू बैठा-बैठा।

आपको धन्यवाद मेरे को दिये गये पद के लिये।

उसकी कोई आवश्यकता नही। हर दृष्टि स तुम योग्य हो उस काम के लिये।

घर कब आ रहे हैं।

जल्दी ही आऊँगा।

जैसी आपकी इच्छा। मालिक हैं आप। चलती हू मैं।

लापरवाही के साथ टबल से चमडे के बग को कन्धे पर डालती ऑफिस के बाहर चली जाती है। म ऑफिस की फाईले दखन लगता हू। सोचता हू साहिला वाकई योग्य है मेरे काम के लिये। 

सिविल लाईन्स प्रदेश के मन्त्रियो का आवासीय क्षेत्र। जिसमें दूर से देख कर ही मन्त्री की उपस्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। भीड भरे बगले, बाहर खडी कारो के काफिले, जीपों का हुजूम, विधायको, जनता, छुटभैये सफेद चोले धारण किये नौजवानो की भीड से ही समझा जा सकता है सरकार है या नही। दूसरी ओर एकाध ऊँघता, बीडी फूकते कान्स्टेबिलों बगले के बरामदे मे लेटे दो-चार गाँव वालो की उपस्थिति मन्त्रीजी के घर से बाहर होने की जानकारी देती है। सामने रामबली पाण्डेय, उद्योग मन्त्रीजी की कोठी पूरी तरह आबाद है। सरकारी अमले का हुजूम, सफेद ढीले ढाले घुटनो से नीचे लटकते कुर्तो मे चहलकदमी करते कार्यकर्ताओ के साथ लोगों की भीड। बगले मे जगह दिखाई नहीं देती। ड्राईवर को कार बाहर सडक पर रोकने को कहता हू। बाहर निकल ड्राईवर से घूम आने को कहता भीड को चीरता मन्त्रीजी के सचिव तक पहुचता हू।

पाण्डेय साहब क्या कर रहे हैं।

अन्दर जनता से मिल रहे हैं। आपके लिये कहू अन्दर।

हां। कह दो।

जी। श्रेयासजी आये हैं। आपको अन्दर ही बुला रहे हैं।

अन्दर कौन लोग हैं।

कोई खास नही। सरकारी अधिकारी हैं, मन्त्रीजी ने बुलाया था उन्हे। उनसे मिल लिये हैं। आप हो आएँ।

ठीक है।

आईये। आईये। श्रेयास बाबू। हमारे प्रान्त के वरिष्ठ उद्योगपतिजी। बैठिये। क्या हुआ आपके काम का। मधुसूदन बता रहे थे आपका प्रोजेक्ट बहुत बड़ा है। उसकी औपचारिकताएँ तो पूरी करवा देंगे।

पाण्डेयजी। छोटे से प्रोजेक्ट को बडा बता रहे हैं मधुसूदन जी। आज मालिक को उद्योग भवन भेज दिया था। निबटा आया होगा सारा काम।

औपचारिकताओं जैसी कोई बात नहीं। आपका आशीर्वाद हो जाये फिर सब काम हो जायेगा।

श्रेयासजी। आप भी हमारा ध्यान कहां रखते हैं। सुना साहिलाजी को मैनेजर बना दिया है आपने।

हां। देखिये क्या कर पाती है वह।

अजी। इन औरतों से कोई काम सम्भलता है। आप बहुत सीधे हैं। किसके कहने में आ गये आप। मैंने आपको एक काम बताया था। याद नहीं रहा आपको।

इस बात को तो भूल गया मैं। वह भी हो जायेगा। आपके भतीजे के लिये कह रहे हैं ना आप।

उसने भी परेशान कर रखा है मुझे। सरकारी नौकरी के लायक तो है नहीं वह। वरना कहीं भी घुसेड़ देता उसको। दसवीं भी पास नहीं कर पाया। इतना बड़ा हो गया कहता है जनता की सेवा करेगा। वैसे जोड़-तोड़ में कम नहीं बैठता वह। हमारे विधानसभा क्षेत्र में दूसरा नेता पर नहीं फड़का सकता उसके रहते। पूरे क्षेत्र में अच्छा प्रभाव बना रखा है उसने। उसकी इसी विशेषता ने मेरा मन मोह रखा है। बला का बहादुर और क्रूर किस्म का पट्ठा है।

पाण्डेयजी, उसके लिये भी जरूर कुछ करेंगे।

करेंगे नहीं। आपको किसी छोटी-बड़ी फैक्टरी में मैनेजरी का काम दे दो उसे। रही आपके काम की बात वह भी होगा ही। कितने करोड़ का प्रोजक्ट है यह।

नब्बे करोड़ का।

हमारा उद्योग विभाग सब करवा देगा। हमारी गृहलक्ष्मी की सेवा में कितने परसेंट शेयर्स रखोगे इसमें।

पाण्डेय साहब। सब आपका ही है। आप जैसा कहना कर लेंगे।

नहीं भाई श्रेयासजी। साफ साफ बता दो। आठ-दस परसेंट तो कम से कम रखना जरूरी है।

अजी, वह भी हो जायेगा। आप तो कृपा बनाये रखें हम पर।

श्रेयांस बाबू। हम तो आपकी सेवा के लिय ही तो बैठे हैं। सब करना देंगे। आप तो जानते ही हैं पांच साल के बाद क्या होगा ईश्वर ही जानता है। हमने भी जनसेवा का रास्ता बडा गलत चुन डाला। जब से स्वतन्त्रता संग्राम में कूदे बाहर निकल ही नही पाय इस गोरखधन्धे से। जनसेवा का जुनून सवार था दिमाग पर। उन दिनो न घर का पता रहता था ना धुन का ही। पूरा जीवन झोंक दिया हमने तो। हमे मिला क्या। लोग हमें बुरा कहते हैं। मुख्यमन्त्रीजी को हमसे बात करने का समय नही। आप ही बतायें जनता की आशाओं को कैसे पूरा किया जा सकता है।

आपकी राष्ट्र के प्रति की गई सेवाओ को कभी नही भुलाया जा सकता। आप जसे कमठ और निष्ठावान लोग नही होते तो आजादी क्या हाती है नई पीढी जान ही नही पाती। देश गुलामी की जन्जीरो मे जकडा होता अब भी।

आप समझते हैं हमारी सेवाओ, त्याग का मूल्य।

तब ही फोन का बजर चिहुकता है।

कौन! भेज दो उसे। लो मेरा भतीजा भी आ ही गया। आओ। बेटा रामावतार। इसी के लिये तो कह रहा था मैं। आप श्रेयासजी हैं। प्रान्त के बडे उद्योगपति।

नमस्कार जी।

कहा से आ रहे हो।

ताऊ! आपका पुलिस डिपाटमट निकम्मा और गैर जिम्मेदार है।

क्यो क्या हो गया।

होना क्या था। आपके एग्रीकल्चर फाम की हदबन्दी करवा रहा था। गाव वाला ने हमारे लोगो पर हमला बोल दिया। हमारे सत्रह कायकर्त्ताओ को गम्भीर चोटें आई। थाने मे रिपोट दज कराने गये तो एफ० आई० आर० लिखने तक को तैयार नही आपका पुलसिया विभाग।

कोई गम्भीर बात तो नही हुई ना।

गम्भीर जैसा तो कुछ नही। गाव में दो लोग मारे गये झगडे म।

क्या कह रहे हो रामावतार। कहां हैं वे लाग।

अजी ! लोग क्या लाशें वह आप। साथ ले आये जीप में डालकर चिंता नही करें सब ठीक कर दिया मैंने।

वह तुम जानो। होशियारी से काम किया करो। इस तरह की हिंसा नही चाहते हम। जब अपने ही लोग ऐसा करेंगे तो कैसे काम चलेगा।

ताऊ आप बेकार हो परेशान हो रहे हो। यह सारी घटना गई रात की है। किसी को कुछ मालूम नही। सब तुरत फुरत कैसे हो गया।

खैर। इस आफत को भी देखेंगे। तुम दो चार दिन यहीं घर पर ही रहना अब।

ताऊ मैं भी समझता हू।

अन्दर जाओ तुम।

आप एस० पी० को अच्छी तरह समझा देना। कड़क मिजाज का है वह।

सब देख लेंगे। तुम जाकर आराम करो।

हमारे बीच से उठकर वह अ दर चला जाता है।

देखा श्याम बाबू कितना भुभारू पट्ठा है हमारा रामावतार। कठिन से कठिन परिस्थितियों म भी नही घबराता यह।

आपने उद्योग विभाग को तो कह ही दिया होगा मेरे लिये।

यह हमारा काम है आज ही बुलवा लूँगा। मैनेजिंग डायरेक्टर को। थोड़ा उसका भी ध्यान रख लेना। अपने गाव के पास ही का रहने वाला है। पक्का आज्ञाकारी है हमारा। इसलिए तो ले आये हम अपने विभाग मे उसको। हमारे काम के लिये सारे कानूनो का चर्खा बना जैसे-तैसे गंगा पार करा ही देता है।

अब मुझे आज्ञा हो पाण्डेय साहब।

हाँ। सुनो। आपकी मैनेजर नाम भूल गया मैं।

कौन साहिला।

हा, हा। कैसा नाम है याद हो नही रहता। उसे भेजना कभी खूब तारीफ सुनने हैं उसकी। हमारे हरिबाबूजी कहते रहते है।

आपसे मिलने भेजूँगा जरूर। बड़ी समझदार है और लगन वाली महिला है।

यह तो हम जानते हैं श्रेयासजी। मिलेंगे उनसे भी।

आज्ञा हो मुझे।

आपसे मिलकर मन खुश हो जाता है। वरना सारे दिन फालतू मिलने वालों की चिच-चिच, बकवास सुनते-सुनते घबरा जाते हैं हम। हमारी उम्र भी तो देखो। कितना काम ले सकते हैं इस पुरानी मशीन से हम। और जोर से खिलखिला पड़े थे।

यह तो सच कहा आपने।

मिलते रहिये। चलूँ मैं।

नमस्कार। 

आठ

देर रात घर पहुचा हू। सीढ़ियाँ चढ़ अपने बेडरूम मे आ गया हू। पास वाले कमरे मे रमा और विनीत सो रहे हैं। कमरे की लाईट जला कपडे बदलता हू। बिस्तर पर आराम से लेटा दिन भर मिलने वाले लोगो, उनकी बातो पर सोचता हू। नीद आ नहीं रही। वैसे शरीर पूरी तरह थक कर चूर हो गया है। उद्योग मन्त्री से काम बन जाने की बात से खुशी होती है। चलो जैसे तैसे काम हो ही जायेगा। साहिला का निर्णय भी गलत नही रहा। पास कमरे से चल रमा मेरे कमरे मे आई है।

आप खाना खा लेते।

खास भूख नहीं है। आओ बैठो।

कई दिनों से न सुबह न ही शाम भोजन कर पा रहे हो घर पर। नई मिल के समाचार देखे थे। खूब अच्छा बना दिया है आपने।

उसी की व्यस्तता मे सारा समय लगता रहा है मेरा। एक और प्रोजेक्ट की तैयारियाँ चल रही है।

वह तो अच्छा है। पर कुछ समय घर मे भी दिया करो। विनीत पूरे समय अकेला रहता है। अब तो समझदार भी हो गया वह। थोडा उस पर भी ध्यान दो तो अच्छा है।

रमा। समय ही कहा मिलता है। इतना सोचने तक का भी। सुबह से देर रात तक का नियम सा बना हुआ है मेरे जीवन में और करना भी पडता है। इतने पुराने उद्योग, फिर नये लगने वाले मिल, कारखानो की योजना उसके सम्बन्ध में लोगो से मिलना। हा तुम्हारी चिन्ता अवश्य रहती है सारे कामो के बावजूद।

फिर भी कभी समय से घर नही आते कभी।

नयी केबल्स की फैक्ट्री का काम हो जाये फिर कुछ आराम करू। काम भी खूब बढ गये हैं।

तुम जानो। इन सबके बावजूद भी तुम्हारे में काम की लगन है, मेहनत से पूरे करते हो सारे काम।

रमा! सब तुम लोगों के लिये ही तो करता हूं।

अब केबल्स वाला कारखाना लगा लो। फिर कुछ समय के लिये नये काम हाथ में नहीं लो। कमी तो किसी चीज की है नहीं। आपने क्या नहीं किया है। अधिक नहीं भागना चाहिये पूंजी के पीछे।

तुम सही कह रही हो सब काम ठीक चल रहा है।

हां। उसमें क्या कमी है। एक बात जरूर है पिता का प्यार, आपका मार्गदर्शन नहीं मिल पा रहा है विनीत को। हमेशा कहता रहता है वह।

अरे, रमा। सब समझ जायेगा वह भी धीरे-धीरे। हमें किसने समझाया, रास्ता दिखाया। उम्र के साथ सब हो जाता है। अभी तो बच्चा ही है वह।

आप समझेंगे नहीं मेरी बात।

क्यों नहीं। ठीक कह रही हो तुम। पर मेरी योजनाओं, कामों से समय मिले तब ना। घर पर कौन नहीं रहना चाहता। सब चाहते हैं पत्नी, बच्चों के साथ उठे-बैठे।

लगता है नाराज हो गये मेरी बात से।

ऐसा तो नहीं। यही चाहता हूं मेरी व्यस्तता को समझो तुम।

समझ लिया मैंने। कुछ खाना खा लेते।

रहने दो। सोए अब। सुबह फिर वही भागदौड़ शुरू हो जायगी। लाईट बुझा दो।

रमा न उठ लाईट बन्द कर मेरे पास आ लेट जाती है। कहती है—

दउन- दयत सान नहीं आठ प्रतिष्ठान बना डाले आपने एक से एक बड़ा।

ईश्वर की कृपा है। सब उसी का किया हुआ है। इधर मुंह करो ना।

हां तुम्हारे कमरे की लाईट जलती देख जान लिया मैंने तुम आ गये हो। रोज अकेले-अकेले मन परेशान हो जाता है। अक्सर देर से आते हो तुम। कभी लगता है तुम घर में, साथ हो भी और नहीं भी।

इस समय तो तुम्हारे पास ही हूं।

उत्तर में रमा ने अपनी बाह मेरी कमर पर डाल दी है। सांसो मे खुशबू सी फैल गई है। कई दिनो बाद रमा मेरे साथ है।

देखो कल सुबह माथिर..............

कल की बात इस समय नहीं। नीद आ रही है मुझे। तुम भी सो जाओ।

रमा का संकेत समझ चुप हो जाता हू। नीद न उसे आ रही और न मुझे ही। उसने मेरी ओर से दूसरी ओर करवट बदल ली है। मैं भी उसकी ओर मुडकर उसकी श्वासो की मादक गध मे खो जाता हू। अगुलिया से उसके रेशमी बालो को सहलाने लगता हू।



श्रेयास सूटिंग प्राइवेट लिमटेड का बड़ा बोर्ड आकर्षक लगता है। कार मुख्य द्वार से प्रवेश कर आफिस के पास जा खड़ी होती है। कार से उतर आफिस मे जाता हू। दरवाजे पर सतरी खड़ा है। झुक कर नमस्कार करता है।

साहिलाजी आ गई क्या।

जी। उधर मीटिंग हाल मे हैं। आप भी उधर पधारें।

इधर आफिस मे कौन हैं।

अभी-अभी मिनिस्टर साहब आये हैं। उद्घाटन वाले।

इनके पास ही बैठता हू। मैनेजर साहब को बता दो मेरे लिये और हरिबाबू के लिये। कहता आफिस मे घुसता हू।

नमस्कार, हरिबाबू। अहोभाग्य हमारे आप पधारे।

आइये श्रेयासजी। मुख्यमत्रीजी की कोठी से लौट रहे थे। सोचा आपकी मैनेजर साहिला को मुबारकबाद देता निकलूँ। हम पर आपका पूरा स्नेह है। मेरी बात ज्यों की त्यों मान ली आपने। अच्छा लगा जानकर।

आपकी हर बात आदेश होती है हमारे लिये। कैसे टाल सकते हैं हम।

साहिलाजी को दो-चार दिनों से याद कर रहा था। उनसे बात भी हो गई थी। पर मिलना नहीं हुआ। सोचा मुबारकबाद के बहाने भेंट भी हो जायेगी उनसे।

व्यक्तिगत कृपा की है आकर आपने। मुझे फोन कर देते साहिला को भिजवा देता आपसे मिलने।

श्रेयास बाबू। यह हमारी आपसी बातचीत है। आपको क्या कहना है।

जैसी आपकी इच्छा है। मुख्यमत्रीजी को समय मिल गया आपसे मिलने का।

अपनी गरज से बुलवाया था उन्होंने। रामदनि न नाक म नकल डाल रखी है सी० एम० के। पाण्डेय का भतीजा रामावतार अपनी गुण्डाई से बाज

नहीं आता। जो गाय वाला को मार गिराया। अखबार वाले पाण्डेय से वैसे ही जले भुने बैठे थे। उन्हें भी मौका मिल गया। सारे अखबार रंग डाले। रामबलि इस्तीफा दें। विरोधियों की प्रमुख मांग है। पार्टी की इमेज का सत्यानाश कर डाला उन्होंने। सब ओर थू-थू हो रही है सी० एम० की।

हरिबाबू। हमने तो दो आदमियों के मरने की बात सुनी थी।

श्रेयासजी। दो का मतलब दो तो होता नहीं दो आदमी, चार औरतें, दो बच्चे मारे गये हैं। आपकी जानकारी में दो आदमियों तक की जानकारी भी गलत नहीं है।

सी० एम० का क्या रुख है पाण्डेयजी के लिये।

रुख क्या होगा। आज इस्तीफा देने को कह दिया गया है उनको।

यह तो अच्छा नहीं हुआ। अभी परसों ही तो नये मैनेजर के कारखाने की बात पूरी करके आया था उनके साथ।

घबराओ मत। सब ठीक हो जायेगा। पाण्डेय का और का पार्टी से निकाल दे रहे हैं। महीने डेढ़ महीने में उन्हें किसी निगम का अध्यक्ष बना देंगे। रही आपके काम की बात। रामबलि का इस्तीफा आ जाये। एकाध दिन में उद्योग विभाग भी आपके हरिबाबू के पास आ रहा है। सारी गोटियां जमा कर आया हूं।

क्या कह रहे हैं आप। गजब कर दिया आपने तो। बड़ी दूर की कौड़ी खोज कर लाये हैं आप भी।

श्रेयास बाबू। राजनीति है यह। तलवार की धार पर चलना पड़ता है। रामबलि सोचता है सारे काम गुण्डागर्दी से ही चल जाते हैं। आटे में नमक तो चलता है पर नमक में आटा गले नहीं उतरता है। इस छोटी सी बात को कहाँ समझते हैं लोग। जनतन्त्र है कोई जागीरदारी तो नहीं। लो आपकी मनजर भी आ गई।

नमस्कार। मन्त्रीमहोदय, श्रेयास जी।

नमस्कार। बैठिये। साहिनाजी ही हैं ना आप। बड़ा इम्प्रैस्ड कर दिया आपने तो। सारा तौर तरीका ही बदल डाला। हां बधाई देने आ रहे थे आपको।

आपकी ही कृपा है। फिर बधाई जैसी क्या बात है।

साहिला। सुना, उद्योग विभाग भी हरिबाबू को मिल रहा है एक दो दिनों में।

लगा हरिबाबू चौंक उठे हैं— श्रेयासजी भी मजाक करने से बाज नहीं आते। अभी जो विभाग है वही क्या कम है और जिम्मेदारियाँ लेना उचित भी नहीं।

माननीय मंत्रीजी, आपकी कार्यक्षमता से कौन अपरिचित है।

ऑफिस का नौकर आ काफी-नाश्ता रख गया है।

श्रेयासजी। राजनीति में एक दिन भी नहीं चल सकते आप। अभी काम हो जाने दो फिर देखते हैं ऊंट किस करवट बैठना है। आपको पता नहीं रामबलि सी० एम० के सामने ही आग बबूला हो गये। मुश्किल से राजी किया है ज्वॉइन के लिये। उनकी पसन्द के निगम का अध्यक्ष बनाया जायेगा, उसमें किसी प्रकार की दखल नहीं होगी जैसी शर्तों पर तो माने वे। उनके पास जो जोड़ा का अमला है उससे सी० एम० भी घबराते हैं एक बार तो। हमने सारी मध्यस्तता की है इस मामले में। रामबलि को बस में कर लेना ऐरे-गैरे के बस की बात तो है नहीं। खैर। छोड़ो हमारे पचड़े को।

मंत्रीजी, काफी।

हरिबाबू हैरत से साहिला को देखते भरी ओर मुखरित होते कहते हैं—

श्रेयासजी। आपकी मैनेजर की पसन्द अच्छी है।

हमारी पसन्द कह रहे हैं।

आपने इन्हें मैनेजर बना दिया अब तो आपकी पसन्द ही कहलायेगी। साहिलाजी। कॉफी ही पिलाओगी।

आप आदेश दें और क्या मंगवाया जाये।

तुम भी तो जानती हो हमारी इच्छा को।

खूब जानती हूं। पर ऑफिस में तो कॉफी ही मिल सकती है बाकी सब घर पर।

पक्की बिजनेस वाली बन गई हो। अच्छा भी है। श्रेयास बाबू भाग्यशाली हैं। अब हम चलेंगे।

हम तो ऐसे कह सकते हैं। आपको इस बार में बधाई दे दूं।

वह तो ठीक है। पर अभी सब अन्दर ही रखिये। मेरे साथ दिल्ली चलना था क्या रहा।

आप जब भी कह चलेंगे।

इस सप्ताह तो कठिन ही लगता है। अगले सप्ताह हो आयेंगे। वहां पार्टी हाईकमान से मिलना था।

हरिबाबू के साथ साहिला आफिस से बाहर निकल आते हैं। मन्त्रीजी की कार भी आ गई है।

चलें। श्रेयासजी। रात दस-ग्यारह बजे तक फोन पर बात करना मुझसे।

जरूर।

हरिबाबू की कार चल दी। हम दोनों के अभिवादन का उत्तर हाथ हिला कर दिया है उन्होंने।

आओ साहिला बैठते हैं। कुछ जरूरी बात करना है तुमसे। 

दस

आज अपने कार्यालय मे जमकर बैठा हू और सारी फाइलें निबटा डाली हैं। चाय के घू ट के साथ अखबार उठा देखा लगता हू। पहले पृष्ठ पर ही प्रमुखता के साथ छपा है। उद्योग मन्त्री रामबलि पाण्डेय का इस्तीफा मजूर।

प्रदेश के उद्योग मत्री रामबलि पाण्डेय ने स्वेच्छा और नैतिकता का ध्यान मे रखते हुये मत्रीपद से त्यागपत्र दे दिया। श्री पाण्डेय ने कहा है—व प्रारभ से पार्टी के लिय एक वफादार सैनिक की तरह् काम करते रहे ह और आग भी करते रहग। इसी म आग छपा है—प्रदेश मन्त्रीमण्डल के वरिष्ठ म त्री श्री हरिबाबू अन्य विभागो के साथ उद्योग मन्त्रालय का काय भी देखेंगे।

अखबार टेबल पर पटक हरिबाबू को टलीफोन मिलाता हू। कौन, वर्मा जी बाल रहे है। मन्त्रीजी ह। क्या बहुत भीड है बगले पर। बात कराओ। कहिये श्रेयासजी का फोन है। बधाई हो हरिबाबू बधाई हो। ठीक है शाम को आ रहा हू क्या सी० एम० के चलना है। चलेंग। अजी, अकेले क्यो आऊँगा। जैसा आपका आदेश।

सामने खडे माणिक को बैठने का सकेत करता हू। आठ बजे पहुच जाऊँगा। आपने यहा। अच्छा   नमस्कार।

श्रेयासजी। फिर हरिबाबू के पास आ गया उद्योग मन्त्रालय अब तो दोना हाथो स लक्ष्मी बटोरिये।

उनसे ही बात हो रही थी अभी, माणिक।

वह तो मैं समझ ही गया था।

रामबलि पाण्डेय के त्यागपत्र का नतीजा है। यह तो माणिक हमारी नयी फैक्टरी का बडा हिस्सा खा भी जाना और डकार भी नही लता।

इस बार हरिबाबू ने गजब की पटकनी दी है पाण्डेजी को।

वह कैस।

आप तो एस पूछ रह हैं जसे आपको कुछ भी नही मालूम।

सच मुझे कुछ नही मालूम। वैसे भी राजनीति मेरा क्षेत्र भी नही। कुछ बताग्रो भी।

गाव के झगडे मे रामावतार के साथ मे ज्यादातर लोग हरिबाबू के ही काले भेडिये ही तो थे। एक-दो नही पूरे नौ लोगो को मौत के घाट उतार डाला। इधर हरिबाबू ने विरोधियो अखबार वालो से हाथ मिला लिये। फिर तो यह सब होना ही था। गये दिनो प्रदेश की राजनीति, मुख्यमन्त्री पर रामबलि के बढ़ते दबदबे को देख हरिबाबू घात लगाये बैठे थे मौके की। इस बार तो पाण्डेयजी को धूल चटा दी इन्होंने।

मेरे समझ म नही आती तुम्हारी बात। अभी परसो ही तो हरिबाबू कह रहे थे रामबलि जी को किसी निगम के पद दिये जाने की सिफारिश करके आये हैं सी० एम० को।

वह भी गलत नही। वह तो इस्तीफा दिलाने का तरीका था। आश्वासनो से क्या होता है। अभी हरिबाबू छोडने वाले कहाँ है। पार्टी के विधायको से ही उन्ह पार्टी से निकाले जाने की माग खडी करवा दी है। सत्तर विधायको के दस्तखत है उस ज्ञापन पर जा मुख्यमन्त्री, हाईकमान का दिया गया है। सी० एम० भी यही चाहता है। पाण्डे की गुण्डागर्दी से वह भी चमकता है।

हरिबाबू के साथ सी० एम० के यहा रात के भोजन पर मुझे भी जाना है आज।

अच्छी बात है।

माणिक। शेग्रस की क्या हालत है।

अच्छी बिक रहा है। गये दिन के आकडा के अनुसार बाईस प्रतिशत शेग्रस तो बिक चुके है। बक से रोज शाम को पूछ लेता हू। अब तो आप हरिबाबू को कसकर पकड लो। उद्योग विभाग भी इनके पास ही है अब तो।

तुम ठीक कहते हो। वैसे भी उनकी पूरी कृपा है हम पर।

जी भरकर सीधे हैं आप। गलतफहमिया मत पालिए इन लोगो के लिए। इनकी तो सेवा करते रहिये। जहाँ चूके इन्होने नजरें बदली। तोताचश्म होते हैं यह सारे के सारे।

ऐसा मत सोचो। कम से कम अपने हरिबाबू के लिये तो नही। तुम तो देख ही रहे हो चार बडे कारखाने, मिल तो इनकी मेहरबानी से ही बने हैं।

यह काम तुम करो। मैं घर हो आता हूं। ध्यान आया घर वाली फाईल में कोई आठ-दस जापान की पार्टियों के नाम लिखें हुए हैं जो हमारे लिए एल० सी० की व्यवस्था कर सकते हैं वहां पर।

अपनी कुर्सी से उठ बाहर आ गाड़ी में बैठता हूं।

घर, चलेंगे साहब।

हां। चलो।



आपकी बात से बिल्कुल असहमत नहीं हूं। हरिबाबू अपने लिए तो वहां हैं जो पन्द्रह-बीस साल पहिले थे। आपके तो मित्र ही हैं।

चाहो तो तुम भी चलो शाम को सी० एम० के यहाँ भोजन पर।

आप ही हो आयें। वहां करूंगा भी क्या आप लोगों की बातों में।

जैसी तुम्हारी इच्छा। उद्योग भवन का क्या रहा।

मैनेजिंग डायरेक्टर मधुसूदन पाण्डेय की एक हजार अड़चनें।

पर ऐसा क्यों। रामबलि ने सब से ठीक से समझा दिया था उसे।

आपको खुश करने को कह दिया होगा।

रामबलिजी से मेरी उद्योग भवन से ही बात हुई थी।

उन्होंने साफ कह दिया था दस प्रतिशत शेयर्स पहले उनके नाम होकर पहुंच जायेंगे तब सोचना शुरू करेंगे वे।

अजीब आदमी है। जब मैंने सारी बातें मान ली थीं उनकी। फिर....

श्रेयासजी। आप भी उस पर नाराज हो रहे हो आज सड़क पर आ गया है। अब तो हरिबाबू करेंगे सारा काम।

फिर भी माणिक, मुझ पर भरोसा नहीं किया उन्होंने इसी का दुःख है।

दुःख मत करिये। आप जैसे तो नहीं थे वे।

चिन्ता जैसी कोई बात नहीं, सब हो जायेगा। साहिलाजी कहाँ हैं आज।

आज व मिल तो नहीं गई थीं। घर पर ही होंगी। बात करवाऊं उनसे।

रहने दो। बाद में कर लूंगा। अभी क्या कार्यक्रम है तुम्हारा।

आज सुबह जापान टेलेक्स भेजा था। केबल्स से सम्बन्धित मशीनों की कीमतें और कितने समय में डिलवरी दे सकते हैं जानकारी लेनी थी। बैंक के लिए एल० सी० के बारे में वहाँ दो-तीन फर्मों को टेलेक्स दे रखा है फोन भी बुक कराए हैं। आफिस में ही बैठना पड़ेगा शाम तक। जवाब लेना आवश्यक है।

यह काम तुम करो। मैं घर हो आता हूं। ध्यान आया घर वाली फाईल मे कोई आठ-दस जापान की पार्टियों के नाम लिखें हुए हैं जो हमारे लिए एल० सी० की व्यवस्था कर सकते है वहा पर।

अपनी कुर्सी से उठ बाहर आ गाडी म बैठता हू।

घर, चलेंगे साहब।

हां। चलो।



ग्यारह

रात मे दस बजने वाले हैं। अजीब काटने वाली सर्दी पड रही है। कार मुख्यमत्री की कोठी के अहात म जा रुकती है। मेरे साथ भटक स साहिला ने भी दरवाजा खोला। बाहर खडे सुरक्षा गार्ड से बात कर दोनो पोच म आ गये हैं। दरवाजे पर तैनात सुरक्षा कमचारी पूछता है—

आप श्रेयासप्रसादजी हैं।

जी।

वह दरवाजा खोलता है। हम दोनो महमान कक्ष मे जा पहुचते ह।

आओ बैठते हैं।

हम दोनो अत्य त कीमती सोफो पर बैठ जाते हैं। हमारे यहा के टली-फोन की घण्टी बजती है। फोन उठाता हू।

जी, मैं श्रेयास। आ रहा हू।

हरिबाबू अन्दर ही हैं। वही बुलवा रहे हैं।

हम दोनो साथ लगे कमरे म घुसत ह।

आईये। श्रेयासजी। साहिलाजी कैसी हैं आप। बैठिय।

अच्छी हू।

अब तो आप प्रसन्न हैं। रामबलि से आपका पीछा छूट गया। व्यथ ही परेशान हो रहे थे आप। हमारे पर विश्वास रखिये सब काम जमा देंगे।

आपका तो पूरा आशीर्वाद है हम पर।

अजी। जो अपने हैं उनके लिये सब किया ही जाता है। कौनसी नई बात है।

मुख्यमत्रीजी यहा नहीं हैं।

अन्दर ही हैं। कुछ फाईलें निवटा कर आते ही होगें। देर रात तक काम करते हैं। दिन मे समय कहा मिलता है। सुबह से शाम तक लोगो का मिलना, सचिवालय, उदघाटन, भाषण केन्द्रीय मन्त्रियो की आवभगत मे

समय बीत जाता है। रात ही मिलती है फाईलों, घर के, व्यक्तिगत कार्यों के लिये। और साहिलाजी आपके मिल का क्या हाल है।

अच्छा चल रहा है।

मुख्यमंत्री जी नौचन्दीलालजी आ गये।

नमस्कार साहब।

आप प्रदेश के वरिष्ठ उद्योगपति हैं। यह साहिलाजी है। इनके मिल की मैनजर हैं।

नमस्ते। बैठिये आप लोग। हाँ हरिबाबू। रामबलि ने तो सारे विभागों का भट्ठा बठा दिया जो उनके पास थे। अब वन्य विभाग के अध्यक्ष बनने की रट लगा रखी है। बूढ़े हो गये पर कुछ भी नहीं समझते। कौन समझाए उनको। दिन म चार छ फोन ठोक डालत है। मैंने तो बात करना ही बन्द कर दिया है उनस।

छोड़िये भी आप रामबलि को। उन जैसे हजारों चला दिये हमने। आपको एसे भ्रष्टाचारी लोगों के बारे में सोचना भी नहीं चाहिये। पाँच-सात दिन में सब शान्त हो जायेंगे। आपने हमें भोजन पर बुलाया है कहीं भूल तो नहीं गये।

हरिबाबू। मजाक करने लगे आप तो। सामने वाली अलमारी म से कुछ सामान ले आओ।

हरिबाबू अपनी धोती सभालत उठते हैं।

आप बैठिये। मैं ले आती हू। क्या लाना है।

चलो तुम ले आओ। दो बोतल अंग्रेजी, एक स्वदेशी आशा की। हमारे नौचन्दीजी स्वदेशी का ही प्रयोग करत ह।

हरिबाबू जोर से ठहाका मारकर हँसे थे। साहिला आलमारी से दो बोतलें, ग्लासेज उठा लाई।

साहिलाजी। यह स्टीरियो भी चला दें।

जी, चलाती हू।

कमरे म पाश्चात्य सगीत धीमा-धीमा उभरने लगा था। साहिला जमीन पर बिछे मखमली कालीन पर बैठ ग्लास तैयार करने लगी।

हरिबाबू आईये हम सब उधर जमीन पर ही बैठते हैं।

आप ठीक कह रहे हैं। गद्दों पर बैठ कर पीना बड़ा औपचारिक लगता है। साहिलाजी, ऊपर ही बैठते हैं।

हम सब ऊपर पलंग पर बिछे गद्दों पर जा बैठते हैं।

साहिला ने पहिला जाम बना मुख्य जी को दिया। फिर हम दोनों को।

आप भी तो लें, साहिला जी।

नहीं। आप तो जानते हैं मैं हाथ तक नहीं लगाती।

लीजिये। पहिले मैं हाथ लगा देता हूँ।

आप समझे नहीं यह कह रही हैं आप खुद अपने हाथों से पिलायेंगे तो पी सकती हैं अन्यथा नहीं।

तो हरिबाबू। हम ही पिला देते हैं। मेजबान तो हम ही हैं।

आप रहने दें मैं ले लूँगी।

सुना आजकल तो हरिबाबू के मिल का काम देखती हैं आप।

इन्होंने मिल के सारे काम मेरे पर ही छोड़ दिये हैं। पूरा तो करना ही पड़ता है जब जिम्मेदारी ली है तो।

अच्छी बात है। समझदार लगती हो। आप तो हमसे दूर बैठी हैं। हरिबाबू जरा अन्दर जाकर भोजन की व्यवस्था की जानकारी लें। मैं साहिलाजी से बात कर रहा हूँ।

हरिबाबू बमन उठकर अंदर चले गये हैं। उन्होंने दरवाजे पर मुझे उनके साथ जाने का संकेत भी किया पर समझा नहीं मैं। फिर भी उठकर हरिबाबू के पास चला दिया।

श्यामजी आपका ही घर है। थोड़ा हरिबाबू का हाथ बँटा दें आप।

जी, देखता हूँ।

मैं कह रहा था साहिलाजी आप भी कौन सी मनेजरी के झंझट में पड़ गई। राजनीति में आईये आप। हमारे प्रदेश की तीन सीटें खाली पड़ी हैं। चुनाव सिर पर है। आप पार्टी की मेम्बर तो हैं ना।

मेम्बर नहीं हूँ। दूसरा राजनीति के बारे में मेरी खास जानकारी भी नहीं है।

आप श्रेयासजी के मिल की मैनेजर हैं हरिबाबू आपकी प्रशसा करते नही थकते आपको पैसो की कोई कमी नही। हम आपसे खुश हैं। यही राजनीति की अलिफ, ब प है। अधिकतम लोगो को प्रसन्न रखना और खुद भी आन द करना का दूसरा नाम सरल शब्दो मे राजनीति भी हो सकता है। लाओ, एक गिलास और तैयार कर दो।

लाईये। आप बडे दिलचस्प हैं। सरल शब्दो मे समझा दिया आपने तो।

गिलास को ले तेजी से गले से नीचे उतार दिया है उन्होंने।

लो, एक और। तुम्हारे हाथो से तो लगता है जी ही नही भरेगा मेरा। सबसे पहिले तो कल ही पार्टी की मेम्बर बन जाओ। फिर हाईकमान से बात कर तुम्हारे टिकट का इन्तजाम भी करवा देता हू।

पर आप तो जानते हैं चुनावो मे कितना खर्च होना है।

तुम बडी भोली हो, अरे, यह मिल वाला उठायेगा तुम्हारे सारे खर्च। चि ता मत करो। हम भी तो बैठे है।

मुझे लगा था नौचन्दीलालजी अपने नियन्त्रण म नही है।

तुम तो चुनाव लडने की ठान लो। फिर देखो सीधा केबिनेट मिनिस्टर बना डालेंगे तुमको।

आप तो बातो से आकाश म उडाये ल जा रह ह मुझे।

इधर आओ मेरे पास। आकाश मे उडा रह है तुमको। हम जो कह दगें पूरा करके ही दम लेन ह। बीरनगर की सीट हमारी पार्टी के नाम लिखी हुई समझो। वही स लडवा देते हैं। तुम भी क्या याद करोगी।

कहने नौच दीलाल बाज की भाति झपट पडे थे मुझ पर। मैं समझ भी नहीं पाई थी उनकी इच्छा को। विरोध के स्वर मे बोली थी—

आपको क्या हो गया है।

कुछ भी तो नही। राजनीति म सफल होने के कुछ जरूरी तरीके समझा रहा हू। छोटी छोटी बातें हैं जिनसे किसी को भी तुम चुनाव म हरा सकती हो। हमार क्षेत्र मे सहनशीलता, निष्ठा होना आवश्यक है।

आप बहुत परेशान कर रह हैं।

हरिबाबू से अधिक तो नही ना। उनम तो [illegible] गये हैं। हरिबाबू सब सुना रह थे [illegible] बातें। उन्ह सुनकर ही तुम्हार लिय तो पागल [illegible]।

नौचन्दी बाबू ने हाथ बढ़ा कमरे की लाईट बुझा दी थी और मैंने उनके लगातार चलते हाथों को पूरे शरीर पर महसूस किया था। हाँफते से बोले थे---

साहिला। मजाक मत समझना। हमने कह दिया है तो पत्थर की लकीर मान लो। तुम्हें चुनाव जिताना, फिर मंत्री बनाना मेरा काम है।

नौचन्दीजी, कितने चालाक हैं आप।

अभी भी तुम चालाक ही मान रही हो हमको। तुमसे पहली बार मिल हमें लगा तुममें वे सारे गुण हैं जिनसे लोग खुश होते हैं।

नौचन्दीजी ने अंधेरे में टटोलते बिजली जला दी थी। मेरे बाल सवारते बोले—

लो, जाओ। पास वाले कमरे में से दोनों को बुला लाओ। पता नहीं क्या कर रहे हैं वहां बैठे।

पास कमरे के दरवाजे को खोलकर देखा वे बैठे बातें कर रहे थे। मेरे आवाज देने पर चले आये थे। मेरे पास से निकलते हरिबाबू ने मुझे ध्यान से देखा और मुस्कराते नौचन्दीजी के पास चले गये।

जी। मैं तैयार हूँ।

यही आशा थी मुझको। हरिबाबू साहिला को कल ही मेम्बर बनवा दो पार्टी कार्यालय में जाकर।

चलो भोजन कर लो।

पास के भोजनकक्ष में जा बैठे थे। मैंने तीनों के लिये भोजन की प्लेटस तैयार कर दी उन्हें। तीनों सामान्य स्थिति में नहीं थे।

हरिबाबू। हमारा विचार गलत तो नहीं लगा ना आपको। कोई गलत बात हो तो बता देना। विचार-विमर्श, स्वस्थ आलोचना की कद्र करता हूं मैं।

नौचन्दीलालजी हमसे क्या छिपा है आपका।

तुम समझदार हो मैं जानता हूं। साहिलाजी को चुनाव लड़ लेने दो। फिर आप और मैं मिलकर दस रामबलियों से निपट लेंगे हम।

जोरदार ठहाका मार हँसे थे वे लोग।

भोजन समाप्ति के बाद नौचन्दीजी बाहर कार तक छोड़ने आये थे हमको। पूरी शालीनता के साथ दोनों हाथ जोड़कर विदा किया था। ✲

बारह

सुबह होने वाली है। अभी हल्का अंधेरा फैला है चारों ओर। टेलीफोन की घण्टी बजती है। फोन उठाती हू।

कौन बोल रहे है इतनी सुबह।

साहिलाजी बोल रही हैं आप।

जी। कहिये।

मैं वर्मा, हरिबाबूजी का निजी सचिव बोल रहा हू। मन्त्रीजी ने कहलवाया है नौ बजे तैयार रहें। पार्टी आफिस जाना है आपको।

वर्माजी। दिन में नहीं जा सकते क्या।

मन्त्रीजी पूरे दिन व्यस्त है अपने कार्यक्रमों मे। सो पार्टी आफिस नौ बजे जाने को कह रहे है। आपकी सदस्यता का फार्म मगवा लिया था। भरकर देना है उसे।

ठीक है। मैं समय पर तैयार हो जाऊँगी। मन्त्रीजी से कहे मुझे लेते निकल जावें वे।

जी, कह दूगा।

फोन रख सोचती हू। अजीब स्थिति है जो कार्य कर रही हू उसी से थक जाती हू, समय नहीं मिलता यह नया काम और लगा दिया नौचन्दीजी ने। फिर भी बिस्तर से बाहर आ तैयारी में लग जाती हू। एक घण्टा तो कम से कम लग ही जायेगा।

सारे कामों को निबटा बाथरूम में घुसती हू। अचानक घण्टी बजती है।

कौन है भाई।

दरवाजा खोलती हू। हरिबाबू बिल्कुल तरोताजा, [illegible] लगाये, कीमती चश्मे से झांक रहे है मुझे।

आइये। आप दो मिनिट बैठें। अखबार देखिये। मैं [illegible] कर आई। कैसे और सारे कामों को पूरा कर लिया है। [illegible] आ गये।

हम मन्त्री जो ठहरे। अब तुम्हें भी मन्त्री बनना है। आदतों में सुधार लाओ। जल्दी उठना जरूरी है। कई बार तो हम सुबह पांच-छः बजे तक तो दौरे पर निकल जाते हैं। तुम तैयारी करो देर हो जायेगी।

जल्दी से स्नान कर बाथरूम से निकल आई हूं। मन्त्रीजी बैठे अखबार पढ़ते चाय पी रहे हैं। मेरी ओर देखते कहते हैं—

मुश्किल से अढ़ाई महीने बचे हैं चुनाव होने में। चौधरीजी भी पक्के पारखी हैं। एक नजर में जान लिया कितनी योग्य हो तुम। भाग्यशाली हो। वरना लोग एड़ियाँ घसीटते बूढ़े हो जाते हैं पार्टी टिकट के लिये और नहीं मिलता उनको।

सब आपकी कृपा है हरिबाबू।

हरिकृपा ही कहो। हम तो खुद हरि के भक्त हैं। ईश्वर की इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। लो जल्दी करो।

साड़ी बांध रही हूं। तैयार हूं मैं।

मैं कोई सहायता करूं तुम्हारी।

रहने दें। आप तो वैसे ही कृपा बनाये रखें।

कृपा का घर नाम तुम्हारा है।

आओ, चलें अब।

हां। चलें।

दोनों ड्राईंगरूम से बाहर निकल आते हैं।

इला। जा रही हूं मैं। शाम तक ही आ पाऊंगी। घर का ध्यान रखना।

जी। ठीक है।

आओ बैठो। पार्टी आफिस चलेंगे।

कार तेजी से चल दी है। हरिबाबू बैठे पीछे छूटते जा रहे आयायामों को एकटक देख जा रहे हैं। उनका एक हाथ मेरी गोद में है। मेरी ओर देखते कहते हैं—

मिल की नौकरी तुम्हारे व्यक्तित्व के सामने बहुत छोटी है। बड़ा समय गंवाया तुमने। खैर। योग की बात है। देर आयद दुरुस्त-आयद। नौकरी करने वाले बैल ज्यादा ही होते हैं। तुम्हारे जीवन का निखार यहां से यहां

तक होना चाहिये । श्रेयासजी को मुख्यमंत्रीजी को सारी योजना समझा दी थी उस दिन । उनसे कोई बात हुई ।

हां। प्रसन्न थे वे ।

क्यों नहीं होंगे । वे जानते हैं हमारी योजना को । उसके मीठे फलों की कल्पना चुटकी में कर डालते हैं । पूरे तीस लाख का खर्चा है चुनाव का । हंसते हंसते ही मान गये । वहां एक बार ही तो लगाना है । बाद में तो कई श्रेयास बाबू थैलियां लेकर घूमते दिखाई देंगे ।

हंसी-बातचीत में कार पार्टी कार्यालय के बाहर जा खड़ी हुई । दोनों बाहर निकल जाते हैं ।

चलो । खजांचीजी भी यहीं हैं

नमस्कार हरिबाबू ।

और राधावल्लभजी कैसे चल रहा है । आज यहीं रुक गये थे क्या ।

आजकल यहीं रहता हूं । घर-बार छोड़ दिया है । पार्टी आफिस से तीन सौ रुपये महीना मिल जाता है । बच्चे बड़े हो गये उनकी चिंता से मुक्त हूं ।

अच्छा है । खूब काम करो । बैठो माहिलाजी । राधावल्लभजी पार्टी ऑफिस के प्रमुख हैं । यहां का सारा काम इन्हीं के जिम्मे है । जब से मैं पार्टी का सदस्य बना हूं इन्हें इसी हालत में देखा है यहां । पुराने निष्ठावान लोगों में से हैं । कैसा भी परिवर्तन नहीं इनमें ।

हमारा क्या है हरिबाबू । आपको याद है पार्टी में मैं ही लाया था आपको । उन दिनों तो समाजवादियों का भूत चढ़ा हुआ था आप पर । देखते-देखते इतनी तरक्की कर डाली आपने । हमारे तीन नम्बर के लड़के की नौकरी के लिये कहा था आपको मैंने ।

कहा तो था । माहिलाजी का काम ले लो । इनका चुनाव पूरा कर लें । फिर आपका काम कर देंगे । इस बार ध्यान रहेगा ।

हरिबाबू । कहीं चपरासी ही लगवा देते उसको ।

आपका लड़का चपरासी की नौकरी करेगा शर्मिन्दा कर रहे हैं मुझे आप।

और क्या करेगा । पढ़ तो पाया नहीं वह । मैंने सारा समय पार्टी की सेवा में लगा दिया । बच्चे, पत्नी सब भला बुरा कहते हैं, मैं क्या कर सकता हूं । सच्चे कार्यकर्ता की भूमिका रही है मेरी ।

घबराईये मत। मन हो जायेगा। अच्छा चलते अब। आप तो साहिलाजी को आशीर्वाद दें। जनसेवा के क्षेत्र म आ रही हैं यह।

हमारे आशीर्वाद से क्या होगा। पार्टी मे ऊपर बैठे लोगो की कृपा दृष्टि चाहिये।

पहले आप बुजुर्गों का आशीर्वाद आवश्यक है।

मेरी पूरी शुभकामनाएँ हैं।

अब चलेंग। मुझे कई काम करना हैं।

मैं और हरिबाबू कार मे आ बैठते हे। सचिवालय चलेंगे।

राधावल्लभ। पुराने स्वतन्त्रता सेनानी रह हैं। सुभाषबाबू के साथ बर्मा, रगून कलकत्ता मे कई साल रह। पर समय के साथ खुद को बदल नही पाय। यही कारण है जहाँ थे वही बैठ ह आज। पार्टी की ओर से पहिले टेन सौ रुपय मिलते थे। नौबतदजी से लड-झगडकर मैंने तीन सौ रुपये करा दिय। पार्टी के पास भी पैसा कहाँ है। पार्टी ऑफिस की पुताई जमा छोटा काम बीस-पच्चीस वर्षों स नही हुआ। साल म एकाध बार यहा सब इकट्ठे होत है। सब अपनी-अपनी समस्याओ व्यक्तिगत स्वार्थों की लडाई लडकर चले जाते हैं। किसी को इसकी दुदशा का ध्यान नही। गये बार पार्टी का झण्डा फहराया जाना था। कार्यालय मे फटा-पुराना झण्डा पडा था। मैंने उसी समय नया मगवा कर दिया। आओ ऊपर चलें।

सचिवालय की लिफ्ट स चढ हरिबाबू के कार्यालय म घुसते हैं।

बैठो। साहिला। यहा से सरकार चलाते हैं हम। मुख्यमन्त्रीजी का नम्बर मिलाओ जरा।

मुख्यमन्त्रीजी हैं घर पर। क्षमा कीजिय, आप ही बोल रह हैं। हरिबाबू बात करेंगे।

नमस्कार, सरकार। साहिलाजी का फाम भरकर अभी सचिवालय पहुचे ही हैं। हा ले लूगा। कब भेजना है। अच्छा आप हो जा रह है। शाम तक घर भिजवा दूगा। अच्छा जी।

फोन बन्द कर देन ह। तुम्हारा बायोडेटा भेजना है हाईकमान को। यही समझ नही आ रहा पार्टी के लिए कब स काम कर रही हो, क्या लिखें। खैर। करेंग कुछ और आज क्या कायक्रम है तुम्हारा।

मुझे मिल जाना था। स्टाफ की मीटिंग है। श्यामबाबू भी आ रहे हैं उसमे।

चाहो तो वीरनगर चलो हमारे साथ। तुम्हारा भावी निर्वाचन क्षेत्र मे जा रहे हैं।

आप हो हो आगे अभी तो। फिर कभी चलूंगी।

नौचदीजी के साथ कोई कार्यक्रम बनाएंगे वहा का। वह अच्छा रहेगा। वहा के कार्यकर्त्ताओ नागरिको से उस रूप मे परिचय होगा तो ज्यादा प्रभावशाली रहेगा।

आप जैसा उचित समझें। मिन वाली मीटिंग मे जाना है अभी। ग्यारह बज रहे हैं।

वह सब करती रहो। पर लगातार सम्पर्क बनाये रखो। पता नही कब क्या काम हो जाये तुमसे। मेरे, नौचदीजी के साथ तो दिल्ली आना-जाना बना रहेगा तुम्हारा।

आपसे दूर और अलग कहाँ हू। चलूंगी मैं।

शाम को मिल रहो हो ना।

फोन कर दूंगी आपको।

ठीक है। अभी चलो तुम।



तेरह

दा नण्ट म ग्राफिस मे वठी हू। गया पूरा सप्ताह एमा बाता है की काम करन का मन हा नही बना पा रही हू। मिल मम्त्र जी तो विशेष काम है भी नहीं। कुछ फाईलें थी घर से ही पूरी कर भिजवा दी थी। मैं नींद जो म मिता हू निपात की हानि क्या करू – क्या नहीं करू की हा तुरी है।

फोन। ग्राग्रा माणिक।

साहित्यकार कम चल रहा है।

बस चल रहा है। कुछ विशेष नहीं। उलझनों का स्थिति है।

मत डरो।

तुम भी तो जानते हो। इधर जीज श्यामजी हैं और उधर नीरज ना। कुछ समझ नहीं पा रही म।

नाहक ना बहुत परेशान ह ग्राप। उसमे क्या घबराना है। तर महान नी भाग लि है वग। श्रीनगर तो सुरक्षित स्थान है और फिर उन जाना है। घर तो जोड़ो हो हुई है। सारी आर्थिक व्यवस्था श्यामजी की रि म हो ता है और व पूरी तरह तयार हैं। आपका चुनाव म जीतना हा श्यामजी के लिए गौरव की बात है। मोता लगता मनाप म भी नौ निकल जना। मैं प्रश्न म महिला म ि है हो रहा।

नमस्कार साहब। शेयर्स। अपना चालीस परसेंट का लक्ष्य तो पूरा हो चुका है। आप कहें तो पाँच परसेंट और दे दें बाजार में। हाँ। हाँ समझ गया। नहीं देंगे। मिल आ रहे हैं। आईये। यहीं हूँ मैं।

आपका काम जोरदार है। चालीस परसेंट शेयर्स बिक भी गये।

सारी योजना श्रेयासजी की है। काफी मंगवाओ। अब तो बैठना होगा। आप तो वैकल्पिक लड़ लीजिये चुनाव। सब देखा जायेगा।

दयू गी। अभी कुछ सोच नहीं पा रही मैं। यहां रख दो। तो माणिक चाय लें। देखेंगे फिर।

बाहर कार रुकने की आवाज आती है।

आईये श्रेयासजी।

साहिला बधाई हो। अभी तुम्हारे से बात करने के बाद सी० एम० साहब का फोन आया। वीरनगर से तुम्हारे नाम का निर्णय कर लिया है पार्टी हाईकमान ने।

हो गया निर्णय। बधाई हो साहिलाजी। प्रदेश की भावी मंत्री महोदया।

मैंने सी० एम० साहब से सुबह ही बात की थी। तब तो कुछ नहीं कहा उन्होंने।

अभी पन्द्रह मिनिट पहिले उनके सचिव ने बताया था उन्हें। वायरलैस सन्देश था दिल्ली से। तब ही नीचन्दलालजी ने मुझे फोन कर दिया। बहुत खुश थे वे।

खुशी की बात तो है ही। जिसके लिए उन्होंने कहा काम हो गया।

माणिक। ज्यादा खुश तो वे इस बात से है कि रामबलि पाण्डे के आदमी को मात दे दी उन्होंने। रामबलिजी पन्द्रह बीस दिनों से अपने लोगों को लेकर पड़े हुए थे देहली में। यहां भी मात दे दी पाण्डेयजी को।

रामबलिजी किसके टिकिट के लिये गये थे।

अब क्या बताऊं उनके लिये। कुख्यात तस्कर शंकरसेन की वकालत कर रहे थे वे। उसको टिकिट दिला देते तो चाँदी के साथ सी० एम० की जान को बने रहते हमेशा के लिये। इसीलिये नीचन्दाजी ज्यादा खुश थे।

यह तो सब हो गया। पर साहिलाजी तो मानस बना ही नहीं पाई हैं इसके लिये।

ऐसा कुछ नहीं। इनसे पूछकर ही किया गया है सब।

श्रीवास्तवजी। भागदौड़ का जीवन पसन्द नहीं मुझे। आर्थिक रूप से तो कोई तकलीफ है नहीं मुझे। आप ही देखिये कितनी जिम्मेदारी का काम है।

आर्थिक की कोई बात नहीं। समाज में, लोगों में आपका यश भी तो बढ़ना चाहिये। आपको जो अवसर मिला है उसका लाभ उठाना चाहिये। सी० एम०, हरिबाबू की सलाह पर मैंने तुम्हारे चुनाव का सारा खर्च उठाने का सोचा है। तीस लाख रुपये खर्च हो जायेंगे। सोचता हूं तुम सरकार में रहोगे तो हमारा प्रतिनिधित्व अपने-आप हो जायेगा। तुम्हारी सहमति, मेरे द्वारा खर्च की जिम्मेदारी ले लेने पर ही तो पूरा जोर लगाकर नौचन्दीजी टिकिट की व्यवस्था कर पाए हैं। अब उनसे थोड़ा भी कुछ कहा तो बुरा मान जायेंगे। व्यवहार में भी अच्छा नहीं लगता।

खैर, आप जैसा चाहेंगे होगा।

मेरे चाहने मात्र से ही नहीं। तुम खुद सोचो कोई गलत काम तो हो नहीं रहा। हाईकमान को सी० एम० अब दूसरे उम्मीदवार के लिए कहें यह भी उनकी प्रतिष्ठा के खिलाफ होगा। अब कुछ नहीं सोचो। मंत्री बनना है तुम्हें यही लक्ष्य रखो जीवन का।

श्रीवास्तवजी आप बड़ी जिम्मेदारी डाल रहे हैं मुझ पर। देखो क्या कर पाता हूं मैं।

कितना समझाया तुम्हें कुछ नहीं करना। चलो, नौचन्दीजी से मिल आते हैं।

पहले मालूम कर लो कोठी पर हैं कि नहीं।

माणिक। पूछो जरा।

माणिक फोन मिलाते हैं।

हलो। मुख्यमन्त्रीजी हैं। कहाँ, सचिवालय गये हैं। ठीक है।

सचिवालय गये हैं। चलो, वहीं मिल लेंगे। माणिक तुम भी चलो।

आप हो आयें। मुझे उद्योग भवन पार्सल देने जाना था। मशीनों की आयात के कागजात दिल्ली ऑफिस को भिजवाने थे। सारी औपचारिकताएँ पूरी करवा ली थीं। दो महीने कम से कम और लग जायेंगे अभी तो।

तुम उद्योग भवन जा आओ। हम दोना सी० एम० से मिल आते है। उनका मार्गदर्शन भी तो लेना है। अब आगे के लिये क्या और कैसे करना है।

कार्यालय से बाहर निकल आते हैं।

अच्छा मालिक शाम को फोन पर बात करना मुझसे।

जी अवश्य।

मैं चलता हू। 

रामवलि पाण्डेय जिसके टिकट के लिये गये थे उसके समर्थक लोगों की भीड़ है। दो तीन दिन राजधानी में रहेंगे यह लोग। फिर अपने गावों को लौट जायेंगे। मौज मस्ती के लिये आये हुए हैं। साहिला का टिकट पक्का हो गया है।

आगे के लिये क्या आदेश हैं।

तैयारी करें आप। साहिलाजी के कुछ अच्छे फोटोज तैयार करवायें। दो चार प्रेस कान्फ्रेंस कर डालें। आज साहिला का नाम, वीरनगर के प्रत्याशी के रूप में परिवर्तन पार्टी की ओर से समाचार पत्रों में भेज रहे हैं हम।

बहुत अच्छा है। जैसा आपका आदेश।

श्रेयामजी। उधर मेरे सचिव को कह दें कि हरिबाबू को बुलवा लें। कुछ देर आप उधर ही बैठें।

ठीक है। हरिबाबू के लिये कह देता हूं उन्हें।

श्रेयामजी हमारे बीच से उठ बाहर चले गये हैं। अपनी घूमने वाली कुर्सी पर लापरवाही से बाँहें पसारते, मुस्कराते गोविन्दजी बोले—

देखो साहिला तुम्हारा टिकट पक्का करा दिया हमने। अब चुनाव में जुट जाओ। ज्यादा समय इन दिनों चुनाव, उसकी रणनीति, अपने क्षेत्र के कार्यकर्ताओं, लोगों से मिलने में लगाओ। श्रेयाम बाबू की बैसाखियों को छोड़ दो। यह लोग तो व्यवसायी वर्ग के हैं। जब तक तुमसे, सरकार में इनका काम निकलता रहेगा मक्खियों की तरह मण्डराते रहेंगे। इन लोगों की अधिक चिंता नहीं करनी चाहिये। मिल की मैनेजरी का काम भी छोड़ दो। राजनीति और नौकरी दोनों काम साथ नहीं चल सकते।

अभी चुनाव हो जाएँ। बाद में छोड़ दूंगी।

चुनाव से क्या होता है।

अच्छा नहीं लगता अभी। श्रेयामजी भी गलत सोचने लगेंगे मेरे लिये।

खैर। मेरे कहने का मतलब है तुम्हारा सारा ध्यान चुनाव पर ही रहना चाहिये बाकी सारे काम गौण मानकर चलो और लगातार मेरे हरिबाबू के साथ सम्पर्क बनाये रखो। वीरनगर चुनाव का हरिबाबू को प्रभारी बनाया है। मैंने, तुम दोनों में आपसी समझ भी है, दूसरा हरिबाबू वहाँ के कार्यकर्ताओं को भली प्रकार से जानते भी हैं। तुम्हारे चुनाव क्षेत्र में मुस्लिम मतदाताओं की संख्या ज्यादा है। बस मतदाताओं की हमारी पार्टी के प्रति पूरी

निष्ठा है। दो-एक बार मैं भी आ जाऊँगा। वहाँ सारा काम तुम्हें ही करना होगा। कुछ दिन वीरनगर में ही रहो तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

सी० एम० साहब। अधिक दिन तो रहना कठिन होगा मेरे लिये।

क्या इसमें क्या परेशानी है।

मेरी लड़की इला भी बड़ी हो गई है। अधिक दिन अकेली नहीं छोड़ सकती उसे।

तुम्हारे लड़की भी है। मुझे नहीं मालूम। तुम्हारे पति क्या करते हैं।

रहने दीजिये इस बात को। वह एक अलग कहानी है जिसके लिये अब मैं कुछ भी नहीं कहना चाहती। जो बीत गई सो बात गई ही मान लें आप।

जैसा तुम ठीक समझो करो। कितनी उम्र की है वह।

सोलह-सत्रह साल की हुई है अभी।

बच्ची ही है अभी तो।

हाँ वह तो है फिर भी मुझे बड़ी चिंता रहती है उसकी।

स्वाभाविक है। माँ जो हो उसकी। मैं तो समझता था अविवाहित ही हो तुम। इतनी बड़ी लड़की की माँ कहीं से भी नहीं लगती हो। खूब ताजा हो अभी तो तुम एकदम गुलाब की तरह।

मजाक खूब करते हैं आप।

बिल्कुल नहीं। तुम्हारे गुलाबों को छूकर, उसकी खुशबू को सूँघकर ही तो कह रहा हूँ मैं। उस दिन तो पागल ही कर दिया तुमने। उस दिन का नशा भी उतरा नहीं है। जादू ही कर डाला है तुमने।

यों ही प्रशंसा कर रहे हैं आप तो। ऐसा तो कुछ भी नहीं है मेरे में।

यही तो विशेषता है तुम्हारी। तुम्हें अपने रूप-लावण्य का ही पता नहीं है। अजीब सादगी है तुम्हारी भी।

आवश्यकता से अधिक मेहरबान हो रहे हैं।

अच्छे सहयोगियों के साथ ऐसा सोचना गलत भी नहीं। इस सब में तुम्हारे गुणों की प्रशंसा ही अधिक है। हाँ, याद आया आज शाम पार्टी के दफ्तर में वीरनगर के कार्यकर्ताओं की एक मीटिंग रखी है। उसमें तुम्हें आना है। सबसे परिचय कर लो। हरिबाबू ने बुलवा लिया था उन्हें।

कितनी बजे पहुचना है वहा।

सात बजे के आसपास पहुच जाना। मैं आठ तक ही पहुच पाऊगा। क्योंकि शाम को सात बजे राज्यपाल जी के यहा जरूरी बातचीत के लिये जाना है। हरिबाबू वहाँ होंगे ही। कोई असुविधा नही होगी तुम्हे। जमुना भाई के खादी भण्डार से कुछ नई साड़िया ले लना। अब जीवन का सारा तरीका बदलना होगा तुम्हे।

वह सब कर लूगी म।

फिर मुझे आज्ञा हो अभी। घर पर इला को तेज बुखार है। वह कह रही थी दिन म उसके साथ ही रहू मैं। शाम को पार्टी दफ्तर पहुच ही जाऊगी।

खुलकर काम करो। तुम्हारे सामने बड़ी बडी जिम्मेदारिया हैं। मेरी शुभकामनाएँ। इला का ध्यान रखना।

अच्छा नमस्कार।

तुम घर का काम देखो।



पन्द्रह

आज पार्टी कार्यालय में कार्यकर्ताओं, हरिबाबू के खास लोगों, असंतुष्ट विधायकों का मजमा लगा हुआ है। सारे लोग ऊँची आवाज में बहस कर रहे हैं। राधावल्लभजी, पार्टी कार्यालय के प्रभारी सीढ़ियों के पास मूढ़े पर बैठ अखबार पढ़ने में व्यस्त हैं। उन्हें पास के बड़े कमरे में हो रही चर्चाओं का कैसा भी ध्यान नहीं है और न ही उनको कैसी भी रुचि है उसमें। तटस्थ भाव को सरलता से उनके चेहरे पर पढ़ा जा सकता है। हमारी गाड़ी पोच में जा रुकती है।

आईये। साहिलाजी।

श्रेयासजी, हरिबाबू, मुझे देख वहां कार्यकर्ताओं में उत्सुकता होती है।

आईये। श्रेयासजी।

और कैसे हाल हैं भाई कब आये आप लोग।

करीब चार बजे पहुंच गये थे। सुबह ग्यारह बजे तो फोन किया था आपने।

करीम भाई, रघुनाथ चाचा, मोहसिन भाई सब आ गये हैं ना।

मोहसिन भाई वहां नहीं थे। बाकी सब आगये हैं। हरिबाबू आपकी एक आवाज पर पूरा वीरनगर यहां आ सकता है।

आपसे मिलिये। साहिलाजी हैं आप। वीरनगर आपके क्षेत्र की प्रतिनिधि होंगी यह। आप चुनाव में जिता दीजिये ट हैं। वाकी मिनिस्टर बनाने की जिम्मेदारी मुझ पर छोड़ दें। आपके क्षेत्र से पार्टी के कई लोग आये चले गये में भी तो कोई बन नहीं पाया। इस बार आपके क्षेत्र का ही मिनिस्टर बनेगा।

हरिबाबू। आईये अन्दर चलकर बैठते हैं।

सारे लोग अन्दर जा बैठते हैं। मेरे पास हरिबाबू बैठते हैं। हरिबाबू हाथ के इशारे से सबको चुप होने को कहते हैं। फिर स्वयं खड़े होकर कहते हैं।

प्रिय साथियो,

आप लोगों में पार्टी के प्रति जो निष्ठा और उत्साह है उसकी इज्जत करता हू मैं। मेरे छोटे से सन्देश पर चलकर यहाँ पहुच, आप पर गर्व है मुझे। आपके क्षेत्र से चुनाव के लिये साहिलाजी को टिकिट दिया गया है। इन्होंने समाज सेवा के क्षेत्र में जितने काम किये हैं उनको शब्दों में नहीं कहा जा सकता। इस समय प्रदेश के बड़े कपड़ा मिल श्रेयास सूटिंग्स की मनेजर हैं यह। आप लगातार सी० एम० साहब से जनसेवा के क्षेत्र में आने के लिये कहती रही हैं। मुख्यमन्त्रीजी ने इनकी लगन, निष्ठा से प्रभावित होकर प्रयास किया और टिकिट दिलाया। आपसे मेरी प्रार्थना है आने वाले चुनाव में इन्हें भारी बहुमत से जिता कर विधानसभा में भेजें। आपके क्षेत्र में साहिलाजी चाहती हैं अधिक से अधिक उद्योग लगाये जायें जिससे आपका वीरनगर औद्योगिक क्रान्ति की दौड़ में पीछे नहीं रहे।

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच हरिबाबू मुझे दो शब्द कहने को कहते हैं।

हरिबाबू आपने कह दिया बहुत है। मैं क्या कहू अब।

नहीं। कहो। आप भी कुछ तो बोलिये।

अपने ही स्थान पर खड़ी होती हू। कुछ भी कहने जैसी स्थिति में नहीं हू। फिर भी हिम्मत कर कहती हू—

प्रिय भाईयो, आदरणीय हरिबाबूजी, वैसे राजनीति मेरा क्षेत्र नहीं है लेकिन समाज के कमजोर वर्ग की समस्याओं को जितना जल्दी सुलझाया जाय मेरी हार्दिक इच्छा रहती है। मुझे लगता है इस काम के लिये जब तक हम सरकार में शामिल नहीं होते उसका हल नहीं निकाला जा सकता। आपके क्षेत्र में पानी की कोई समस्या नहीं है। राज्य सरकार ने आपके वीरनगर में किसी प्रकार के उद्योग लगाने के लिये कभी नहीं सोचा। मैं चाहती हू वीरनगर प्रान्त का बड़ा औद्योगिक केन्द्र बने। श्रेयास सूटिंग्स के मालिक श्रेयास बाबू यहीं बैठे हैं मैं उनसे प्रार्थना करती हू कि कवल्स का बहुत बड़ा कारखाना जो शुरू करने जा रहे हैं उसे वीरनगर में ही लगायें जिससे वहा के लोगों को अधिक से अधिक रोजगार मुहैया कराया जाकर उनके जीवन में हम खुशहाली ला सकें।

तालियों की गड़गड़ाहट होती है। थोड़ा रुक कर अपनी बात जारी रखती हू—

मुख्यमन्त्रीजी, हरिबाबूजी चाहते हैं मैं आपके क्षेत्र से चुनाव लडूं। इस पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। आवश्यकता है आप, वीरनगर के सभी नागरिक जो हमारी पार्टी को हमेशा सहयोग देते आये हैं वैसा ही प्रेम बनाये रखें और पार्टी की अच्छी छवि आपने बना रखी है उसमें चार चांद लगाएं। आपको इस समय मैं इतना ही कहना चाहती हूं। आपके साथ हमेशा मिलना-जुलना बना रहेगा। आपका सहयोग, आशीर्वाद मिलता रहेगा। मेरा विश्वास है। धन्यवाद।

मेरे भाषण की समाप्ति पर फिर जोरदार तालियाँ बजाई गई। उपस्थित लोग आपस में मेरे भाषण की प्रशंसा कर रहे थे। वीरनगर के पार्टी मुखिया ने खड़े होकर मुझे हरिबाबू को सहयोग का आश्वासन दिया। सब लोगों के लिये चाय-नाश्ते की व्यवस्था थी। उसके बाद हम तीनों उठकर बाहर निकल जाते हैं। किसी ने मुझे चलते रोककर पूछा—

साहिलाजी वीरनगर कब पधार रही हैं।

यह तो आप बताईये कब बुला रहे हैं आप।

हरिबाबू जी, साहिलाजी, को लेकर वीरनगर कब आ रहे हैं।

आप कहते हैं तो मैं आ जाऊँगा। पर साहिलाजी को आप खुद लिवा ले जाएँ वह अच्छा रहेगा। आपके क्षेत्र की उम्मीदवार हैं आपका पूरा अधिकार है उन पर।

वह तो सही कह रहे हैं आप। पर चुनाव अभियान के मुहूत पर आना ही होगा।

मुहूत पर तो भाई रघुनाथजी मुख्यमन्त्रीजी भी आयेंगे। वह चिन्ता नहीं करें आप। अच्छा अभी हम लोग चलेंगे। सी० एम० साहब के जाना है। वहां भी एक मीटिंग रखी है। वीरनगर जल्दी ही आयेंगे।

हरिबाबू। नमस्कार।

अच्छा, चलते हैं।

☼

सोलह

हमारी कार मुख्यमन्त्रीजी के निवास पर जा रुकती। सुरक्षा कर्मचारियों को कह कर तीनों मेहमान कक्ष में जा बैठते हैं। हरिबाबू हमारे बीच से उठ कर अन्दर चले जाते हैं। कुछ समय बाद नीचे दीजी, हरिबाबू लौटते हैं। मैं और श्रेयासजी उनके सम्मान में खड़े हो जाते हैं।

बैठिये, आप लोग। क्षमा करना राज्यपालजी के यहां अधिक समय लग गया इसलिए पार्टी दफ्तर नहीं आ सका। वीरनगर के लोगों से आप लोगों की बातचीत हो गई।

जी हां। वहां के लोग अच्छे लगे। उनमें पार्टी के लिये पूरी निष्ठा है।

होगी क्यों नहीं। हरिबाबू के पढ़ाये हुए लोग हैं सारे। यह अवसर वहाँ जाते भी रहते हैं। श्रेयासजी आपके काम की प्रगति कैसी है।

अच्छी है। मशीनों के आर्डर्स दे दिये हैं। बाजार में जारी किये सारे शेयर्स भी बिक गये। जमीन का मामला अभी पूरा नहीं हुआ है। उस क्षेत्र के लोग विरोध कर रहे हैं कि वहां फैक्टरी नहीं लगाई जाये।

हां मेरे पास भी बड़ी शिकायतें आई हैं। पर मैं भी यों ही देख रहा था। हरिबाबू इनकी जमीन वाली समस्या को भी देखिये जरा।

वह तो कठिन लगता है मुझे। श्रेयासजी एक काम क्यों नहीं करें आप। आपका केबल्स का कारखाना वीरनगर में ही क्यों नहीं लगा लेते। वहां सब तरह की सुविधाएँ हैं। राज्य सरकार वहां कारखाना लगाने पर अनुदान भी देगी आपको।

वह तो सही है। लेकिन दूर पड़ जायेगा। शहर जैसी सुविधाएँ तो है नहीं वहां।

आपके कारखाने के लोग ही तो रहेंगे। सी० एम० साहब के आशीर्वाद से कौड़ियों में जमीन भी मिल जायेगी वहां पर।

हरिबाबू आपकी बात से सहमत हूं मैं। उस क्षेत्र के औद्योगिक विकास के लिये जरूरी भी है। आप तो श्रेयांसजी वहीं का मानस बना लें। सरकार

की ओर से जो भी सहायता बन पड़ेगी पूरी करवायेंगे। इस बात को आप साहिलाजी के चुनाव को ध्यान में रखकर भी सोचें। जमीन सरकार की ओर से ही दिलवा देंगे आप। बोलिये और क्या चाहते हैं हमसे आप।

आपका आदेश है। पर मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा।

समझ में नहीं आने जैसी कोई बात नहीं है। साहिलाजी के चुनाव क्षेत्र के विकास के लिये इतना तो आप कर ही सकते हैं। पार्टी कार्यालय की मीटिंग में साहिलाजी ने आपको सम्बोधित करते हुए नये कारखाने को वहां लगाने की घोषणा भी कर दी थी।

मुझे स्वीकार है। कोई परेशानियाँ आयें तो आपको ही संभालनी होंगी।

आप किसी प्रकार की चिंता नहीं करें। हरिबाबू आप जितना जल्दी सम्भव हो इनकी आवश्यकतानुसार जमीन की व्यवस्था करा दें।

जी। मैं देख लूंगा।

हरिबाबू। आपका विभाग के अधिकारी पूरा सहयोग नहीं कर रहे।

धैर्य रखिये थोड़ा। वहाँ के मनेजिंग डायरेक्टर को बदलने के लिए सी० एम० साहब से कह भी चुका हूं। जैसे ही उसका तबादला होगा सारी समस्याएँ हल हो जायेंगी।

आपने मुझे कई चिंताओं से मुक्त कर दिया है।

वह तो हमारा कर्त्तव्य है। प्रदेश की प्रगति में आप उद्योगपतियों का सहयोग भी तो हम चाहते हैं। यही क्या कम है हमारी बात रखकर आप हमारा सम्मान ही बढ़ा देते हैं। सी० एम० साहब वीरनगर कब चलने का सोचा है आपने। साहिलाजी के चुनाव अभियान का मुहूर्त भी करना है।

चले चलेंगे। आप श्रेयासजी पहले तैयारियाँ तो कर लें। आप जब सकेत करेंगे चल चलेंगे।

साहिलाजी के चित्र के साथ फोटोज वाले पोस्टर्स भी आज कल में छपकर आने वाले हैं। बड़े बैनर्स बनाने वाले ठेकेदार को कह दिया है। वह सीधे वीरनगर मोहसिनजी के यहां पहुंचवा देगा। प्रेस में इनका जीवन परिचय, पार्टी में की गई सेवाओं के एक-एक पेज के विज्ञापन सभी समाचार पत्रों को भेज जा चुके हैं। पूरे समय राज्य प्रकाशित किये जायेंगे। साहिलाजी आप द्वारा की गई प्रेस कांफ्रेंस के समाचार देख लिये न मन। अच्छा बोली हैं

आप। कुछ और खुलकर, पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कहें। सारे पत्रों ने अच्छा कवरेज दिया है। कल देहली से पार्टी प्रभारी महामन्त्रीजी भी आ रहे हैं। उनसे भी साहिलाजी को मिलवाना है। मेरे पर उनका पूरा स्नेह है। हम दो कोई दो साल तक स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय जेल मे साथ-साथ ही थे। उस प्रेम को आज भी वैसा ही बनाये हुए हैं।

नौचन्दीबाबूजी आपका प्रताप कहा नही फैला है। अच्छी तरह मालूम है हम। पी० एम० हाऊस मे ज्यादातर लोग आपको नजदीक से जानते हैं। इससे बडी बात हो भी क्या सकती है।

अजी, पी० एम० साहब की क्या कहू। जब मैं हाईकमान मे था अक्सर बुला लिया करते घण्टो बैठे विभिन्न राज्यो पर चर्चा किया करते। मेरे पर बडा विश्वास है उनका। गये बार अपने राज्य मे मुख्यमन्त्री किसे बनायें समस्या खडी हो गई थी। कहने लगे नौचन्दी बाबू आप ही सभाले मुझे कुछ समझ मे नही आ रहा। मैंने भी हसते-हसते जिम्मेदारी उठा ली। हरिबाबू थकान अनुभव हो रही है। अन्दर जाकर व्यवस्था करो। हम आ ही रहे है। साहिला तुम भी हाथ बटा दो जरा हरिबाबू का। तो श्रेयासजी सब सोच लिया ना आपने।

जी हा। सोचना क्या है। आपका आदेश सिर आखो पर रखकर चलता हू मैं तो।

फिर ऐसा करो एक बार वीरनगर हो आओ हरिबाबू के साथ। वहा जमीन आदि देख आओ। मुझे खुशी है। सब शुभ ही होगा। आपके काम की एक मुख्य बात और बता दें। आपकी कम्पनी के उत्पादन का बडा हिस्सा राज्य सरकार ही खरीद लेगी। हम कह देंगे विभिन्न विभागो को। अब तो प्रसन्न हैं आप। आपको मार्केट ढूढने की परेशानी भी नही करनी होगी।

आपने तो मेरे मुंह की बात छीन ली। बडे कृपालु हैं आप।

हमने उद्योग नही लगाये तो क्या आपकी परेशानियो को तो भली प्रकार समझते हैं हम। आप लोगो की परेशानी, असुविधाओ के लिए हम पहले से ही चिन्ता रहती है। आओ अन्दर चलें। वही बैठकर साहिलाजी के चुनाव की रणनीति पर विचार कर लेंगे।

हम दोनो उठ मुख्यमन्त्री के कमरे मे जा बैठते हैं। उधर हरिबाबू, साहिला के भोजन-पानी की पूरी व्यवस्था कर डाली है।

लो साहिला हमारी ओर से पियो आज तुम।

आप लीजिए ना।

नहीं। पहले तुम लो। हमारे मन्त्रीमण्डल की भावी मन्त्री तुम्हीं हो। आप लें श्रेयासजी और हरियाबू यह आपका ग्लास। आज तो जमकर पियो आप लोग। बहुत प्रसन्न हूं आज। साहिला जी की प्रेस कान्फ्रेंस में इन्होंने वीरनगर क्षेत्र के विकास, वहां के लोगों की स्थिति को सुधारने के लिये जो भी कहा पढ़कर भला लगा मुझे। इनमें नेतृत्व के सारे गुण हैं। मुझे आशा है सारे कामों की जिम्मेदारी से पूरा कर लेंगी यह।

नीच दो बाबूजी। बाकी दो निर्वाचन क्षेत्रों के लिये पार्टी हाईकमान कितना पैसा भेज रहा है।

हरियाबू। पार्टी हाईकमान कुछ भी नहीं दे पायेगा। आपको हम ही सारी व्यवस्था करनी होगी। वहाँ कौन सा रुपया रखा हुआ है। पी० एम० हाऊस से गये दिना बात हो गई थी मेरी। दो उम्मीदवारों के लिये थोड़ा बहुत तो कर दिया है मैंने और भी हो जायेगा। धैर्य रखिये। आप समय बलवान होता है। उनका भी कुछ तो होगा ही। श्रेयासजी जैसे और भी कई लोग हैं मेरी नजर में। चिन्ता मत करो। लो साहिला एक ग्लास और बना दो हमारे लिये।

लाईये। मुझे दें।

लाओ। क्या ग्लास बनाया है तुमने। मेरे पास आकर बैठ जाओ। तुम पास होती हो दिमाग तेजी से काम करने लगता है। सारे शरीर में बिजली सी दौड़ जाती है।

कहते नीच दो जा मेरी गले में बाहें डाल दी। उन्हें हरियाबू, श्रेयासजी का ध्यान ही नहीं रहा। मेरे सकोच को समझते बोले—

साहिला। यह दोनों हमसे अलग लोग तो हैं नहीं। अपने घर के ही लोग हैं। लो एक ग्लास और बना दो फिर आज का राशन पूरा हो जायेगा हमारा।

यह लीजिये।

लाओ, लाओ।

मेरे ग्लास थाम हाथ को दोनों हाथों में दबा पीने लगे। फिर एक हाथ का बोझ मेरे कन्धे वक्षस्थल तक ले आये। बोले—

कितनी कोमल, चन्दा सी देह है तुम्हारी। हरिबाबू कभी छूकर तो देखो शरीर को। पूरे शरीर में आग लग जावेगी तुम्हारे। साहिला हम तो हिल भी नही सकते इतनी पिला दी तुमने। तुम ही पास आ जाओ ना।

मेरी ओर झुकते मेरे कंधे पर अपने चेहरे को रख दिया था। लगातार चुम्बन देते रहे।

सारे दिन सरकार के कामो से जी घबरा जाता है। सुबह उठने से सोने तक रोज एक सी जिन्दगी। सो खाना खाएँ अब।

उनके हाथ शरीर उन पर हुए शराब के प्रभाव के कारण उनके वश में नही थे। पीछे लगी मसनद पर पसर जाते हैं।

आप भोजन तो करिये।

नही। कौन सा भोजन। पीने के बाद भी कोई भोजन करना है क्या। हम भूख नही है। आप लोग करें।

हरिबाबू, मैं श्रेयासजी धीरे-धीरे भोजन करने लगे हैं। उधर नीचन्दी बाबू मसनद पर लेटे-लेटे ही खर्राटे भरने लगते है।

हरिबाबू कितना समय हो गया।

साढे ग्यारह बज रहे हैं।

अब चलना चाहिये।

ठहरिये श्रेयासजी। नीचन्दीजी को उनके बेडरूम में सुला आते है।

हरिबाबू और श्रेयासजी मिलकर नीचन्दीजी को सहारा दे उठाकर पास के कमरे में जा सुला आते हैं।

हरिबाबू। नीचन्दीजी का परिवार यहा नही रहता है क्या।

परिवार में दो लडकिया है। उनकी शादी कर ही चुके है। वे ससुराल मे रहती हैं। एक लडका विदेश में व्यवसाय करता है। साल में कभी एक-दो बार मुश्किल से यहा आता है। उसने वहा शादी कर ली है। वही प्रसन्न है वह। इस प्रकार नीचन्दी बाबूजी समझो अकेले ही रहते है। इनके लडके का लम्बा-चौडा कारोबार है विदेश में। उसी में लगा रहता है वह। आईये, अब हम चल सकते है।

तीनो बाहर आ कार में बैठते हैं। तेज सर्दी की वजह से सुरक्षा कर्मचारियो ने दरवाजे के पास छोटा सा अलाव जला रखा है और बैठे ताप रहे हैं।



सत्रह

मुख्यमन्त्री निवास से कारों, सुरक्षाकर्मियों, पीछे पत्रकारों की गाड़ियों का काफिला वीरनगर की ओर चल पड़ा था। मुख्यमन्त्री नीचन्दीजी और मैं एक ही कार मे थे। आगे पीछे कुल मिलाकर कोई पन्द्रह सोलह गाड़िया थी। नीचन्दीजी खूब प्रसन्न थे। नगर के प्रमुख मार्गों जहां से हमारी गाड़िया निकल रही थी। आवागमन को बिल्कुल रोक लिया गया था। तेज गति से गाड़ियो का काफिला जा रहा था। नीचन्दीजी बोले—

हरिबाबू, श्रेयासजी तीन दिन से वीरनगर म पड़ाव डाले पड़े है। हरिबाबू ने वहाँ के नागरिको के साथ मिलकर श्रेयासजी के कारखाने की जमीन का काम करवा दिया था। तुम्हारे कारण ही वीरनगर म श्रेयासजी केबल्स वाला कारखाना लगाने को तैयार हो गये। वरना उस दिन जो बातें हुई थी बेमन से ही हा-ना कर रहे थे वे।

आपने भी कितने कम समय म सरकार की ओर से जमीन दिलवा दी उनको। यहाँ शहर मे जिस जमीन को श्रेयास बाबू ले रहे थे कई प्रकार की दिक्कतें और झंझट थे उसमे। मैं समझती हू अभी चार-छ महीने तक तो जमीन नही ले पाते वे। आपने तो कौडियो के भाव दिलवा दी उनको।

करते भी क्या। तुम्हारे लिये जितना भी कर पायें कम ही लगता है मुझको। तुम्हारे विधानसभा म आ जाने से मुझे बडी सहायता मिल जायेगी। तुम मेरी शक्ति बनो। फिर देखो कितनी सहजता से पार्टी के अन्दर और बाहर के विरोधियो से निपट लेता हू मैं। यह देखो इस गांव से ही वीरनगर विधान सभा क्षेत्र प्रारम्भ हो जाता है।

कार की खिड़की से बाहर झाककर देखती हू। सड़क के दोनो ओर हाथ जोड़े मेरे और नीचन्दीजी के बड़े रंगीन पोस्टर, सड़क के दोनो ओर से बांधे गये बड़े-बड़े बैनर हवा म झूल रहे है। कारों का काफिला कुछ धीमा पड़ता है। नगर म घुसते ही सड़क के दोनो ओर खड़े नागरिक नीचन्दी बाबू अमर रहे-अमर रहे के गगनभेदी नारे लगाने लगते है। कुछ आगे वन विभाग द्वार पर लोगों ने गाड़ी रोक ली है। नीचन्दीजी कार से बाहर निकलते है। मुझे भी

बाहर मान का सजन करते हैं। नागरिकों ने मुख्यमन्त्री को मालाओं से लाद दिया है। कुछ ने मेरे हाथों में भी मालाएँ दी हैं। नौकरों बाबू कहते हैं--

मोहसिन भाई। आप साहिलाजी हैं। इधर क्षेत्र से पार्टी ने इनको विधान सभा का टिकट दिया है।

जी। हुजूर। हरिबाबू ने बताया यहाँ के लोगों को। सेठ श्यामजी भी यहीं हैं। साहिलाजी को इधर टिकट दिया उधर इतना बड़ा कारखाना भी लग रहा है हमारे यहाँ। इनके आ जाने से तो हमारे क्षेत्र की तरक्की होनी हुम लग गया है।

यहाँ से साहिलाजी ने लम्बी चौड़ी योजनाएँ आपके बारनगर के लिए मेरे सामने रख दी हैं। आप लोगों के विकास में इनकी बड़ी दिलचस्पी है। आपका काम है जोरदार वोटों से जिताएँ इनको।

हम तो आपके हुक्म के तावेदार हैं। जब से चुनाव शुरू हुए हैं आपकी पार्टी का आदमी जीतता रहेगा।

चलो। डाक बंगले चलकर बैठेंगे। मीटिंग कितने बजे रखी है।

मीटिंग तो ग्यारह बजे होगी। उसके पहिले तो फैक्ट्री का शिलान्यास करना है आपको। लो हरिबाबू, श्यामजी भी आ गये।

नमस्कार, मुख्यमन्त्री साहब।

नमस्कार भाई। और सब तैयारियाँ हो गईं।

सब काम पूरा हो गया। मैं जरा पास के गाँव वालों से मिलने चला गया था। साहिलाजी के बैनर्स, पोस्टर्स पहुँचे हैं या नहीं जानकारी लेने चला गया था। आईये डाक बंगले चलकर बैठते हैं। मोहसिन भाई मेरी गाड़ी में बैठ आप।

गाड़ियों का काफिला डाक बंगले की ओर चल पड़ता है।

हरिबाबू कैसा माहौल है यहाँ का।

वैसे तो ठीक है। पर उधर गाँवों में रामबलि पाण्डेय के लोग भी डेरा डालकर पड़े हैं। उनसे भी मिला था। कह रहे थे पाण्डेयजी ने साहिलाजी के प्रचार कार्य के लिये भिजवाया है उनको।

उन लोगों से सावधान रहना। धूर्त और बदमाश लोग हैं सारे के सारे। कौन-कौन लोग थे।

ग्रौर तो खास नही। रामावतार खुद भी पडाव डाले पडा है। चुनाव के समय गडबड जरूर करेगा वह।

उसकी चिन्ता मत करो। गाँव वाले हत्याकाण्ड मे मुख्य नाम है उसका। चुनावो तक के लिये ग्र दर करवा देते है उसको। मजिस्ट्रेट से कहलवा देना रिमाण्ड पर ही रख उसे। जमानत भी मत होने दो। फिर देखते हैं क्या कर पाते हैं उनके लोग। उसके दूसरे लोग गडबड करें तो एक सौ इक्यावन मे सबको ब द करवा दो।

तब ही काम चलेगा। इन लोगो का भरोसा नही कभी भी बलवा करवा सकते है गावो म।

सब समझ रहा हू तुम्हारी बात।

गाडियो का काफिला डाक बगले परिसर म जा रुकता है। वहाँ उपस्थित नागरिक पुलिस, कर्मचारी सतर्क हो जाते है। मुख्यमत्री जी की जय-जयकार होने लगती है। श्यामबाबू के साथ मानिक हाथ मे बडी बडी मालाएँ लेकर खडे हैं। श्यामबाबू सीढियाँ उतर आगे आते हैं। पहले मुख्यमत्री जी को माला पहिनाते है फिर मुझे बडा सा गुलदस्ता भेंट करते हैं। डाक बगले की बाहरी दीवारो पर मेरे, नौचन्दीजी के बडे-बडे चित्र, पोस्टर्स, बैनर्स लगे हुए हैं। गाव के प्रमुख जनप्रतिनिधि लोग वहा एकत्रित हैं। एक ग्रोर से नारो की ग्रावाज बुलद होती है--माहिलादेवी जिन्दाबाद जिन्दाबाद हमारी नेता - माहिला देवी।

ग्राग्रो ग्र दर चलकर बैठते हैं। मोहसिन भाई, रघुनाथजी ग्राप भी ग्र दर चले।

हम सब लोग बडे से मेहमान कक्ष म रखे सोफो पर जा बैठते है। मुख्यमत्रीजी ने ग्रपना चश्मा उतार धोती की लाग स साफ करने लगते है। मोहसिन भाइ जो इस क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्ता हैं उनकी ओर देखते पूछते हैं--

रामवलि के कितने लोग आये हुए है यहाँ ग्रब तक।

कोई पच्चीस-तीस सौ लोग तो होंगे ही साहब।

उन लोगो की किस प्रकार की गतिविधियाँ चल रही हैं। तोडफोड तो नही कर रहे है लोग।

तोडफोड तो नहीं कर रहे पर निदलीय उम्मीदवार के प्रचार म लगे हुए हैं। गाँव वालो को डरा धमका रहे हैं। दिन-रात जीपो म बन्दूकें लिए दम

गाव से उस गाव तक घूमते रहते हैं। साहिला जी के बैनर रात म तोड देते हैं। इनके खिलाफ दीवारो पर बेहूदा नारे लिख गये है।

अफसोस की बात है। रामबलि खुद भी आये है कभी गये दिना मे इधर।

नही साहब। उनका तो नही देखा हमने। शायद व सारी बातचीत उनके भतीज और शक्करसेन स फोन पर ही करते रहने है।

समझा। बाहर स एस० पी० साहब को बुलवाओ जरा।

मोहमिन जी खडे हो बाहर निकलते हैं। एस० पी० कमरे म प्रवेश करते है। नौच दी बाबू उन्ह पास बैठा को कहने है।

दयाल साहब। इस क्षत्र म कुख्यात तस्कर शक्करसेन के लोग अपना पडाव डाल पड ह। उन सब पर बसे ही कई मुकदमे चल रहे हैं। उन सबको चुनाव होने तक जेल में डलवा दें। कुछ बच जाये उन्ह एक सौ इक्यावन म बन्द करवा दें।

यस सर। अभी बीरनगर का एक चक्कर लगाकर आया हू। आप जिन लोगो के लिये कह रहे है सबको पहिचान लिया है मैंने। आप जैसा कह रहे है हो जायेगा, सर।

बस यही कहना था आपको। यहाँ पूरी शान्ति के साथ मतदान होना चाहिये। इसके लिये जो भी उचित समझें करे। पूरी जिम्मेदारी आपकी ही है। आप जाकर काम करें।

यस सर।

एस० पी० बाहर चले जात हैं। हरिबाबू की ओर देखत नौचन्दीनी पूछते हैं—

आज जिस फैक्ट्री का शिलान्यास करवा रहे ये वह काम पूरा हो गया।

सब पूरा है। आप फ्रेश हो लें। चाय नाश्ता कर लें वही चलना है सर। मैं जरा मालूम कर लेता हू। रघुनाथजी जिस जगह शिलान्यास होना है वहा लोगो की भीड जमा हो गई है क्या मालूम करें।

सर साहब वहा ता सुबह से मेला लगा हुआ है। शिलान्यास वाले स्थान के पास बानी हवेली म थ्रेयास केबल्स कारखाने के मॉडल को देखन मजमा लगा हुआ है।

अच्छा है। साहिलाजी आपका जमकर भाषण देना है वहाँ। हाँ, यह गले में सोने का इतना भारी हार डाल रखा है। जनता के बीच शोभा नहीं देना। उतार दें इसको।

इससे क्या होना है। साडी में छिप जायेगा यह तो। तब ठीक है। नौच दीजी चलें अब।

चलो।

हम सब बाहर निकल जाते हैं। गाडियों में बैठते हैं। कारों का काफिला चल पडता है। मुख्य सडक के दोनों ओर लोगों की भीड है। यहाँ के नागरिकों में उत्साह है। हमारा काफिला खुले मैदान में जा रुकता है। बडा सा मंच बना रखा है। उसी के पास शिला न्यास किये जाने वाले श्रेयास केबल्स का बडा संगमरमर का पत्थर लगा हुआ जिस रेशमी पर्दे से ढका हुआ है। गाडियों के रुकने के साथ ही सब लोग तेजी से कारों से उतरते हैं। मुख्यमंत्री जी के वहाँ तक पहुंचने के लिये सुरक्षा कर्मचारी रास्ता बनाते हैं। मंच से घोषणा होती है—

माननीय मुख्यमंत्रीजी वीरनगर पधारे। यहाँ के नागरिक उनका हार्दिक स्वागत करते हैं। मुख्यमंत्रीजी के अथक प्रयासों से हमारे क्षेत्र में प्रदेश का सबसे बडा तारों का कारखाना श्रेयास केबल्स लगाया जा रहा है। हमारे क्षेत्र से साहिला देवीजी चुनाव लड रही हैं। इन्हीं का संकल्प था हमारे नगर में यह कारखाना लगाया जाये।

मुख्यमंत्रीजी ने तालियों की गडगडाहट के बीच श्रेयास केबल्स का शिलान्यास किया। फिर तेजी से हरिबाबू, नौच दीजी, श्रेयासजी, मैं, मोहसिन भाई मंच पर चढ जाते हैं। सबने अपना स्थान लिया। माइक पर घोषणा होती है—

हमारे प्रदेश के मुख्यमन्त्रीजी आशीर्वाद के रूप में अपने विचार प्रकट करेंगे।

प्रिय वीरनगर के नागरिको भाईयो बहिनो। आप लोग राजधानी में लगातार मुझसे मिलते रहे आपके क्षेत्र के विकास पर चर्चा करते रहे हैं। राज्य सरकार ने आप द्वारा सुझाये कार्यों पर विचार किया और अनुभव किया कि यहाँ औद्योगिक विकास की जरूरत है। हमने उद्योगपति श्रेयासजी से उनके नये कारखाने को यहाँ लगाने का अनुरोध किया। मुझे खुशी है उन्होंने मेरी बात को रखा। आज एक वर्ष के अन्दर यह कारखाना काम

करना शुरू कर देगा। इससे आपके यहां के नागरिकों को रोजगार मिलेगा। इस अवसर में राज्य सरकार के दो बड़े उद्योग यहीं लगाये जायेंगे की घोषणा करता हूं। हमारी पार्टी ने साहिलाजी को आपकी सेवा के लिये यहां भेजा है। आप चुनाव में इन्हें प्रचण्ड बहुमत से जिताकर विधानसभा में भेजें। आपके वीरनगर से अब तक कोई भी नुमाईंदा मंत्री नहीं बना। मैं कोशिश करूंगा। आपका वोट को जोरदार ढंग से सरकार तक पहुंचाने के लिए साहिलाजी को मंत्रीपद भी दिया जाये। अब साहिलाजी दो शब्द कहेंगी—

आदरणीय मुख्यमन्त्रीजी, हरिबाबूजी, उद्योगपति श्रेयासजी और प्रिय नागरिको। आपकी सेवा का संकल्प लेकर साहस कर पाई हूं कि वीरनगर से विधानसभा का उपचुनाव लड़ूं। आप हमारे मुख्यमन्त्रीजी के हाथ मजबूत करें। आप जब भी मुझे याद करेंगे सारे काम छोड़कर आपकी सेवा में चली आऊंगी। आपके इस क्षेत्र में बड़े अस्पताल की आवश्यकता है आपके ही साथी मोहसिनजी ने मुझे बताया। मैं आशा करती हूं जल्दी ही आपके यहां बड़ा अस्पताल सरकार बनायेगी। आपसे मेरी प्रार्थना है अपना अमूल्य वोट देकर मुझे विधान सभा में भिजवाएं। धन्यवाद।

तालियों की गड़गड़ाहट में अपना भाषण समाप्त करती हूं।

हम सब मंच से उतर कारों में आ बैठते हैं। फिर कारों का काफिला डाक बंगले की ओर चल पड़ता है। हरिबाबू गौवदीजी से कहते हैं—

आज गांव वालों ने आपके शाम के भोजन की व्यवस्था यहीं की है आज हम सब को यहीं रोकना चाहते हैं यहां के लोग।

हरिबाबू। मेरा रुकना तो सम्भव नहीं होगा। भोजन की तकलीफ भी मत दो। हल्का नाश्ता कर लेते हैं। फिर चलेंगे।

मोहसिन भाई बोलते हैं—हुजूर। एक दिन तो रुकते आप।

आज तो कठिन रहेगा। अब तो आते-जाते ही रहेंगे। हां, देखो रामावतार के लोगों से उलझने की जरूरत नहीं है। उनकी सूचना राजधानी में देते रहो। एस० पी० को कह दिया है मने सब ठीक कर देंगे व। मोहसिन भाई अब आप सब लोग चलें। थोड़ा आराम करना चाहता हूं। हरिबाबू पास पास कमरे में इन लोगों के साथ बैठकर यहां की समस्याओं का लिख लो। मैं साहिलाजी से बातचीत कर रहा हूं।

वहाँ के सब लोग उठ पास के कमरे म चले जाते हैं। मैं और मुखमन्त्री जी बचे हैं यहा। नौचन्दो जी के चेहरे पर थकान साफ दिखाई देता है। मेरी ग्रार दखने कहत हैं—

साहिला। तुमन जीत लिया हमको तो। शाम को रूकना तो नहा होगा मेरा। हरिबाबू, श्रेयासजी आते रहेंग। दरवाज को बन्द कर दो। थोडा आराम कर लें।

दरवाजा बन्द कर लौटती हू। नौचन्दो बाबू कहते हैं—मेरे पास आकर बैठो तुम।

सोफे पर उनके पास जा बैठती हू। मेरे हाथ को अपन हाथों म ले चूमने लगते है। हाथ को छोड उ होने दोनों बाहें मेरी कमर म फसा ली है। धीरे-धीरे हाथ को बढाते वक्षस्थल तक ले आये हैं।

उनके चेहरे पर काम भावना का वेग उभरता है। कहते हैं—

साहिना, तुम पास होती हो तो सारी थकान, परशानिया खत्म हो जाती हैं। कैसा गुदाज शरीर है तुम्हारा। सख्त वक्षस्थल पानी पानी कर डालता है मुझे।

आलिंगन मे कसकर जकड लिया है मुझे। थोडा मेरी ओर मुडो जरा।

मर कन्ध के पीछे हाथ डाल ब्लाउज के बटन दो-तीन बटन खोल डाले हैं उ होने। मने भी विशेष आपत्ति नही की। थरथराते होठो को मर वक्ष पर रख दिया है। चिहुकते कहते हैं—

साहिला और पास आओ। मेनका सा रूप और सुघड शरीर है तुम्हारा। यह गोलमपिड पागल कर डालेंगे मुझ।

कहते पूरे शरीर को मरे पर डाल देत हैं। हाँफत अस्फुट शब्दो म कहत हैं—

साहिला, मरा बस चले तो तुम जो कहो कर डालू मैं। तुम्ह कसा लग रहा है।

बहुत परशान कर डालते हैं आप तो मुझे। आपका बुढापा कही नहीं झलकता। साठ स ऊपर तो हैं ही आप।

साहिला पुराना घी पाया है। साठा-पाठा की कहावत तो सुना है ना तुमन।

वही देख रही हू। आपके बाजुओं म गजब की ताकत है अभी तो।

तो तुमने क्या समझा कमजोर हू मैं।

मैंने यह तो नहीं कहा आपको।

परेशान तो तुम कर डालती हो। तुम्हारे चेहरे पर झूमती बालों की लटें, कमर के नीचे तक झूलते बाल गजब जादू कर डालते ह मुझ पर। आज रात तो शहर चलकर मेरे साथ ही रहना तुम। कई दिन हुए तुम्हारे रूप के रस को पिये।

ऐसा क्या कह रहे हैं। अभी क्या कर रहे है आप।

अह। एसे पूरा आनन्द नहीं आता। यहा का वातावरण इतना स्वतन्त्र कहा है। यहां तो कहो जी बहला रहे हैं हम अठखेलियां ही समझो बस। जी भरकर तुम्हारा रूपमाधुर्य तो पूरी आजादी के साथ ही हो सकता है। इसमे दो शरीरों का एक हो जाना कहा है।

बाहर से किसी ने घण्टी बजाई है। नीचे दी बाबू कहते हैं—

कौन सिरदर्द आ गया देखना तो।

सोफे से खडी हो दरवाजा खोलती हू। हरिबाबू हैं।

आईये। हरिबाबू।

क्या हो रहा है साहिला।

रामवलि पाण्डेय के लोगों की खुराफातों की बात कर रहे थे। हरिबाबू रामवलि के खिलाफ वाला आन्दोलन तो ठण्डा पड गया दिखता है।

नहीं। नहीं। सब चल रहा है।

हरिबाबू, अब म और साहिला तो शहर जा रहे हैं। आप श्रीयासजी को लेकर आते रहना।

शाम को रूकते तो अच्छा रहता। सारे गाव वाले पडोसी गाव वालों को लेकर आ रहे ह।

वह सब आप ही सम्भाल लेना। दो मीटिंग्स रखी हैं सचिवालय मे। उसम शामिल होना जरूरी है।

आप चाहे जायें। साहिलाजी को यहां रूकना चाहिये। आखिर इनका चुनाव क्षेत्र है। नागरिको, मतदाताओं से मिलना जरूरी है इनका।

ठीक है इन्हें रोक लो। अभी कुछ विश्राम करके मैं तो जाऊंगा। आप लोग कब तक आओगे।

अब तो कल ही आना होगा।

ठीक है। आप लोग अपना काम करें। मैं आराम कर लेता हूं। ☼

अठारह

मुख्यमन्त्री निवास पर वीरनगर से कोई पचास-साठ जीपों, बसों में लोग इकट्ठे होकर आये हैं। काफिले में सबसे आगे खुली जीप में साहिला, हरिबाबू, पीछे चलती कार में श्रेयासजी हैं। मुख्यमन्त्री निवास के सुरक्षा कर्मचारियों ने सारी बसों, ट्रकों को बाहर सड़क पर ही रोक लिया है। केवल साहिला, हरिबाबू, श्रेयासजी ही अन्दर आ पाये हैं। हरिबाबू ने बरामदे में जा घण्टी बजाई है। नौच दी बाबूजी स्वयं दरवाजा खोलते हैं।

बधाई हो साहिला। कोई सैंतीस हजार मतों से हराया है तुमने शंकरसेन को। उसे भी छठी का दूध याद आ गया होगा। मोहसिन भाई आपका काम बड़ा अच्छा रहा।

अच्छा हुआ है साहब। वीरनगर में लोग आपसे मिलने और मुबारकबाद देने आये हैं।

अच्छी बात है। मेरी ओर से सबको बधाई दें।

हुजूर आपसे सबकी गुजारिश हैं साहिलाजी को मन्त्रीमण्डल में शामिल करें। आपने वायदा भी किया है हमारे लोगों से।

वह भी करेंगे। थोड़ा इन्तजार करिये आप। अगले कुछ दिनों में आपको मालूम हो जायेगा। एक दो दिनों में विचार करूंगा। आप लोग अन्दर चल कर बैठें। मुंह मीठा करें।

सब लोग सी० एम० साहब की अगुवाई में अन्दर बड़े हॉल में जा बैठते हैं। कार्यकर्ता लोग स्टील की प्लेटों में मिठाईयां लेकर आये हैं। नौच दीजी ने सबसे पहिले मिठाई का बड़ा सा टुकड़ा ले साहिला को अपने हाथों से खिलाया, फिर हरिबाबू की पीठ थपथपाते कहते हैं—

हरिबाबू को वहां का चुनाव प्रभारी बनाना जरूरी था। रामबलि के गुण्डों को पूरे क्षेत्र में फटकने तक नहीं दिया तुमने। गजब की नाकेबन्दी कर डाली तुमने। मान गया तुमको हरिबाबू।

नौचदीबाबूजी आप दो बार ही तो आये हैं वीरनगर फिर इतना सब कम मालूम हो गया आपको। कोई इन्द्रजाल के जादू से देखते रहे थे क्या वे।

इन्द्रजाल का जादू ही समझो तुम्हारी, साहिला री, रामबलि के गुण्डों को खदेड़ने की सारी गतिविधियों की रोज रात को यही घर म बठकर वीडियो फिल्म देखता रहा हू। वीरनगर म हुई छोटी से छोटी घटनाओ के समाचार विडियो फिल्म आती रही है मेरे पास।

आप तो ऊची चीज है। कमाल है।

हरिबाबू प्रदेश का शासन चलाते हैं हम। इतना ध्यान नही रखग तो एक दिन म पटरा बैठ जायगा हमारा। आप लोग इस काम को जल्दी पूरा करो मुझे गवनर साहब के यहा अगले दस मिनिट म पहुचना है।

हम क्या करना है आप जायें। हम लोग यही बैठे है।

आप भले हो बैठें मुझे देर लग सकती है। वहाँ स लौटने म।

जैसा उचित समझे आप। फिर हो आयें आप।

ठीक है। तो मैं चलता हू। साहिला तुम भी चलो मरे साथ। गवनर साहब से मिलवा देंगे तुम्हे भी।

बहुत थकी हुई हू आप हो हो आयें।

अरे, चलो भी जरूरी बातचीत करनी है तुम्हार मामले मे ही।

माहमिन भाई, हरिबाबू, श्यामजी सब मुझे सी० एम० के साथ जाने को कहते हैं। सबसे विदा ले नौचन्दीबाबूजी के साथ बाहर खडी कार मे जा बैठती हू। आगे सुरक्षा कमचारियो की गाडी, फिर हमारी कार बाहर खडी बसा, लोगो से बचती-निकलती है। नौचन्दीजी की गाडी को देख लोग जिन्दाबाद-जिन्दाबाद के नारे लगाने लगे हैं। उत्तर मे हाथ हिलाकर सबका अभिवादन करते हैं। कुछ ही क्षणो म फर्राटे से गाडी मुख्य माग पर आ गई नौचन्दी बाबू कहते है—

यहा रुकता तो साथ सिर ही खा जाते मेरा। यहा साथ तुम्हे साथ ले आया।

गवनर साहब के ज्यादा देर लगगा क्या।

उनके यहा जा कौन रहा है। सकिट हाऊस चल रहे है। वहीं बठकर बात करेंगे तुमस।

तेज गति स सड़क पर दौडती गाडिया सकिट हाऊस पहाते म जा रुकती हैं। नौचन्दीबाबू और मैं गाडी से उतर मुख्यमन्त्री के आरक्षित कमरे म चल

जात हैं। पूरा सर्किट हाकुम हरकत मे आ गया है। मुख्यमन्त्री के ड्राईवर ने कुछ फाईलो के बस्त, अटैची ला दी ह। कमरे मे घुसते है। नौचन्दीबाबू ने कमरे को अन्दर से ब द कर लिया है। वहा टबुल पर भोजन आदि की व्यवस्था है। शानदार कमर, कीमती झाडफानूस छत से लटक रहा है। खुशबूदार वातानुकूलित कमरा। मेरा हाथ खीचते पलग पर बिठाते है। खुद भी जूतिया उतार पलग पर पसर जात हैं। मेरी ओर आखें गडाते कहते हैं—

कहो साहिला कैसी रही हमारी योजना। उस टटपू जिये मिल वाले की नौकरी कोई तुम्हारे लायक है। तुम्हारे लिये ऐसे आलीशान, शानदार महल होन चाहिय। लो अब देर नही करो पास आ जाओ। हमारी देशी आशा की नई बोतल खोलो, दो पेग तयार करो। आज मैं जी भरकर खुश हू। पहिले पिलाओ आशा फिर तुम्हारी जवानी का रस भी छककर पियेंगे आज। मेरे मत्रीमण्डल की सबसे प्रभावशाली मत्री बनाने जा रहा हू तुम्ह। मेरे साथ प्रदेश पर राज करोगी तुम।

आप सब कामा मे बहुत जल्दी करते हैं। वीरनगर के लोगो से मिल भी नहा पाई मैं। बेचारे कितन लोग वहा से बसा, ट्रको, ट्रैक्टरो मे भरकर जुलूस के रूप म आये थे आपके यहाँ।

साहिला बहुत भोली हो तुम। जो लोग आये थे अब वे तुम्हारे आगे-पीछे हमेशा बने रहगे। अगले चुनावो तक तुम्हें ज्यादा मिलने की कोई जरूरत नहीं उनसे। लो एक पेग और दो जल्दी। वीरनगर तुम्हारा क्षेत्र है यह गलत नहा। पर एक दो दिन म मत्री पद की शपथ लेते ही पूरे प्रदेश की मत्री हो जाओगी तुम इस बात को क्यो भूल रही हो। जमकर राज करो। लो मेरे हाथ स पिओ आज तो।

और नौचन्दीजी ने मुझे अपन पास खीचते, बाहो म लिपटा लिया था और होठो पर ग्लास लगा दिया था।

देर मत करो। ग्लास खाली करो। तुम्हारे लिये अगला ग्लास मैं बनाता हू।

बहुत तेज और तल्ख है यह।

तेज तो होगी ही यह, तुम खुद भी तो कितनी गम हो भूल क्या जानी हो यह। लो इस ग्लास को भी खत्म करो।

और नही नौचन्दी बाबू।

नहीं क्या साहिला भ्राज तो जितनी पियो कम ही होगी। तुम्हारी नई जिन्दगी का पहिला सुनहरा दिन है।

मेरे को पूरा ग्लास पिला उन्होंने बोतल उठा मुंह में लगा ली और देखते देखते गटगट करते खाली कर फर्श पर बिछे कीमती गलीचे पर फेंक दी। उन पर तेज नशा हावी हो रहा था। बोले—

दूसरी बोतल खोलो साहिला।

अब ज्यादा नहीं, बहुत हो गया।

तुम क्या सोच रही हो हम नशा हो गया है। अभी तो पी ही कहां है हमने। लाओ जल्दी लाओ।

लडखडाते उठ पास टेबुल के निचले हिस्से में रखी बोतल उठा लाती हूं। उसका ढक्कन नहीं खुल रहा मुझसे मुझे लग रहा था मेरा शरीर नियन्त्रण में नहीं था मेरे। मेरी और घूरते पूछते हैं—

लाओ मुझे दो तुमसे नहीं खुलेगा।

मेरे हाथ से झपटते से बोतल छीन मुंह में दबाकर जोर से घुमाते उन्होंने खोल डाला था।

छोडो ग्लास का क्या करेंगे। मेरे पास आओ।

मैं उनके पास पलंग पर जा बैठी थी। मेरे लिये बैठ पाना भी कठिन लग रहा था। लेट जाती हूं।

यह ठीक है। लेट जाओ तुम। लेटे लेटे ही पियो।

और उन्होंने फिर मेरे मुंह पर बोतल लगा दी थी। मैंने एक घूंट भी नहीं लिया।

क्या कर रही हो दो-चार घूंट तो और लो।

नहीं। आप चाहो तो लो। मेरे में हिम्मत नहीं और पीने की।

और उन्होंने चौथाई बोतल से ज्यादा एक बार में ही गले के नीचे उड़ेल ली थी और उस फर्श पर फेंकते मेरे शरीर पर झपट पड़े।

साहिला। क्या सुन्दर नाम है तुम्हारा। जैसा नाम वैसा शरीर भी।

लड़खड़ाते हाथों से एक-एक कर मेरे सारे कपड़े उतार फर्श के कालीन पर डाल दिये थे। मैं लगभग बेसुध सी हो रही थी। मुझे हल्का-हल्का ध्यान है। मेरे पूरे शरीर से खेलते रहे थे। बीच-बीच में मेरे नाम की आवाजें मुझे सुनाई देती रही थीं।

उसके बाद मुझे याद नहीं कब मैं नशे की हालत में होश खो बैठी थी। फिर भी जरूर लगता रहा था वे मेरे शरीर से खेले जा रहे थे।

उन्नीस

सुबह जल्दी मेरी नींद खुल गई थी। बाथरूम में जा स्नान आदि से निपट फिर बिस्तर पर जा बैठी थी। नौचन्दी बाबू को झिंझोड़कर जगाती हूं। सामने दीवार घड़ी में आठ से अधिक का समय हो गया है। नौचन्दीजी बड़बड़ाते स्वर में कहते हैं—

सोने दो, अभी तो रात बाकी है। क्यों जगा रही हो।

उठिये भी। नौ बजने वाले हैं। रात तो बीत गई।

रात को भी छोड़ो। तुम्हारा नशा तो नहीं उतरा है ना अभी तक। उठो तैयार हो जाओ। चलेंगे फिर।

चलना कहां है। गवर्नर के यहां तो चार बजे चलना है। यहीं भोजन करो, आराम करो।

अपने कपड़े सम्भालते उठ बाथरूम में जाते हाथ बढ़ा घण्टी का बटन दबा देते हैं। व अन्दर चले गए हैं। बाहर से अन्दर वाली घण्टी की मधुर आवाज कमरे में फैल जाती है। उठ दरवाजा खोलती हूं। सर्किट हाउस का मैनेजर है—

गुडमॉनिंग मैडम। आपको बधाई हो।

गुडमॉनिंग। थैंक यू। ब्रेकफास्ट भिजवा दें।

यस मैडम।

मैनेजर द्वारा दिये गये अखबारों को पलंग पर रख देखने लगती हूं। सारे समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठों पर मेरे बड़े-बड़े चित्र छपे हुए हैं। नाच पढ़ आश्चर्य में खो जाती हूं। लिखा है—

साहिलादेवी को प्रदेश मंत्रीमण्डल में केबिनेट मिनिस्टर बनाया गया। आज शाम चार बजे राजभवन में वे अपने पद की शपथ लेंगी। साहिलादेवी को गृहमन्त्रालय के साथ, उद्योग विभाग, महिला विकास मन्त्रालय, समाज कल्याण मन्त्रालय दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री के कार्यों में भी वे सहयोग करेंगी।

मेरी मानसिक स्थिति एक क्षण को तो लगा प्राय लुप्त सी हो गई थी। मुझे समाचार पत्रा, यहा तक कि स्वय तक को विश्वास नही हो रहा था। सोच रही थी कहीं स्वप्न तो नही देख रही मै। नीचन्दीबाबू ने तो मुझे कुछ भी नही बताया। उधर बाथरूम से धोती बाधत ड्रेसिंग टेबुल पर जा वहा से चश्मा उठा पहिनते हैं। मेरी ओर देखन के साथ उनकी दृष्टि पलग पर रख अखबारा पर जाती है। पुलकित हो पूछते है।

देख लिये अखबार। अब कहो नीचन्दीबाबू कितना विश्वास करत हैं तुम पर। आज शाम चार बजे गवनर हाऊस चलना है। वहा शपथ समारोह रखा गया है। गये दिन जस ही तुम्हारे जीतने का समाचार मर सचिव न दिया। मैंने उसे तुम्ह दिये गये मत्रालया का प्रस्ताव बना, शपथ समारोह की तैयारी के आदेश दे दिये थे। मेरी राज्यपालजो से फान पर बात हो गई थी। आज का दिन तुम्हारे जीवन का सबसे स्वर्णिम दिन है। पूरे प्रदेश म बच्चे बच्चे की जबान पर तुम्हारा नाम हो रहा होगा। उधर रामवलि पाण्डेय ठर्रे की चार बोतले पीकर पड़ा अपने भाग्य को कोस रहा होगा। हा, एक मुख्य बात और समझ लो अब जनता के लोगो, नेताओ, श्रेयास स भी पूरे रौबदाब के साथ मिलो। अधिक फालतू बात करना उचित नहीं। गृहमत्रालय का काम सबसे महत्वपूण है जो मेर पास था तुम्ह दे दिया है मैंने। उसम पूरी मेहनत और सतकता की आवश्यकता है। श्रेयास अब ज्यादा पीछे पडेगा तुम्हारे जितना उचित हो उतना ही करो। इन लोगो के साथ ज्यादा सम्ब ध रखन से प्रशासन ढीला हो जाता है। दूसरा लोग-ब ग अखबार वाल उटपटाग, अनगल बातें करने लगते हैं।

आपके निर्देशो को समझ रही हू मैं। पर आपन बहुत जिम्मेदारियाँ डाल दी ह। मेरा अनुभव तो है नही।

अनुभव, बाय धीरे-धीरे सब समझ म आ जायगा उसकी फिक्र मत करो। तुम्हारे पास हर विभाग के सचिव हैं, पूर म त्रालय म काम करन वाले लाग हैं। मैं जानता हू तुम सब ठीक से सम्भाल लोगा। इस सबम मुख्य बात यही है किसी पर अधे होकर विश्वास मत करो। जितना वह कह रहा है समझो पांच प्रतिशत ही सही है। बाकी सब मुल्लमा चढ़ी कोरी बातें ह। तो नाश्ता करो। यहा से चलेंग नही तो लोगो की भीड जमा हो जायगी कुछ ही दर म यहा।

पर हमारे यहा होन की किसी को जानकारी तो है नहा।

धीरे-धीरे समझ जाग्रोगी मुख्यमन्त्री प्रदश म क्हां हो सकता है। हमारे लोग हवा क रुख से समझ लेत है। उन्हे किसी से पूछना तक नही पडता। हम लोगा की यही समस्या है। दस मिनट आराम से कही नहीं बैठ सकते हम। लोग भूता की तरह पीछ पडे रहते है। चलो तैयार हो जाग्रो जल्दी।

तब ही घण्टी बजती है। उठ दरवाजा खालती हू। हरिबाबू, उनक साथ दूसर मन्त्रिया की भीड हाथा म बडी बडी मालाएँ लिये, तेजी स अन्दर घुसत हैं। बधाई हा, बधाई हा के साथ सबने मुझे मालाओ से लाद दिया है। फिर मुख्यमन्त्री जी की ग्रोर बढते उन्ह भी मालाम्रा से गल तक लाद देत हैं।

बैठिये ग्राप लोग। शाम चार बजे सब लोगो को पहुच जाना है गवनर हाऊस।

नौचन्दीजी ग्रापके कहन की जरूरत क्या है। साहिलाजी दो मिनट बाहर खडे लोगो का ग्रभिवादन भी स्वीकार कर लो।

हरिबाबू के साथ कमरे स निकल सकिट हाऊस की सीढिया उतरन लगती हू तब ही साहिलादेवी जिन्दाबाद के नारे ग्राकाश को सिर पर उठा लेत है। पार्टी कायकर्ताग्रो, विभिन्न महिला सगठनो से सम्बन्धित काय-कर्त्ताग्रो न मालाग्रो स एक बार फिर लाद दिया है। मैं फूला के भार को भी सहन करन म असमथता ग्रनुभव कर रही हू। दूर एक कार ग्रा रुकती है उसम रामबलि पाण्डेय, रामावतार, दूसर कायकर्ता उनके पीछ ग्रा रहा कार से तश्तर शकरसेन मालाएँ लिय मरी ग्रोर ग्रा मुझे बधाई दते हैं। सबके प्रति ग्राभार व्यक्त करती हू। उधर मुख्यमन्त्रीजी सीढ़ियाँ उतर ग्रपनी कार म जा बठन हैं उनका सचिव ग्रा बताता हैं मुख्यमन्त्रीजी मुझे बुलवा रहे हैं। उपस्थित लोगा से विदा ले मुख्यमन्त्रीजी की कार म जा बठती हू। कार चल दी है।



बीस

मंत्रीपद की शपथ लेने के बाद सचिवालय में आज मेरा छठा दिन है। कार्यालय में बैठे अपने निजी सचिव, विभिन्न मंत्रालय के प्रशासनिक अधिकारियों के साथ प्रांत की समस्याओं, योजनाओं पर बातचीत कर रही हूं। उनमें अधिकांश रूप से वे ही लोग सक्रिय हैं। मैं उनकी बातचीत का उत्तर लगभग हाँ-ना या कहीं कोई सुझाव जैसी बात जो मुझे उचित लगती है कह देती हूं। हरिबाबू स्वयं चल मेरे कमरे में आये हैं उपस्थित अन्य लोगों से दोबारा मिलने आने का कहती हूं। वे उठकर चल दिये हैं।

आईये। हरिबाबूजी बठिये।

आपका काय तो प्रारम्भ हो गया। प्रसन्नता की बात है। उधर म भी कुछ खास मुद्दों पर अपने सहयोगियों से बातचीत कर, उन्हें निर्देश देकर आया हूं। सोचा साहिलाजी से मिल आऊं।

सुबह जबसे आकर बैठी हूं एक के बाद दूसरा फिर तीसरा चला आ रहा है मिलने। इस तरह के लोग उतनी ही बातें, समस्याएं परेशान सी हो गई हूं। पता नहीं नई-पुरानी कौन-कौन सी बातें, चर्चाएँ फाईल, निर्णय। अभी तो अधिक समझनी नहीं पर जिनको ठीक समझा उन फाईलों को अवश्य निपटा दिया मने।

अजी, यह तो सब चलता रहेगा। कुछ दिनों म अभ्यस्त हो जाओगी। थोड़ी सी सावधानी की आवश्यता है। बाकी कुछ विशेष नहीं। श्रेयास बाबू गई रात आये थे। खूब प्रसन्न थे। नौच दी बाबू ने उद्योग विभाग तुम्हे दे दिया इसलिए। अब काम समझदारी से करना। यह नहीं हो श्रेयास तुम्हारे पर किये उपकारों के बदले तुम्हारी छवि ही खराब कर डाले। क्योंकि इधर अखबारों में छपा है देख ही लिया होगा तुमने।

मुझे सब ध्यान है। उनकी असलियत अच्छी तरह जानती हूं। उनसे मेरा परिचय पुराना है। आप निश्चिंत रहें। वे जिस साहिला की छवि मन में बनाये हुए हैं वह साहिला अब मर चुकी है। आपने, नौचदीबाबू ने मुझे नया जन्म दिया है।

चलो कल आ जाना। इन दिनों कहीं बाहर जाने का कोई कार्यक्रम नहीं है मेरा।

कल देखूंगी।

हरिबाबू उठ मेरे कमरे से बाहर चले गये हैं। दरवाजे तक उन्हें छोड़ने जाती हूं। मेहमान कक्ष में बैठे श्रेयासजी पर मेरी दृष्टि जाती है। मुझे देख अपनी जगह से सोत्लास खड़े हो गये हैं। पूरी श्रद्धा से नमस्कार करते हैं। पर मैं उनके चेहरे के भावों को सरलता से पढ़ लेती हूं कि मुझसे वे खिन्न हैं। बिना उनसे बात किये अपने कमरे में आ फोन उठा सचिव को श्रेयासजी को मेरे पास भेज देने को कहती हूं। श्रेयासजी अन्दर आये हैं उनके हाथ में बड़ा ब्रीफकेस है।

बैठिये। श्रेयासजी। कैसे हैं आप।

अच्छा हूं। आपने तो हमें भुला ही दिया। पूरा एक घण्टा समाप्त हो रहा है तब जाकर आपसे मिल पा रहा हूं। आप तो अपने पुराने शुभचिन्तकों को भूल ही गई हैं।

ऐसा तो नहीं है। हरिबाबू आ गये थे उनसे बातों में देर हो गई। अन्यथा नहीं लें। कहिये मेरे लायक कोई काम।

काम तो बहुत सारे हैं। वीरनगर वाली केबल्स फैक्ट्री का पैसा मिल जाता तो बम्बई से मशीनें मंगवा लेता। हरिबाबू ने सारे काम करवा दिये थे। मशीनें बम्बई पहुंच गई हैं।

फिर क्या दिक्कत आ गई मंगवा लीजिये जो भी मंगवाना है।

उद्योग भवन के मैनेजिंग डायरेक्टर चैक जारी नहीं कर रहे हैं। आप उन्हें फोन कर देतीं तो अच्छा रहता।

श्रेयासजी, मैनेजिंग डायरेक्टर को मुझसे अधिक मत कहलवाईये। वह रामबलि पाण्डेय का आदमी है दूसरा गये दिनों के समाचार पत्र तो आपने देखे ही होंगे आपके और मेरे सम्बन्धों को लेकर अखबार वालों ने कितना भला-बुरा छापा है। मेरी छवि को बिगाड़ने पर तुले हैं यह लोग।

अखबार देखे थे पर उसमें ऐसी गम्भीर बात तो लगी नहीं मुझे।

आप गम्भीर नहीं मान रहे क्योंकि आपका काम अटका हुआ है। आप प्रदेश के गृहमंत्री के रूप में मेरी छवि की कल्पना करिये। क्या नहीं लिखा है। आप अपने काम को करवाने के लिये मेरा किस प्रकार से उपयोग करते रहे हैं साफ-साफ लिखा है उन्होंने।

मरध समारोह म राज्यपाल जो भी तुम्हारी प्रशंसा कर रहे थ। रहन लग बडी बुद्धिमान लगती है। मत्र जगह खूब प्रशंसा हो रही है। एक काम तुम्हारा समझ नही आया। रामबलि के भतीज और उनके कार्यकर्ताग्रो को तुमने जेल भिजवा दिया। रामबलि बहुत लाल पाल हो रहे थ। इस काम म इतनी जल्दी ठीक नही। रामबलि कितना गुण्डा और प्रभावशाली है तुम्ह कुछ भी नही मालूम है। नौच दीबाबू तक भी घबरात है। वह ता मैं ही था जो उसको बहुलाकर मत्रीमडल स त्यागपत्र दिलवा ही दिया।

हरिबाबू। उनके भतीज न किसी निगम म उस पद दिय जान का प्रस्ताव भिजवाया था और नही करन पर बलवा करवा देगा की धमकी भी दी थी। वह चाहता था महिला कल्याण बोर्ड म उसे अध्यक्ष बना दिया जाये। आप तो जानते ही है रामावतार महिलाओं का क्या कल्याण कर पायेगा। नौजवान लोग हैं दिमाग स काम नही लत। सार काम चाहत है दादागिरी से पूर करा लेंगे। देखती हू कितना हो-हल्ला करता है वह।

तुम सख्त रहो कुछ नही कर पायगा वह।

तब ही सचिव न फोन पर बताया थे व्यासजी मिलने आय है। उन्ह वहीं बिठा लने को कहती हू।

हरिबाबू कल रामबलिजी का भी फोन आया था बड नाराज थ उनके भतीजे और कार्यकर्ताओं को बन्द किये जाने के कारण। आज शाम घर बुलवाया है उनका बातचीत के लिय। आप भी चाहे तो अवश्य आईये।

अजी। जब पाण्डेजी वहा है तो मैं क्या करूगा आकर वे ही बहुत हैं। वैसे तुम चाहो तो नौचदीबाबू से सहूलियत से बात कर देखो रामबलि काम का अवश्य है। उसके पास भी ब्राह्मण विधायको का पूरा दल है दूसरा प्रदेश की गुण्डा राजनीति म तो सर्वोच्च स्थान है उनका।

छोड़िय भी। मुझे वैसी राजनीति तो करनी नही है। उधर नौचदीजी से उनके बारे म बात करन का मतलब भी आप खूब समझते है। आज मत्रीमण्डल की मीटिंग भी तो रखी है सी० एम० साहब ने।

ऐसी मीटिंग तो चलती ही रहती है। क्या रखा है उसम। अच्छा मैं चलूंगा अब। उधर भी कुछ लोगो को मिलने बुला रखा है। अब तक आ गये होंगे। शाम घर को और आओ आज।

ठीक है आप चलें। शाम को तो पाण्डेजी आ रहे हैं मेरे यहाँ। देखें क्या बात होती है उनसे क्या तेवर है उनके देखना चाहती हू।

चलो कल आ जाना। इन दिनों कहीं बाहर जाने का कोई कार्यक्रम नहीं है मेरा।

कल देखूंगी।

हरिबाबू उठ मेरे कमरे से बाहर चले गये हैं। दरवाजे तक उन्हें छोड़ने जाता हूं। मेहमान कक्ष में बैठे श्रेयासजी पर मेरी दृष्टि जाती है। मुझे देख अपनी जगह से सोल्लास खड़े हो गये हैं। पूरी श्रद्धा से नमस्कार करते हैं। पर मैं उनके चेहरे के भावों को सरलता से पढ़ लेती हूं कि मुझसे वे खिन्न हैं। बिना उनसे बात किये अपने कमरे में आ फोन उठा सचिव को श्रेयासजी को मेरे पास भेज देने को कहती हूं। श्रेयासजी अन्दर आये हैं उनके हाथ में बड़ा ब्रीफकेस है।

बैठिये। श्रेयासजी। कैसे हैं आप।

अच्छा हूं। आपने तो हमें भुला ही दिया। पूरा एक घण्टा समाप्त हो रहा है तब जाकर आपसे मिल पा रहा हूं। आप तो अपने पुराने शुभचिन्तकों को भूल ही गई हैं।

ऐसा तो नहीं है। हरिबाबू आ गये थे उनसे बातों में देर हो गई। अन्यथा नहीं लें। कहिये मेरे लायक कोई काम।

काम तो बहुत सारे हैं। वीरनगर वाली केबल्स फैक्ट्री का पैसा मिल जाता तो बम्बई से मशीनें मंगवा लेता। हरिबाबू ने सारे काम करवा दिये थे। मशीनें बम्बई पहुंच गई हैं।

फिर क्या दिक्कत आ गई मंगवा लीजिये जो भी मंगवाना है।

उद्योग भवन के मैनेजिंग डायरेक्टर चैक जारी नहीं कर रहे हैं। आप उन्हें फोन कर देतीं तो अच्छा रहता।

श्रेयासजी, मैनेजिंग डायरेक्टर को मुझसे अधिक मत कहलवाईये। वह रामबलि पाण्डेय का आदमी है दूसरा गये दिनों के समाचार पत्र तो आपने देखे ही होंगे आपके और मेरे सम्बन्धों को लेकर अखबार वालों ने कितना भला बुरा छापा है। मेरी छवि को बिगाड़ने पर तुले हैं यह लोग।

अखबार देखे थे पर उसमें ऐसी गम्भीर बात तो लगी नहीं मुझे।

आप गम्भीर नहीं मान रहे क्योंकि आपका काम अटका हुआ है। आप प्रदेश के गृहमंत्री के रूप में मेरी छवि की कल्पना करिये। क्या नहीं लिखा है। आप अपने काम को करवाने के लिये मेरा किस प्रकार से उपयोग करते रहे हैं साफ-साफ लिखा है उन्होंने।

साहिनाजी। बुरा मान गई आप। उस सच्चाई को आप मना भी नहीं कर सकती। कितना रुपया तुम्हारे पर खर्च हुआ है। जिसका कैसा भी हिसाब नहीं हो सकता। मुख्य तो अभी आपके चुनाव पर बत्तीस लाख रुपये से अधिक मेरे श्रेयांस केवल्स के ग्रेयस में से ही लगा दिया। उसे भूल सकती हैं आप।

श्रेयांसजी। आपने चुनाव में खर्च किया होगा। पर मैंने कभी एक पैसा लगाने की भी प्रार्थना की थी क्या आपसे। आप कह दें यदि मैंने कभी कहा तक हो।

साहिला। तुम ऐसे बदल जाओगी। सोचा भी नहीं था। तुम थी क्या एक मामूली बाबू की पत्नी। जिसे सहारा देकर मैंने घर दिया, आज सरकार में मन्त्री बनकर बैठी हो तो मेरी वजह से।

चुप रहिये श्रेयांस बाबू। आप ही वह व्यक्ति हैं जिन्होंने मेरे पति को पहिले नौकरी से निकलवाया फिर वह आर्थिक, मानसिक यातनायें देकर पागल कर डाला। आज से पन्द्रह साल से अधिक बीते मेरा पति पागलखाने की सींखचों के पीछे अपना सिर फोड़ रहा है। आप में इतना भी मानवता नहीं थी कि उन पर तरस खाते। मेरे शरीर के रोम-रोम का रक्त निचोड़ डाला आपने और उसी के सहारे एक के बाद दूसरी, फिर तीसरी मिल पर मिलें खड़ी करते चले गये। आप हर रात बिस्तर बदलते रहे मेरे। मेरी विवशता, मेरी बेटी को जिन्दा रखने के लिये सब पता नहीं क्यों मैं यह सब करती चली गई जो आपने कहा।

साहिला। तुम भूल रही हो। इस राजनीति का उजाला हमेशा नहीं रहता। इसे पाने के लिये तुमने क्या नहीं किया यह भी मुझसे नहीं छिपा है।

चुप रहिए श्रेयांस बाबू। निकल जाइये यहां से। मैं आपके लिए अब कुछ भी नहीं कर सकती। बहुत कर लिया, सह लिया। आप जिस तरह के जीवन के अभ्यस्त हैं उससे बड़ा नरक कोई हो नहीं सकता किसी के लिए भी।

साहिला, तुम अपनी औकात भूल गई हो। सत्ता के नशे में तुम्हारी बुद्धि पर परदा डाल दिया है। चलता हूं मैं। देखता हूं कितने दिन इस पद पर रह पाती हो तुम। आज ही नौबत्ती बाबू से मिलता हूं।

श्रेयांस बाबू निकल जाईये मेरे कमरे से। [illegible] मुझे कोई कदम उठाना पड़े।

तुम जसी औरतो से और क्या आशा की जा सकती है। मै भी देख लू गा। जाता हू। पर याद रखना मै जिसे इस जगह लाकर खडा कर सकता हू कल उसे सडक पर खडा कर दन म एक क्षण भी नही लगेगा मुझे।

श्रेयास बाबू। निकल जाओ यहा से।

मरी तेज आवाज को सुन मरे सचिव दौडे कमरे मे आ गय। घबराते पूछते हैं।

क्या बात है मैडम।

कुछ भी नही। इन्ह बाहर भिजवा दो और अकेला छोड दो मुझे।

सब लोग कमरे से बाहर निकल गये ह। अपनी कुर्सी पर सिर टिका आँखें बद कर लती हू। कैसा भी ध्यान नही रहता मुझे। होश आता है तब देखा मेरी साडी जगह-जगह से आसूओ से भीग गई है। अपनी कुर्सी से उठ बाथरूम म जा मु ह धो अपनी कुर्सी पर आ बैठती हू। आज अचानक यह सब कसे हो गया समझ नही पाती। पर सोचती हू जिस मानसिक यन्त्रणा को पन्द्रह वष मैंन सहन किया है उसकी परिणिती जैसी हुई उसका मुझे तनिक भी दु ख नही है। श्रेयास बाबू मुझे एक खिलौने के तरह मुझे पैसो के प्रभाव में अगुलियो से खिलाते रहे मुझे।

चुपचाप अपन कमरे से उठ, लिफ्ट से नीचे उतर कार मे आ बैठती हू। ड्राईवर से बगल चलने को कहती हू। मन बहुत उदास है आज। जो भी हुआ अच्छा ही रहा। दिन-रात श्रेयासजी की किचकिच तो खत्म हुई।

साहिलाजी। बुरा मान गई आप। उस सच्चाई को आप मना भी नही कर सकती। कितना रूपया तुम्हारे पर खर्च हुआ है। जिसका पैसा भी हिसाब नही हो सकता। मुख्य तो अभी आपके चुनाव पर बत्तीस लाख रूपय से अधिक मेरे श्रेयांस कन्स्ट्रक्शन ने आपस म से ही लगा दिया। उसे भूल सकती है आप।

श्रेयासजी। आपने चुनाव म खर्च किया होगा। पर मैंने कभी एक पैसा लगाने को भी प्रार्थना की थी क्या आपसे। आप कह दें यदि मैंने कभी कहा तक हो।

साहिला। तुम एसे बदल जाओगी। सोचा भी नही था। तुम थी क्या एक मामूली बाबू की पत्नी। जिसे सहारा देकर मैंने पर दिया, आज सरकार म मन्त्री बनकर बैठी हो तो मेरी वजह से।

चुप रहिये श्रेयांस बाबू। आप हो वह व्यक्ति है जिन्होंने मेरे पति को पहिले नौकरी से निकलवाया फिर उन्हें शारीरिक, मानसिक यातनायें देकर पागल कर डाला। आज से पन्द्रह साल से अधिक बीते मेरा पति पागलखाने की सीखचों के पीछे अपना सिर फोड़ रहा है। आप म इतनी भी मानवता नही थी कि उन पर तरस खाते। मेरे शरीर के रोम-रोम का रस निचोड़ डाला आपने और उसी के सहारे एक के बाद दूसरी, फिर तीसरी मिल पर मिलें खडी करते चले गये। आप हर रात बिस्तर बदलते रहे मेरे। मेरी विवशता, मेरी बेटी को जिन्दा रखने के लिये सब पता नही क्यों मैं वह सब करती चली गई जो आपने कहा।

साहिला। तुम भूल रही हो। इस राजनीति का उजाला हमेशा नही रहेगा। इसे पाने के लिये तुमने क्या नहा किया यह भी मुझसे नही छिपा है।

चुप रहिये श्रेयास बाबू। निकल जाइये यहा से। मैं आपके लिए अब कुछ भी नही कर सकती। बहुत कर लिया, सह लिया। आप जिस तरह के जीवन के अभ्यस्त है उससे बडा नक कोई हो नही सकता किसी के लिए भी।

साहिला, तुम अपनी औकात भूल गई हो। सत्ता के नशे म तुम्हारी बुद्धि पर परदा डाल दिया है। चलता हू म। देखता हू कितने दिन इस पद रह पाती हो तुम। आज ही नौचन्दी बाबू से मिलता हू।

श्रेयास बाबू निकल जाईये मेरे कमरे से। यह न हो मुझे कोई दूसरा कदम उठाना पडे।

तुम जैसी औरतो से और क्या आशा की जा सकती है। मै भी देख लूंगा। जाता हू। पर याद रखना मै जिसे इस जगह लाकर खडा कर सकता हू कल उसे सडक पर खडा कर दने म एक क्षण भी नही लगेगा मुझे।

श्रेयास बाबू। निकल जाओ यहा से।

मेरी तज आवाज को सुन मरे सचिव दौडे कमरे मे आ गये। घबराते पूछते है।

क्या बात है मडम।

कुछ भी नही। इन्हे बाहर भिजवा दो और अकेला छोड दो मुझे।

सब लोग कमरें से बाहर निकल गये है। अपनी कुर्सी पर सिर टिका, आंखें बन्द कर लेती हू। कैसा भी ध्यान नही रहता मुझे। होश आता है तब देखा मेरी साडी जगह-जगह से आसूओ मे भीग गई है। अपनी कुर्सी से उठ बाथरूम मे जा मुह धो अपनी कुर्सी पर आ बैठती हू। आज अचानक यह सब कैसे हो गया समझ नही पाती। पर सोचती हू जिस मानसिक यन्त्रणा को पन्द्रह वर्ष मैंने सहन किया है उसकी परिणिती जसी हुई उसका मुझे तनिक भी दुख नही है। श्रेयास बाबू मुझे एक खिलौने के तरह मुझे पैसा के प्रभाव मे अगुलियो से खिलाते रहे मुझे।

चुपचाप अपने कमरे से उठ, लिफ्ट से नीचे उतर कार म आ बैठती हू। ड्राईवर से बगले चलने को कहती हू। मन बहुत उदास है आज। जो भी हुआ अच्छा ही रहा। दिन-रात श्रेयासजी की किचकिच तो खत्म हुई।

इक्कीस

रात के कोई नौ बजने वाले हैं। इला अपने कमरे में बैठी या तो पढ़ रही होगी या सो गई होगी। बाहर अहाते में किसी गाड़ी के रुकने की आवाज आती है। दरवाजे पर आ किसी ने घण्टी बजाई है। मुझे आश्चर्य होता है सुरक्षा कर्मचारियों ने उन्हें रोका तक नहीं जो भी लोग आये हैं। उठ दरवाजा खोलती हूं। रामबलि पाण्डेय ओवरकोट पहिने मेरे सामने खड़े हैं।

आईये पाण्डेय जी। आप तो जल्दी आने वाले थे। आपकी ही प्रतीक्षा कर रही थी। फिर लगा शायद आज नहीं आयेंगे।

आना तो जल्दी ही था। पर मजिस्ट्रेट के यहां काफी समय लग गया। वह मेरे भतीजे रामावतार की जमानत तक करने को तैयार नहीं। बहुत समझाया पर माना नहीं वह। देखेंगे उसे भी। कब तक नहीं करता वह। उसे अभी हम क्या हैं शायद मालूम नहीं है उसे।

पाण्डेयजी आपको कौन नहीं जानता। वैसे ही जिद पर आ गया होगा।

जिद पर तो नहीं था वह। वह रहा था ऊपर से आदेश ही ऐसे हैं। लगता है नौचन्दी बाबू की हरकत है वह। मैंने भी सोच लिया है उन्हें भी ठीक से समझा दूंगा कि वे मेरे साथ अधिक हीलहुज्जत नहीं करें वरना परिणाम ठीक नहीं होंगे।

आप बेकार ही इतना परेशान हो रहे हैं। सब ठीक हो जायेगा।

क्या खाक ठीक हो जायेगा। मेरे पक्ष के विधायकों के सामने कैसी किरकिरी हो रही है आप भी कहां समझ रही हैं। राजनीति के दंगल में यह पहली मात खा रहा हूं मैं। नौचन्दी बाबू सी० एम० हैं वह भी मेरे बल पर। कल से ही देखो क्या गुल खिलाता हूं उनके खिलाफ। मुझे पार्टी से निष्कासन का पूरा षडयन्त्र चला रखा है उन्होंने। चार दिन उन्हें जमीन नहीं दिखा दी तो फिर लानत है मुझ पर। ठीक है रामावतार अन्दर है तो क्या हुआ उसके और कार्यकर्ता तो नहीं मर गये। देखता हूं मैं भी।

आप बहुत उत्तेजित हो रहे हैं। आपकी समस्या का हल तो मेरे पास है और चुटकी बजाते ही सब ठीक हो जायेगा।

साहिलाजी ठीक है। गहमशालय आपके पास है पर नीचे दो बाबू जो अडियल बने बैठे हैं। उनका कसे समझाओगी आप।

उनकी चिन्ता आप मत कर। वह मेरा काम है। आप तो हुक्म करिये करना क्या है।

आप समझ ही नही रही हैं मेरी बात जरा सोचिये मेरे विधायका मे मेरी किलनी हेठी हो रही है। सब कह रहे हैं म अपने भतीजे तक को नहीं बचा पा रहा।

चलो आपका यह काम मैं अभी कर देती हूं। पर आपको मेरा भी एक काम करना होगा।

एक नही पचास काम कहिये। रामबलि आपके लिये जान दे देगा। ब्राह्मण हू यदि मैंने कह दिया तो पीछे नही हटूंगा। आप तो काम बताईये करना क्या है।

छोटा सा काम है। आपके लोगो से कहकर श्रेयास के मिलो कारखाना मे एक एक कर हड़ताले, तालेबन्दी करवा दे।

यह आप क्या कह रही है। समझ नही आ रहा आप यह सब क्यो चाहती हैं। आपके और उनके सम्बन्ध तो बड़े खास हैं।

खास सम्बन्ध थे कभी अब मै जो कह रही हू यदि आप करवा सकें। तो जो आप चाहगे सब इसी समय हो जायेगा।

फिर भी कुछ तो बताइये बात क्या है।

पाण्डेयजी, आज सचिवालय, मेरे कमरे म ही उन्होने जो मेरा अपमान किया उसे भूल नहीं सकती म। वे अपनी औकात भूल गये थे ऐसा लगा मुझे उनकी बातो स। एक सडक के आदमी से भी गन्दी भाषा में पेश आये मेरे साथ। मैं कोई उनकी रखैल या लाडो तो हू नही।

क्या कह रही है आप। श्रेयास था क्या। गाँव से आया निपट मूर्ख दो पैसे का आदमी। कहो तो उसका काम ही तमाम करवा दूं आज रात को ही।

नही, अभी उसकी आवश्यकता नही। अभी तो जितना मैंने आपसे कहा उतना हो जाए यही काफी होगा। सेठ बना फिरता है वह। अकल ठिकाने आ जायेगी।

साहिलाजी आपसे वायदा रहा मेरा एक नहीं उसके सारे कारखानों म कल ही ताले ठुकवा देता हू। उसके मिलो के सारे मजदूर नेता मेरे घर प रहते हैं दिन-रात। सुबह ही बुलवा लेता हू। सबका भर काम के लिये क्या सोचा है आपने।

आपके काम के लिये सोचना क्या है मजिस्ट्रेट के यहा फोन मिलाओ इसी समय।

मिलाता हू। उसे साफ कह दो सुबह जमानत के आदेश घर से ही जल भिजवा दे। रामावतार के घर आते ही श्रेयास के काम पर लगा देता हू उसको भी। लो बात करो खुद ही बोल रहा है।

कौन सिटी मजिस्ट्रेट बोल रहे ह। मै साहिला देवी। दखिये। रामावतार पर गाव वाला केस है, कल सुबह ही उसकी जमानत के आदेश जल भिजवा दें। आप कठिनाई कह रहे है। में कुछ भी सुनना नहीं चाहता जो कह रही हू उसे पूरा करके कल फोन पर बताये मुझे। हा, हा सब मालूम है मुझे उस केस के बारे मे। पर जो कहा जा रहा है वैसा ही करें। दखिये सक्षेप मे यही कहना चाहती हू कि उसकी कल तक जमानत हो जानी चाहिये नही तो जमानत करने के लिये आपने जो एक लाख रूपये की माग की है आपके खिलाफ जाच के आदेश कल ही हो जायेंगे। मैं कुछ नहीं सुनना चाहती।

वह फोन को पटक देती है। पाण्डेयजी की ओर देखती हू। उनके चेहरे पर विजय की मुस्कान है। कहते हैं—

मान गये आपको। प्रशासन ऐसे चलता है। यह सरकार के नौकर सोचते हैं सरकार व लोग चला रहे हैं। उधर नौचदीजी का पारा चढ जायगा। जब उन्हें मालूम होगा।

उनकी चिन्ता छोडिये। म बात कर लूगी उनसे। एक सीधे, वफादार, नौजवान पार्टी के कार्यकर्ता के साथ हो रहे जुल्म को मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती। जवान लडके है गलतिया हो ही जाती हैं। सबसे बडी बात तो आपकी प्रतिष्ठा की है। इस बात की चिन्ता अधिक है मुझे। आपका पार्टी म क्या स्थान है मैं समझती हू।

साहिलाजी। आप जैसी समझदार, नक नेता की जरूरत है हम। यह बूढ़े-खूसट, सठियाए लोग पता नहीं कैसे शासन चला रहे हैं। इसके क

भरोसे ही गाडी चल रही है। समय काफी हो गया। अब चलूंगा मैं। आपसे बडा उपकार किया है मुझ पर।

पाण्डेयजी शर्मिन्दा कर रहे है आप तो मुझे। आपकी समस्या क्या मेरी नही है। ठीक है नीचदी बाबू के साथ आपके सम्बन्ध इन दिनो ठीक नही है। पर पार्टी से वफादार सनिक तो हैं ही आप एक बात जरूर ध्यान रखे आज की आपके साथ रही बातचीत को गुप्त ही रखें आप।

यह कहने की आवश्यकता नही हैं आपको। रही आपके काम की बात वह कल ही हो जायेगा। उनकी मिल के सारे मजदूर नेता मेरे टुकडो पर पल कर नेता बने है। कल ही बुलवा लेता हू। आप आराम करें। आपका अपमान करने वाला आदमी सच बात तो यह है जिन्दा रहने लायक नही है। चलता हू।

पाण्डेयजी को दरवाजे पर छोडने आती हू। अभिवादन के बाद वे अपनी झोगा जीप मे जा बैठे है जिसमे चार छ बन्दूकधारी भी बैठे बतिया रहे हैं। जीप बगले से बाहर निकल गई है। दरवाजा बन्द कर अपने कमरे मे बिस्तर पर पर लेटती हू। सोचती हू श्रेयास जैसे समाज कटको को उखाड फेंकने का उपयुक्त समय आ गया है अब। 

ऐसी बात नही है मैडम। हमारे विभाग का क्या दोष है इसमे। दूसरा श्रेयासजी का कौनसा सारा पैसा लगा हुआ है इन उद्योगो मे जनता का पैसा है।

आप एक काम करे जनसम्पर्क विभाग को कहकर इस दुर्घटना की राजकीय स्तर पर जांच कराई जाने की विज्ञप्ति प्रेस को जारी करवा दें मेरे नाम से। राज्य सरकार की पूंजी भी तो इसम लगी हुई है।

अभी कह देता हू जनसम्पर्क विभाग के निदेशक को। वे घर पर ही होगे।

तब ही फोन की घटी बज उठती है। फोन उठाती हू —

कौन। नमस्कार। एक मिनिट रूकिये। माथुर साहब आप अपने कमरे मे जाएँ कोई जरूरी बात करती है।

मेरे सचिव कमरे से बाहर चल गये हैं।

कहिये पाण्डेयजी। हा, देखे है समाचार पत्र। पर यह समझ नही आया इतनी भीषण आग लगी कैसे। आपको एसा नही करना चाहिये था। थोडा सा धय रखते और देखिय मने हडताल, तालाबन्दी के लिये जरूर कहा था। पर इस सबसे तो नुकसान ही नुकसान है। राष्ट्रीय हानि को भी सोचिये जरा। खैर, थोडा ध्यान से काम करें इतनी जल्दबाजी और उग्रता की आवश्यकता नही है। आप शाम का आ रह हैं जरूर आईये, पर कुछ देर से। हा, श्रेयासजी को कोई प्रतिक्रिया मालूम हुई क्या। ठीक कह रहे आप वह तो अब होगी। आगे हो कर उनसे मत करिये आप। हा, शाम को मिल रहे हैं।

फोन रखती हू। इला कालेज जाने की तैयारी कर रही है। उससे पूछती हू—

और बेटे कैसे चल रहा है तुम्हारा काम।

अच्छा ही है मम्मी। आज का क्या कायक्रम है आपका।

कोई विशेष नही। सचिवालय जाऊगी थोडी देर के लिये।

आप भी शाम को फिल्म चलती मरे साथ।

यह सम्भव नही। तुम ही हो आना।

ठीक है, मैं जा रही हू।

फिर फोन की घण्टी बज उठती है। सचिव माथुर पूछते हैं — श्रेयासजी का फोन है।

मना कर दो उन्हें घर पर नहीं हूं मैं।

सोफे से उठ ड्रेसिंग टेबल पर जा बैठती हूं। बालों को सँवार साड़ी बदलने लगती हूं। बाहर आ सचिव माथुर से सचिवालय चलने को कहती हूं। दोनों कार में बैठते हैं। मुख्य द्वार पर खड़े सन्तरी ने अभिवादन किया है। उत्तर में हाथ हिला देती हूं। गाड़ी मुख्य सड़क पर तेज गति से भाग जा रही है।

माथुर साहब मुख्यमन्त्रीजी के यहां मिलते हुए सचिवालय चलेंगे।

जैसा आप कहें।

गाड़ी मुख्यमन्त्री निवास के अहाते में जा रुकती है। माथुर जाकर घंटी बजाते हैं। दरवाजा खुला है। दरवाजे पर हरिबाबू हैं।

आईये साहिलाजी। सी० एम० साहब आपको याद ही कर रहे थे।

गाड़ी से उतर नीचे दी बाबूजी के कमरे में जाती हूं। माथुर बाहर कार में जा बैठे हैं।

आओ, साहिला। कैसे चल रहा कामकाज।

श्रेयासजी के मिल वाला समाचार तो देखा ही होगा तुमने।

हाँ पढ़ा था।

कुछ देर पहिले फोन आया था उनका। बड़े परेशान थे। कह रहे थे उद्योग मन्त्रालय से उनके केबल्स वाले कारखाने का पैसा नहीं मिल रहा इधर कपड़े वाली मिल में सारा नाश हो गया। कुछ भी पता नहीं लग सका बता रहे थे श्रेयास। सबसे ज्यादा दुख तो मरने वालों का है। कह रहे थे तीस-पतीस लाख रूपया तुम्हारे चुनाव पर लगा दिया उन्होंने। तुम एक जांच आयोग का गठन कर डालो और समाचार पत्रों में विज्ञप्ति जारी करवा दो राज्य सरकार की ओर से।

वह मैंने जनसम्पर्क विभाग को कहलवा दिया है।

बस बस काफी है। इससे और कुछ नहीं तो श्रेयास के दिल पर ठण्डे छींटे तो पड़ ही जायेंगे। जांच आयोग की रिपोर्ट आयेगी तब की तब देखी जायेगी। हरिबाबू, साहिला की सूझबूझ देख ली तुमने। हम जो सोच रहे थे साहिला वह काम करके ही मिलने आई है।

नौच दीबाबू इनकी काबलियत की झूठी तारीफ तो मैंने कभी की नही आपसे। हम कम पारखी मत समझिये आप।

उसमे कौन सा शक है। लो कॉफी पियो आप लोग। थोडे गम हो जायगे।

नौच दीबाबू काफी से ही गम करना चाह रहे है क्या।

सुबह-सुबह तो इसी से गम हो जाईये। उसका समय रात का है। रात का उसके साथ साहिना भी साथ हो तब ही गर्माते हैं हम तो अब। वरना हरिबाबू आप जानो इन घुटनो मे कहा ताकत रह गई है हमारे।

और ठहाका मार के हस पडते हैं। मेरी ओर उन्होने विशेष ढग से देखा है। फिर बोलते है—

श्रेयास का फोन आवे तो दो मीठे शब्द बोल लेना बस। दुखी तो है ही बेचारा। तुम्हारे चुनाव और इस अग्निकाण्ड में तो मैं समझता हू काफी दब गया है वह। इन्श्योरेन्स वाले भी पता नही कब तक पैसा दे पाते हैं। पैसे से क्या हो जायगा मिल दोबारा शुरू होने मे चार-पाच महीने तो आराम से लग जायेंगे। खैर, करता रहेगा उसे काम करना है तो। और क्या कार्यक्रम है तुम्हारा।

सचिवालय जा रही थी। सोचा आपसे मिलते हुए निकल जाऊ।

यह तो अच्छा किया। परसो देहली जा रहा हू। तुम भी चाहो तो चली चलना। हरिबाबू भी जा रहे हैं।

चलेंगे। मुझे आज्ञा दे इस समय।

चलो तुम। हरिबाबू आप बैठो। आपसे पूरी बात हुई कहाँ है।

बाहर दरवाजे तक हरिबाबू छोडने आये है। अपनी गाडी मे जा बैठती हू। मेरे हरिबाबू को नमस्कार करते ही कार तेजी से बाहर मुख्य सडक पर आ गई है।

मैडम, सचिवालय ही चलना है ना अब।

हा।

तेजी से हम सचिवालय परिसर म जा पहुचते हैं। लिफ्ट से ऊपर चौथी मजिल पर पहुच अपने कमरे मे जा बैठती हू। पूरे सचिवालय मे भीड-भाड का वातावरण है। सचिव कक्ष से माथुर कहते हैं श्रेयासजी का फोन है।

लाम्रो मुझे दो। हा। कहिये। पढ लिया था। बडा दुख हुम्रा आपके व्यवहार से बिलकुल असन्तुष्ट नही हू मैं। सुबह जसे ही पत्र जनसम्पर्क निदेशक को मैंने विज्ञप्ति भिजवा दी और सचिवालय भी दौडकर इसीलिये आई कि एक जाच आयोग का गठन कर दिया जाये। क्यो नही। आप भी अपना एक सदस्य उसमे अवश्य रख सकते हैं। देखिये श्रेयासजी राज्य सरकार का भी तो कितना पैसा लगा हुआ है उसमे। हमसे अधिक से अधिक जो भी सहायता हो सकेगी जरूर करेंगे। केबल्स मिल्स के बारे मे आज ही बात कर लेती हू मैनेजिग डाईरेक्टर से। आप चिन्ता नही करें ईश्वर सब अच्छा करेगा। ऐसे नही क्षमा करने की बात कहकर शर्मिन्दा कर रहे हैं मुझे आप। बिल्कुल नाराज नही हू आपसे। आप भी उद्योग भवन हो आईये। अभी ही बात कर लेती हू। धन्यवाद। नमस्कार।

फोन रख देती हू। सोचती हू श्रेयास बाबू का दिमाग हल्के से झटके मे ठीक होने लगा है।

खिडकी से सचिवालय परिसर मे घुस आये जुलूस और नारेबाजी की आवाजे आ रही है। खडी हो नीचे देखती हू। आगे खुली जीप मे शकरसेन मालाएँ गले मे डाले खडे है। पीछे लम्बा जुलूस है। अपनी कुर्सी पर आ बैठती हू। सचिव कक्ष से घण्टी बजती है। फोन उठा सुनती हूँ—

यह नीचे कौन लोग है माथुर साहब।

बीरनगर के लोग हैं। मुझसे ही मिलना चाहते है। पर बात क्या है।

वह तो आपसे हा मिलने को कह रहे है।

ठीक है। दो-चार लागो को बुलवा लें।

अगले कुछ ही क्षणो मे शकरसेन, मोहसिन भाई, रघुनाथजी मेरे कमरे मे प्रवेश करते हैं।

बठिये आप लोग। इतना बडा जुलूस शकरजी किस वजह से।

साहिलाजी। बीरनगर की जनता न्याय मागने आई है आपके पास। इनके साथ आपकी सरकार ने, सेठ श्रेयास प्रसाद ने धोखा किया हैं।

कैसा धोखा। क्या कह रहे है आप।

श्रेयास केबल्स के लिये आपने गरीब लोगो के खेतो पर कब्जे करने के आदेश जो दिये है वह गलत है। बातचीत के समय श्रेयास सेठ ने पाच हजार रुपये बीघा जमीन के हिसाब से पैसा देने को कहा था अब वे एक हजार

रूपये बीघा जमीन के सौदा तय होने की बात कर रहे है। उनका सचिव माणिक गये सप्ताह गाव गया था। वहाँ उसने एक हजार रूपये बीघा जमीन का भाव तय होने की बात कही। गाव वाले भडक उठे। पूरा गाव आपसे मिलने आया है।

मै इसमे क्या कर सकती हू। आप लोगो के साथ श्रेयासजी या उनके आदमी माणिक ने क्या भाव तय किया मुझे कुछ भी नही मालूम।

शकरसेन तमककर कहते हैं—साहिलाजी। भाव कुछ भी तय हुआ हो गाव वालो ने यह निश्चय कर लिया है श्रेयास बाबू को गाव की एक गज जमीन भी नही बेचेंगे वे।

शकरसेनजी जमीन के भाव को तो अभी भी बातचीत करके ठीक कर सकते हैं आप लोग। यो भी सोचिए वीरनगर म इतने वडे कारखाने मे आपके क्षेत्र के लोगो को काम भी मिलेगा, वहा का रोजगार बढेगा।

यह सब झूठी बातें हैं। हमे मालूम हुआ है जो मिल वहा लगाया जा रहा है वह पूरा का पूरा आटोमेटिक है, कम्पोजिट प्लाट लग रहा है। सौ-पचास नौकर-चपरासियो की नौकरी मिल भी गई तो उससे कोई बहुत बडा भला हो जायेगा। हम नही मानते। हम तो आपसे यही कहने आये है कि गाव वाले एक गज जमीन भी देने को तैयार नही है और आपकी सरकार या श्रेयास बाबू हमारे पर जोर डालेंगे तो अच्छा नही होगा। हम उस मिल को कभी भी नही लगाने देंगे।

मोहसिन भाई। श्रेयासजी के मिल की सारी मशीनें जापान से आ गई हैं। ऐसी हालत मे कितना मुश्किल हो जायेगा उनके साथ।

देखिये, साहिलादेवीजी। हम तो आपकी इज्जत करते हैं। आपसे वीरनगर के लोगो की गुजारिश है कि किसी भी कीमत पर वहाँ इस कारखाने को नही लगने दिया जाये। वीरनगर के अलावा श्रेयासजी कही भी कुछ करें तो हमे ऐतराज नही। अभी हम सब लोग श्रेयासजी के घर ही जा रहे है।

आप लोग बात करके देखें उनसे। वे क्या कहते हैं। हो सकता है जो कीमत जमीन की चाहते हैं आपको मिल जाये।

देखिये मिनिस्टर साहिबा। जो आदमी हमारे गाँव के भोले-भाले किसानो के साथ शुरू मे ही दगा कर सकता है उसका आगे हम कैसा भी विश्वास नही कर सकते। सारे गाँव के लोगो ने निश्चय कर लिया है कि हमारे को कारखाने के लिये जमीन देनी ही नहीं है। हम भी देखते हैं कैसे लगाते है वे

कारखाना। अभी तो हम यहाँ श्रेयासबाबू के यहाँ जा रहे हैं। आपसे यही प्रार्थना है कि सरकारी दबाव किसी मामले में नहीं डालें आप। मुख्यमन्त्री जी ने शाम को बातचीत करने को कहा है। उनसे भी मिल लेंगे। हम जाते हो।

आप मिल लें उनसे। मैं विचार करूँगी। मैं भी उनसे बात कर लेता हूँ अभी।

अच्छा नमस्कार साहब। नीचे लोग इंतजार कर रहे होंगे।

सब लोग उठ तेजी से कमरे से बाहर चले गये हैं। सचिव माथुर मेरे पास आते हैं—

मैडम। इस चक्कर में बिल्कुल हाथ नहीं डालें आप। इन लोगों के साथ रामवलि पाण्डे के भतीजे रामावतार भी थे। वे मिलने नहीं आये आपसे नीचे दूसरी जीप में बैठे हैं। ऐसा लग रहा है श्रेयासजी के खिलाफ किसी ने भड़का दिया है इन लोगों को। वरना यही गाँव वे लिये श्रेयासजी के मिल के गेस्ट हाउस में दस दस दिन पड़े रहते थे।

माथुर साहब कुछ समझ नहीं आ रहा। मैं कर भी क्या सकती हूँ। श्रेयासजी से बात कर लेती हूँ और तो क्या। मेरे विधानसभा क्षेत्र में इतना बड़ा कारखाना लग रहा है मुझे तो खुशी थी। आप जरा उद्योग भवन के मैनेजिंग डाईरेक्टर से मेरी बात करवायो। इनसे बात करने के बाद श्रेयांस जी से बात करूँगी। लाओ मुझे दो।

कौन। मैनेजिंग डाईरेक्टर पाण्डेयजी बोल रहे हैं। नमस्कार। आपके यहाँ से श्रेयास केवल्स को दी जाने वाली राशि का चैक क्या रुका हुआ है। उनके कारखानें की मशीनें भारत पहुंच गई हैं। वे छुड़वाना चाहते हैं। आप जब तक चैक नहीं देंगे कैसे सम्भव होगा वह सब कुछ। क्या। उन्होंने प्रोजेक्ट का इनिशियल रूपया भी जमा नहीं कराया है अब तक। कितना रुपया है वह। कुल सोलह करोड़। अच्छा, अच्छा तीन करोड़ बाकी है। ठीक है जब वे करवा दें आप जल्दी ही चैक जारी करवायें। नमस्कार।

फोन रख देती हूँ। लगता है श्रेयास बाबू चक्कर में पड़ गये हैं। इधर गाँव वालों का आन्दोलन। देखनी हूँ स्थितियाँ क्या रूप लेती हैं। फोन उठा माथुर को घर चलने को कहती हूँ व फाईलों का बस्ता लिये मेरे कमरे में आये हैं।

आईये मैडम चलते हैं।

दोनों लिफ्ट से नीचे आ कार में बैठ घर की ओर निकल पड़ते हैं।

तेईस

नींद आने लगी है। बैठी फाईलें निबटा रही थी। रात के दस से अधिक बज रहे हैं। इला भी फिल्म से लौट आयी है और अपने कमरे में सो रही है। बाहर अहाते में किसी गाड़ी के आ रुकने की आवाज आती है। बाहर से किसी ने घण्टी बजाई। सोचती हूं लोग इतनी देर रात को भी मिलना चाहते हैं। लगता है मेरी व्यक्तिगत जिंदगी तो राजनीति में आने के बाद समाप्त हो गई। तेज थकान के बावजूद उठ दरवाजा खोलती हूं। सामने रामबलि पाण्डेय बड़ा सा माल ओढ़े खड़े हैं।

इस समय पाण्डेयजी।

आपने ही तो कहा था कुछ देर से ही मिलने आऊं।

वह तो ठीक है। आप बैठिये। वैसे आपके आने वाली बात ध्यान में ही नहीं थी मेरे। नींद सी आने लगी थी बस सोने ही जा रही थी। कहिये क्या समाचार हैं।

समाचार तो आपको सब मालूम ही होगा। आपकी जानकारी में दो नई बातें अवश्य जोड़ना चाहूंगा। पहली श्रेयास सीमेंट दूसरा श्रेयास खाद के कारखाने में भी आज दोपहर बाद तालाबन्दी हो गई है। अभी अपने घर दोनों कारखानों के मजदूर नेताओं को विदा करके आया हूं। रामावतार ने बड़ा भागदौड़ की। सुबह जल्दी ही घर से अपने आदमियों को ले निकल गया था। पहिले बीरेनगर गया वहाँ गाँव वालों से बात कर जुलूस तैयार करवा शंकरसेन को आपके पास सचिवालय भिजवाया। फिर श्रेयास सीमेंट, श्रेयास फर्टीलाइजर्स जा वहाँ के मजदूर नेताओं से बात कर हड़ताल की घोषणा करवा दी। एक क्षण भी बेचारा कहीं रूका नहीं है। बीस-बीस जीपें, कारें दो दिनों से दौड़ रही हैं।

बड़ा खर्चा हो रहा होगा फिर तो आपका।

वह तो हो ही रहा है। पर शंकरसेन उठा रहा है सारे खर्चे को। खूब पैसा कमाया है उसने जब हम मन्त्री थे।

पर वह तो मेरे खिलाफ चुनाव में खड़े भी तो हुए थे।

वह सब चलता है। मैंने उसको साफ बता दिया है साहिलाजी का उस दो कौडी के कारखाने वाले ने जो अपमान किया है उनका क्षमा नहीं कर सकते हैं। हमारे कहने पर सब कर सकता है वह।

मेरी समझ में नहीं आया कुछ।

सीधी सी बात है आपके सम्मान की रक्षा के लिये भागदौड कर रहा है, पैसा खर्च कर रहा है तो वह आपका सेवक बन गया है। उसकी पीठ पर आपका हाथ रहेगा तो फिर सब काम फतह कर डालेगा वह।

तब ही फोन की घण्टी बजती है। उठा बात करती हू–

कौन। नौचन्दी बाबूजी। नमस्कार। हा, जानकारी तो है मुझे। कौन रामबलिजी करवा रहे है सब। हरिबाबू ने बताया है आपको। आप चिन्ता नहीं करें कल रामबलिजी से मिलने की कोशिश करूगी मैं। कल ही चलना है ना चलेंगे। अच्छा, नमस्कार।

तो श्रेयासजी ने हरिबाबू को बताया कि यह सारे काम आप करवा रहे हैं।

छोडिये भी साहिलाजी। नौचन्दीबाबू के दोनो कुत्तो की परवाह नहीं करता मैं। आप तो हुक्म करिये आगे क्या करना है।

वैसे भी नौचन्दीजी ने बताया कि हरिबाबू को लताड लगाई है उन्होने। हरिबाबू ने बडी गलती की श्रेयास सेठ को लेकर सी० एम० साहब के यहाँ पहुच गये। इस पर बिफर पडे वे। वह कह थे इन सेठो को मेरे बगले तक की जरूरत नहीं। एक खास बात और कही हरिबाबू को कि इस सेठजी के सम्बन्ध में जो भी बात करनी है मुझसे करें।

गलत क्या कहा उन्होने। गृहमत्रालय तो आपके पास ही है। नौचन्दी बाबू क्या करेंगे। फिर एक बात इसमें और समझ आई सी० एम० आप पर पूरा भरोसा करता है। आपने भी गजब ही कर दिया उन पर। हरिबाबू वैसे उनके करीब के लोगो में माने जाते हैं। पर आज तो आपने बताया उस हिसाब से तो हरिबाबू को पीछे छोड दिया आपने।

ऐसा कुछ नहीं है पाण्डेयजी। बस हो कह दिया होगा।

साहिलजी राजनीति मे ऐसे ही नही कहा जाता दूसरा एक-एक शब्द का महत्व होता है। आपने जो बताया उससे साफ जाहिर है नौचंदीबाबू की सबसे विश्वासपात्र बन चुकी है आप। हमारा भी ध्यान रखिये।

जब भी अवसर आयेगा और मेरे से जो सम्भव होगा सब करूंगी आपके लिये।

नौचंदीबाबू के दिमाग से हमारे खिलाफ जो भी अफवाहे हो धीरे-धीरे उन्हे भी साफ करें आप। मेरा व्यक्तिगत उनसे कोई झगडा है भी नही। अभी थोडा रुककर जरूर करें। यह श्रेयास वाली बात ठण्डी हो जाये जरा।

आप देखते जाइये, कैसे मैं आपके हित मे काम करती हू। मौका लगा और नौचंदीबाबू मान गये तो सीधा मंत्रीमण्डल मे आजायेंगे आप। मंत्रीमण्डल मे पता नही कब आना हो, नही हो फिलहाल किसी निगम मे अध्यक्ष ही बनवा लें। मैं तो उसी मे अपनी सेवाए देता रहूगा।

छोडिये, यह सब आगे की बातें है। आप तो श्रेयास को और कैसे सबक सिखाया जा सकता है बतायें मुझे।

अब तो जो हुआ है वही क्या कम है। इसी से चक्करघन्नी हो गया होगा वह तो अभी इसकी प्रतिक्रिया देखिये आगे की सारी योजना मेरे दिमाग मे है। जब-जब आपसे अकेले मिलते रहेंगे। काम बढ़ाता जाऊंगा अपना। वैसे हरिबाबू भी जरूर नाराज होंगे मुझसे। पर जब आपका साथ पकड लिया है तो उनकी चिन्ता नही करता मैं। हमारे सामने तो सीखा है राजनीति करना वह। कल देख लेना सारे अखबार श्रेयास के सारे उद्योगो मे हडताल और तालेबंदी के समाचार होंगे। कल दिल्ली जा रही हैं आप।

विचार तो है। नौचंदीबाबू कह रहे हैं। पार्टी हाईकमान से मिल आने के लिये।

देख लेना। अभी तो ज्यादा अच्छा है दो-चार दिन यही रहकर श्रेयास की प्रतिक्रियाओं, गतिविधियो को समझो आप। अभी वह हरिबाबू को अपने पक्ष मे ले आपको भी नुक्सान पहुचा सकता है। आपको इन दिनो सतर्क रहना चाहिये।

आपका कहना सही है। कितना समय हुआ।

ग्यारह से अधिक बज गया है।

आप सम्पर्क बनाये रखें मुझसे। अभी तो मुझे तेज नींद आ रही है।

आराम करें आप। दिन भर काम में लगी रहीं। अभी तो दस रह। दो फाईलें निवटा कर ही उठी थीं आप।

क्या करूं। आपने जिम्मेदारियां जो डाल रखी हैं मुझ पर।

मजाक कर रही हो, हम हैं क्या चीज। एक अदना विधायक ही तो हैं।

आपके महत्व को मैं समझती हूं। क्षमा करें आप खुद भी नहीं जानते।

आपने इतना सम्मान दिया कृपा है। चलू ना मैं। एक बात विशेष यह है आप श्रेयास से बात करना तक भी बंद कर डालें। सिर पटकने दो। देखता हू मैं भी कब तक आपकी शरण में नही आता वह। चलू मैं।

अच्छा, नमस्कार।

नमस्कार। 

चौबीस

रात के सन्नाटे में कार सड़क पर तेजी से दौड़ी जा रही थी। राष्ट्रीय मार्ग पर आवागमन अधिक था। एक के बाद दूसरी गाड़ी या तो सामने से सर से निकल जाती या पीछे से आगे को सड़क पर फिसलती गुजर जाती। पाछे मेरे साथ नौचन्दीबाबू घर से चलते समय ही स्वदेशी की आधी से अधिक बोतल गल के नीचे उतारकर कार में सवार हुए थे। बहुत देर से विचारने की मुद्रा में गाल पर हाथ रखे कोहनी को कार में रखे तकिये में दबाये सोचते रहे थे। इस बार हाथ बढ़ा उन्होंने मेरी गोद में रख दिया था। धीर से बोले—

साहिला। तुम्हें नींद आ रही है।

नहीं तो।

मुझे लग रहा है। मेरे कन्धे पर अपना सिर टिका लो।

मेरी ओर से किसी प्रतिक्रिया को न देख उन्होंने मुझे अपनी बाहों में खींच लिया था। सच्चाई यह थी कि चलते समय दो-तीन पेग मुझे भी अपने हाथों से पिला दिये थे उन्होंने माने ही नहीं। बड़े प्यार से बोले थे—

लंबा रास्ता है इसके बिना कटेगा नहीं ले लो, हमारी बात मान भी लो।

नहीं चाहते हुए भी पी ली थी। सोचा रात ठीक से कट बीत जायेगी। इस समय तक हल्का असर मुझ पर भी होने लगा था। नौचन्दीबाबू की बाहों का कसाव बढ़ रहा था। वह आनंदित मुद्रा में लगातार चूमे जा रहे थे। मुझे कैसी भी आपत्ति नहीं थी। विश्वस्त थी मैं कि नौचन्दीबाबू अहं निरापद जीव ही तो हैं। हल्की हँसी भी आ गई थी मुझे। जिसे सुना जा सकता था। मेरा हाथ दबाते नौचन्दीजी ने पूछा था—

सुख में डूब गई हो लगता है।

हां। यो ही मान लें। भला लग रहा है।

क्यों नहीं। अब तो तुम पक्की राजनीतिज्ञ बन गई हो। श्रेयांश बाबू के कारखानों, मिलों को बंद करवा देने से कोई लाभ हुआ तुम्हें।

मेरा इन बातों से कोई संबंध नहीं। आपने कैसे मान लिया श्रीवास्तव बाबू के साथ हुई घटनाओं में मुझे कोई सुख मिला हो।

हरिबाबू कह रहे थे। उन्होंने तुम्हारा अपमान कर दिया था सचिवालय में मेरे साथ कोई ऐसा व्यवहार किया भी नहीं जिससे मैं नाराज होऊं।

फिर यह सब हरिबाबू की बनाई हुई कहानी है। उस सेठ को घर ही ले आये इस सम्बन्ध में बात करने के लिये। डाट कर भगा दिया मैंने। हरिबाबू का यह तरीका अच्छा नहीं लगा मुझे। उनका मिल जल गया या हड़ताल होगई इन बातों को चाहते तो मुझ से सीधी बातें करते। सेठ इधर-उधर की बातें करता रहा। अच्छा नहीं लगा मुझे। हम सरकार चला रहे हैं। दो-चार सेठ लोगों की कृपा से तो सरकार चलती नहीं कि उन्हीं के सहारे बैठे रहें या सारा समय उनके लिये ही देते रहें।

आप बुरा नहीं मानें तो लगता है हरिबाबू की राजनीति कुछ इसी तरह की है।

वह तो शुरू से यही कह रहे हैं। हमने ध्यान नहीं दिया। और इसी का नतीजा है हमने कभी हमारा सीधा हाथ कहे जाने वाले रामबलि पाण्डेय के साथ हमारे सम्बन्ध खराब हो गये। रामबलि की सबसे बड़ी खराबी यह है कि जल्दी उत्तेजित हो जाता है। उखाड़-पछाड़ शुरू कर देता है। यहां तक कि हिंसा तक करवा डालता है। पाण्डेय है ना चौबीस घंटे भंग की तरंग में रहता है। उसकी वफादारी में कोई कमी नहीं है। जान दे सकता है जिसके साथ भी हो वह। इन दिनों हमसे कटा-कटा रहता है पर खुल कर मेरे सामने नहीं आयेगा कभी वह। उसमें आंख की बड़ी शर्म है। आजकल पता नहीं किन कामों में उलझा हुआ है वह। वरना कभी-कभी फोन पर जरूर बात कर लेता था या सचिवालय मेरे कमरे में आकर बैठ जाता था। उसके भतीजे का क्या हाल है। वह भी नहीं दिखता। वह रामबलि पाण्डेय से पांच फुट ज्यादा गहरा है जमीन में। कभी मिलना हुआ उससे।

नहीं। जानती भी नहीं कौन है वह। मुझे करना भी क्या है उसके बारे में जानकर। आपका मार्गदर्शन चाहिये मुझे तो। मुझे न हरिबाबू और न ही रामबलि पाण्डेय की चिन्ता है। मुझे तो दोनों एक जैसे ही लगे।

वैसे रामबलि जागीरदार आदमी है। हरिबाबू कल तक पार्टी आफिस में झाड़ू लगाता था। उनके क्षेत्र में कोई प्रभाव नहीं उनका। श्रीवास्तव...

लोगों को साथ लगाये रहता है। थोड़े बहुत और हाथ पैर मार लेता है। इससे अधिक कुछ नहीं।

कार को झटका सा लगा। नीच दीवानू ने आगे की सीट पर कुर्सत ड्राईवर से कहा—

हुसन। नींद आने लगी है क्या।

नहीं साहब। स्पीड ब्रेकर का ध्यान नहीं रहा। आप आराम से बात-चीत करें।

नींद आ रही हो तो आने वाले स्थान पर रोक कर चाय पी लेना। मुझे लग रहा है तुम्हें जब नींद आती है तब ही गलती करते हो।

मुश्किल से पांच-सात मिनिट के बाद ही कोई गांव आ गया था। हुसैन ने चाय की होटलों से कुछ आगे साईड में गाड़ी को रोका।

मैं दो मिनट में चाय पीकर आया साहब।

हुसैन। चाय तो मेरे पास रखी है।

तुम्हारी चाय से काम नहीं चलेगा। ड्राइवरों को तेज चाय चाहिये।

आप लीजिये चाय।

तुम लो। रात को चाय नहीं पीता मैं। थरमस फ्लास्क से चाय निकाल पी लेती हूं।

थोड़ी ले लेते आप।

मेरी रात वाली चाय मेरे थैले में रखी है। ले लूंगा मैं। अभी सुबह होने में चार घण्टे बाकी हैं। तब तक ही पहुंच पायेंगे हम।

नीच दीवानू ने थैले से बोतल निकाल मुंह पर लगा ली थी। अधिक से अधिक पेट में डाल ली। हुसैन भी लौट आया था।

ध्यान से चलाओ हुसन।

अब चिन्ता नहीं है साहब। दिल्ली आराम से पहुंच जायेंगे।

उसने गाड़ी को स्टार्ट कर तेजी से रफ्तार में ले आया था। कुछ देर शांति छायी रही थी। फिर नीच दीवानू ने मेरी बगल में हाथ डाल लिये थे। वह मेरी गोदी में अधलेटी हालत में अपना सिर रख लिया था। मेरे शाल में हाथ डाल ब्लाऊज के नीचे के दोनों बटन खोल दिये थे। और गोलकपिंडों

मेरा इन बातो से कोई सबध नही। आपने कैसे मान लिया श्रेयास बाबू के साथ हुई घटनाओ मे मुझे कोई सुख मिला हो।

हरिबाबू कह रहे थे। उन्होने तुम्हारा अपमान कर दिया था सचिवालय म मेरे साथ कोई ऐसा व्यवहार किया भी नही जिससे मैं नाराज होऊ।

फिर यह सब हरिबाबू की बनाई हुई कहानी है। उस सेठ को घर ही ले आये इस सम्बन्ध मे बात करने के लिये। डाट कर भगा दिया मैंने। हरिबाबू का यह तरीका अच्छा नही लगा मुझे। उनका मिल जल गया था हडताल हो गई इन बातो को चाहते तो मुझ से सीधी बातें करते। सेठ इधर-उधर की बातें करता रहा। अच्छा नही लगा मुझे। हम सरकार चला रहे है। दो-चार सेठ लोगो की कृपा से तो सरकार चलती नही कि उन्ही के सहारे बैठे रहें या सारा समय उनके लिये ही देते रहें।

आप बुरा नही मानें तो लगता है हरिबाबू की राजनीति कुछ इसी तरह की है।

वह तो शुरू से यही कह रहे हैं। हमने ध्यान नही दिया। और इसी का नतीजा है हमने कभी हमारा सीधा हाथ कहे जाने वाले रामबलि पाण्डेय के साथ हमारे सम्बन्ध खराब हो गये। रामबलि की सबसे बडी खराबी यह है कि जल्दी उत्तेजित हो जाता है। उखाड-पछाड शुरू कर देता है। यहा तक कि हिंसा तक करवा डालता है। पाण्डेय है ना चौबीस घटे भग की तरग म रहता है। उसकी वफादारी मे कोई कमी नही है। जान दे सकता है जिसके साथ भी हो वह। इन दिनो हमसे कटा-कटा रहता है पर खुल कर मेरे सामने नही आयेगा कभी वह। उसम आँख की बडी शर्म है। आजकल पता नही किन कामो म उलझा हुआ है वह। वरना कभी कभी फोन पर जरूर बात कर लेता था या सचिवालय,मेरे कमरे मे आकर बैठ जाता था। उसके भतीजे का क्या हाल है। वह भी नहीं दिखता। वह रामबलि पाण्डेय से पाच फुट ज्यादा गहरा है जमीन मे। कभी मिलना हुआ उससे।

नहीं। जानती भी नही कौन है वह। मुझे करना भी क्या है उसके बारे में जानकर। आपका मार्गदर्शन चाहिये मुझे तो। मुझे न हरिबाबू और न ही रामबलि पाण्डेय की चिन्ता है। मुझे तो दोनो एक जैसे ही लगे।

वैसे रामबलि जागीरदार आदमी है। हरिबाबू कल तक पार्टी आफिस मे झाडू लगाता था। उनके मन म कोई प्रभाव नही उतरता। श्रेयास जैसे

पच्चीस

सुबह से शाम होने आई पूरा समय हाईकमान के महामंत्री, कार्यालय, केन्द्रीय मंत्रीमंडल के यहां एक के बाद एक मिलते-मिलते ही दिन पूरा हो गया। दिन में दस मिनिट भी विश्राम करने को कहीं नहीं मिले। जिनसे भी मिले नौचन्दीबाबू ने राज्य मंत्रीमंडल में मेरे काम को महत्वपूर्ण एवं निष्ठा से किया जाना बताया। उन्होंने तो महामंत्री को यहां तक भी कहा कि वर्तमान में मैं राज्य की राजनीति में उनके लिये दायें हाथ के रूप में काम कर रही हूं। नौचन्दीबाबू के केन्द्रीय हाईकमान कार्यालय में, मंत्रीमण्डल के लोगों के साथ गाढ़े सम्बन्ध था को अपनी आंखों से देखा लगा उनकी हर बात को वह लोग पूरी गंभीरता से ले रहे हैं। गये दिनों हरिबाबू की पूंजीपतियों के साथ रहे गठबंधन को भी पार्टी हाईकमान के सामने उन्होंने अनुचित और पार्टी की छवि को धूमिल करने की कार्यवाही बताया। उनकी इस बात पर पार्टी द्वारा कठोर कदम उठाने तक की बात कही गई। सारी बातचीत नौचन्दी बाबू के तरीकों को मैंने बारीकी के साथ समझा और परखा था।

रात के दस बजने को हैं। नौचन्दीबाबू राजधानी में किसी वरिष्ठ नेता से मिलने गये हुये हैं। अतः वे जिन लोगों से मिलने का कार्यक्रम बनाकर आये हैं उसे पूरा करने में लगे हैं।

दिन भर की थकान से नींद नहीं आ रही। पैरों में तेज दर्द हो गया है। नौचन्दीजी का बैग खोल उसमें रखी उनकी आशा की बोतल निकाल टेबल पर रखे ग्लास में एक बड़ा पैग बना तत्री से गले के नीचे उतार लेती हूं। शायद इससे ही नींद आ जाये। तकिया लगा लेट जाती हूं। कमरे में लगी वातानुकूलन की मशीन के गर्म हवा के झोंके काटती सर्दी में भले लग रहे हैं। बेचैनी सी अनुभव कर रही हूं। बिस्तर पर लेटे लेटे हाथ बढ़ा टेबल पर रखी बोतल से एक बड़ा पैग और तैयार कर पी जाती हूं। नौचन्दी बाबू की तरह धीरे-धीरे पीना कठिन है मेरे लिये। बड़ी तल्ख और काटने वाला स्वाद है इसका। अब लगा आशा का हल्का सा प्रभाव मुझ पर होने लगा है। सुखद लगता है। हाथ बढ़ा टेबल पर रखे ट्रांजिस्टर को चालू कर फिल्मी गाने

से खेलने लगे थ। अगुलियो से सहलाते रहे थे। उन्हें तेज नशा हो आया था। मेरे शरीर पर लगा था अनगिनत चीटिया रेंगने लगी थी। इस बार मैंने वश को उन पर पूरा दबा दिया था। व मदमस्त हो गये थ। धीरे स अस्फुट शब्दो म बोले—

कितना सभाल कर रखा है तुमने इनको। अच्छा लग रहा है। एक हाथ अभी भी मेरे वक्षस्थल पर यहां स वहां चल रहा रहा था। ऐसा लगता था उन पर काम का भूत चढ़ा हुआ था। एक तेज तूफान उनमे उठा और शान्त हो गया था। उन्होंने अपना सिर मेरी गोद म रख लिया था। कुछ देर उनके हाथ हल्के-हल्के मेरे शरीर पर यहां से वहां चलते रहे फिर रुक गये थ। अब व सामान्य रूप से लेटे, तेज नशे मे डूब नींद लेने लगे थे। मुझमे उनकी आयु देख कर एक अजीब दया का भाव उमडा था। फिर बिना किसी सकेत के अपना सिर पीछे सीट पर टिका लिया था। 

पच्चीस

सुबह से शाम होने आई पूरा समय हाईकमान के महामंत्री, कार्यालय, केन्द्रीय मंत्रीमंडल के यहां एक के बाद एक मिलते-मिलते ही दिन पूरा हो गया। दिन में दस मिनिट भी विश्राम करने को कहीं नहीं मिले। जिनसे भी मिले नीचन्दीबाबू ने राज्य मंत्रीमंडल में मेरे कार्य को महत्वपूर्ण एवं निष्ठा से किया जाना बताया। उन्होंने तो महामंत्री को यहां तक भी कहा कि वर्तमान में मैं राज्य की राजनीति में उनके लिये दायें हाथ के रूप में काम कर रही हूं। नीचन्दीबाबू के केन्द्रीय हाईकमान कार्यालय में, मंत्रीमण्डल के लोगों के साथ गाढ़े सम्बंधों को अपनी आंखों से देखा लगा उनकी हर बात को वह लोग पूरी गंभीरता से ले रहे हैं। गये दिनों हरिबाबू की पूंजीपतियों के साथ रहे गठबंधन को भी पार्टी हाईकमान के सामने उन्होंने अनुचित और पार्टी की छवि को धूमिल करने की कार्यवाही बताया। उनकी इस बात पर पार्टी द्वारा कठोर कदम उठाने तक की बात कही गई। सारी बातचीत नीचन्दी बाबू के तरीकों को मैंने बारीकी के साथ समझा और परखा था।

रात के दस बजने को हैं। नीचन्दीबाबू राजधानी में किसी वरिष्ठ नेता से मिलने गये हुये हैं। अतः वे जिन लोगों से मिलने का कार्यक्रम बनाकर आये हैं उसे पूरा करने में लगे हैं।

दिन भर की थकान से नींद नहीं आ रही। पैरों में तेज दर्द हो गया है। नीचन्दीजी का बैग खोल उसमें रखी उनकी आशा की बोतल निकाल टेबल पर रखे ग्लास में एक कड़ा पैग बना तेजी से गले के नीचे उतार लेती हूं। शायद इससे ही नींद आ जाये। तकिया लगा लेट जाती हूं। कमरे में लगी वातानुकूलन की मशीन के गर्म हवा के झोंके काटती सर्दी में भले लग रहे हैं। बेचैनी सी अनुभव कर रही हूं। बिस्तर पर लेटे लेटे हाथ बढ़ा टेबल पर रखी बोतल से एक बड़ा पैग और तैयार कर पी जाती हूं। नीचन्दी बाबू की तरह धीरे-धीरे पीना कठिन है मेरे लिए। बड़ी तल्ख और काटने वाला स्वाद है इसका। अब लगा आशा का हल्का सा प्रभाव मुझ पर होने लगा है। सुखद लगता है। हाथ बढ़ा टेबल पर रखे ट्रांजिस्टर को चालू कर फिल्मी गाने

अब तुम्हारी कार्यशैली नेतृत्व के तरीका से ही ईर्ष्या होने लगी है उसे। जब भी मौका मिलता है तुम्हारी बुराईयां शुरू कर देता है। मुझे ऐसे दोगले लोग अच्छे नहीं लगते। क्योंकि आज तुम्हारी बुराई कर रहा है अवसर आने पर मुझे छोड देगा ऐसा नहीं है। ऐसे लोगों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। लाग्रा, बोतल तो उठा दो जरा।

हाथ बडा टेबल से बोतल उठाकर देती हू। वे चौथाई अधिक पी जाते हैं और नीचे फर्श पर लुढका देते है। बोल पडते हैं—

साहिला। पार्टी के महासचिव कह रहे थे मुझे केन्द्रीय मंत्रीमण्डल मे लिये जाने की बात चल रही है। मैंने कोई रुचि नहीं दिखाई उसमे। बेकार है अधिक जिम्मदारियां उठाना। अभी ही कितना काम है। पूरे राज्य का काम संभाल रखा है। पार्टी का काम भी उतनी ही निष्ठा से करता हू। यही क्या कम है। साहिला। नींद आ रही है तुम्हे।

हां तेज नशा आ रहा है। आप भी सो जाईये ना अब।

अभी कहां सो पाऊंगा। मैं भी बकार की बातें लेकर बैठ गया। तो इधर मुंह करो। ऐसे कैसे सोया जा सकता है। अभी तो हमारी प्यास बाकी है।

अब कुछ नहीं नौचन्दोजी। थक गई हू दिन में मैं। आप भी सो जायें।

लो कम्बल डाल लो।

मेरे पर कम्बल डाल दिया है उन्होंने। मेरे से सटकर सो गये हैं। ☼

सुनने लगता हू । तब ही दरवाज पर लगी घण्टी बज उठती है । उठ दरवाजा खोलन जाती हू । मेर पैरा म तेज लडखडाहट शराब के नशे के कारण आ गई है । दरवाजा खोलती हू । सामन नीच दोजा शाल श्रोढ खडे हैं । उन्होने पास ही खडे अपने सचिव को उसके कमर म जा आराम करन का निर्देश दिया । फिर कमर म प्रवेश करत दरवाज को अन्दर स बन्द कर लत हैं । उनकी दृष्टि टेबल पर जाती है मुस्कराते पूछते हैं—

अच्छा तो हमारे स्वागत की तैयारिया चल रही हैं । मैं भी यही सोच रहा था । लाओ हम भी दो-चार पैग बना दो ।

मुझम अधिक शक्ति लगती नही कि उनके लिये पैग भी बना सकू । फिर भी कोशिश करती हू । मेरा हाथ स्थिर नही है । सो शराब ग्लास की जगह टेबल पर फैल जाती है । उधर नीच दोबाबू शाल उतारत मरी हालत दख लेते हैं । प्यार से कहते हैं—

तुम लेटो । तुम्हारे बस की बात नही है मैं ही ले लूगा । तुम तो बिल्कुल तैयार होकर बैठी हो । मेरे पास पलग पर बैठते थैले स दूसरी बोतल निकाल, खोल साधे मुह म लगा लेते हैं । गटगट कर आधी से अधिक बोतल खाली कर दी है उन्होंने । धीरे से टेबल पर रखने के बाद मरी ओर मुडकर कहने लगे—

केन्द्रीय वित्त मत्री और योजना आयोग के अध्यक्ष से मिलकर आ रहा हू । हमारे प्रात को चार सौ करोड रुपये केन्द्र सरकार और देगी यह निश्चय हुआ है । तुम साथ आई हो तो धन तो अपने आप दौडा चला आयेगा । पार्टी के महासचिव से तुम्हारा मिलना आवश्यक था । सम्बन्ध इसी तरह बनत हैं । कुछ लोग यहा तुम्ह जानने लगे हैं और हमारा भी प्रभाव देख ही लिया होगा तुमने ।

गहर सम्ब ध और प्रभावशाली प्रभामण्डल बना रखा है आपने यहा ।

सब करना पडता है ।

एक बात समझ नही आई हरिबाबू के लिये आपका विरोध जसा स्वर क्यो था ।

छोडो भी उनकी बात । पू जीपतियो के साथ खुले तौर पर सम्ब ध रखन वाला आदमी घातक होता है । पार्टी के प्रति निष्ठा हमेशा सदिग्ध ही रहती है उसकी । उसने तुम्हारा नाम मुझे सुझाया, तुम्ह चुनाव लडवाया सब किया

अब तुम्हारी कार्यशैली, नेतृत्व के तरीके से ही ईर्ष्या होने लगी है उसे। जब भी मौका मिलता है तुम्हारी बुराईयां शुरू कर देता है। मुझे ऐसे दोगले लोग अच्छे नहीं लगते। क्योंकि आज तुम्हारी बुराई कर रहा है अवसर आने पर मुझे छोड़ देगा ऐसा नहीं है। ऐसे लोगों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। लाओ, बोतल तो उठा दो जरा।

हाथ बढ़ा टेबल से बोतल उठाकर देती हूं। वे चौथाई अधिक पी जाते हैं और नीचे फर्श पर लुढ़का देते हैं। बोल पड़ते हैं—

साहिला। पार्टी के महासचिव कह रहे थे मुझे केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में लिये जाने की बात चल रही है। मैंने कोई रुचि नहीं दिखाई उसमें। बेकार है अधिक जिम्मेदारियां उठाना। अभी ही कितना काम है। पूरे राज्य का काम संभाल रखा है। पार्टी का काम भी उतनी ही निष्ठा से करता हूं। यही क्या कम है। साहिला। नींद आ रही है तुम्हें।

हां तेज नशा आ रहा है। आप भी सो जाईये ना अब।

अभी कहां सो पाऊंगा। मैं भी बेकार की बातें लेकर बैठ गया। लो इधर मुंह करो। ऐसे कैसे सोया जा सकता है। अभी तो हमारी प्यास बाकी है।

अब कुछ नहीं नींद दीजी। थक गई हूं दिन में मैं। आप भी सो जायें।

लो कम्बल डाल लो।

मेरे पर कम्बल डाल दिया है उन्होंने। मेरे से सटकर सो गये हैं। ❋

छब्बीस

वित्त श्रायोग के श्रध्यक्ष से मिलने के बाद मैं श्रौर नौबन्दीबाबू पार्टी के महासचिव के कार्यालय पहुंचे हैं। विभिन्न राज्यो से श्राय पार्टी पदाधिकारियो म निर्देश के रूप मे वे कुछ कह रह हैं। उनकी बातचीत के बीच हम दोना अदर जाना नही चाहते। वैसे महासचिव ने नौबन्दीबाबू को देख लिया था। दोनो बाहर रखे मुड्डो पर जा बैठते हैं। मुख्यमन्त्रीजी किसी बात पर गभीरता स सोचने लगे ह। उनका सारा ध्यान स्वय के विचारो म लगा हुग्रा है। श्रन्दर बैठे लोग ब हर श्रा गये हैं। घटी बजाकर महासचिवजी ने हम श्र दर बुलाया। दोनो उठकर श्रन्दर जाते हैं।

श्राईये नौबन्दीलालजी। कैसे चल रहा है श्रपका राज्य काय। इनका परिचय।

यह साहिनाजी ह। हमारे म श्रीमण्डल की दवग सदस्या। इनके पास गृहमन्त्रालय जसा महत्वपूण विभाग भी है।

श्रासन लगता है बडी जाच-परख के बाद इनका चयन किया है। श्राकपक व्यक्तित्व है। श्रापके प्रदेश के समाचार मिलते रहत है। आपके मत्री-मण्डल म दो-एक सदस्य श्रभी श्रौर हैं जो श्रापकी छवि पर यदाकदा कीचड उछालते रहते है। लगातार इस प्रकार के समाचार हाईकमान्न को मिलत रहते ह। उन लोगो को ठीक करन की जरूरत है।

भुवनशजी। करने दीजिये। श्रपनी सीमा को व जानत हैं होना-जाना तो कुछ नही है। पर कुछ लोगो का स्वभाव ही विरोध करन का बन जाता है। प्रत्येक बात किसी भी काम से सतुष्ट नही रह पात व लोग। उन्ह पार्टी की छवि तक का ध्यान नही रहता। बिना सिर-पर के उटपटाग ढग से कुछ भी बोलते रहना उनकी आदत हो गई है। कई बार समझाता ह पर उनके कानो पर जू तक नही रेंगती। हरिबाबू को ही लो पूजीपतियो के साथ शुरू से गठबन्धन करने के हजारो श्रारोप हैं उन पर। लाखो करोडो रूपयो के घोटाला मे उनका सठ लोगो के साथ उनका नाम जुडा हुग्रा है। मैं भी देख

रहा हू कितनी उखलकूद करते है यह लोग। सीमा से बाहर होने पर एक मिनिट भी नहीं लगाऊगा निकालने म।

आपके इस स्वभाव से पूर्णत परिचित हैं हम लोग। ऐसा होना भी चाहिए। बीमार और फिजूल के लोगो को कब तक घसीटा जा सकता है। इन दिनो यहां आपके केन्द्र सरकार मे आने की जबरदस्त बात चल रही है। नित नई बाते सुनता रहता हू।

मुझे तो क्षमा करें भुवनेशजी। अब बुढ़ापे मे क्या कर पाऊँगा। वही कई समस्यायें हैं। मुझे लगता है इस समय मेरी यहाँ अधिक आवश्यकता है।

आपकी आयु की बात तो अवश्य समझ आती है लेकिन पार्टी मे रही आपकी सेवाओ, आपके अनुभव का लाभ हाईकमान को मिलै इसमे अनुचित कुछ भी नहीं है। पी० एम० ने पार्टी ऑफिस म सारे महामन्त्रियो से इस सम्बन्ध मे दो-तीन बार बातचीत भी की है।

भुवनेशजी, आप हमारे राज्य के लिए भी तो सोचिये। क्यो साहिला।

हा। आपका राज्य मे रहना श्रेयस्कर होगा। भुवनेशजी। सी० एम० साहब ठीक कह रहे हैं।

देखिये, अच्छा हुआ आपसे बात हो गई। पी० एम० से भी इस सम्बन्ध म अपने ढग से बातचीत करूगा। आपको केन्द्र में ल लेते और वहा किसी और को काम सभला देत।

मेरे वश की बात अब नहीं रही। आयु का प्रभाव पडे बिना कहाँ रहता है।

अजी, नीच दोजी। आप पर कौन सा प्रभाव आ पाया है उम्र का। आपके राज्य का काम तो साहिलाजी ही सभाल लेंगी। इस पर तो भरोसा है ना आपका।

वह तो ठीक है। इनका ज्यादा अनुभव नहीं है राजनीति मे।

नीच दोवाबू वैसे पी० एम० खुद चाहते है पार्टी और राज्य सरकारो के अधिक से अधिक स्थानो पर नवयुवको को अवसर दिया जाये। उसमे उनकी भावना यही हैं कि सैकण्ड लाईन लीडरशिप भी साथ-साथ बनती जाये।

विचार अच्छा है। इसमे व्यावहारिक परशानियाँ अधिक लगती हैं मुझे। नवयुवको का हाल तो जानते ही ह आप। सेवा के नाम शून्य हैं सबके सब। कम काम करके अधिक प्राप्त करने की भावना कूट-कूटकर भरी है हम लोगो मे।

नीचन्दीजी, आपकी-हमारी जैसी भावनाएँ कहाँ है अब। आप तो जानते ही हैं हमारे समय मे कितना काम, जिम्मेदारियाँ होती थीं। बदले में हमने किसी चीज की कभी आशा की ही नहीं। अपना मिशन था देश को स्वतंत्र कराना, फिर लोकतन्त्र की स्थापना। अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफलता भी रही हमारी। साहिलाजी, मैं और नीच दीबाबू दो बार जेल में साथ थे। स्वतन्त्रता आंदोलन के समय हम लोगों पर पागलपन छाया हुआ था।

साहिला नहीं समझ सकती उन बातों को। इन लोगों को क्या मालूम कि कैसी कुर्बानियों के बाद देश आजाद हुआ। कई-कई महीने हम घर पर नहीं गये। कोई सूचना तक नहीं रहती थी हमारी घर वालों को। पर सब मिलाकर हमेशा मस्ती का आलम छाया रहता हम लोगों पर। कभी सोचा भी नहीं था कि हमारे पूरे जीवन के बलिदान के बाद हमें क्या मिलेगा। सच देखा जाये तो मिला भी क्या। अभी भी दिन रात जनता की सेवा ही कर रहे हैं। लगता है यह जन्म तो सेवा करने को ही लिया है हमने। भुवनेशजी। आपका बड़ा लड़का क्या कर रहा है इन दिनों।

बड़ा और छोटा क्या दोनों अमेरिका में रहते हैं। वहीं उद्योगों में लगे हुए हैं। यहां पाँच-सात साल में एकाध-बार आते हैं। अभी तीन साल पहिले उनकी माँ शान्त हुई तब आये थे। बस एक पुत्री है जो चार छः महीने में सभाल जाती है। घर मे अकेला ही हूं। देर रात तक यहीं कार्यालय में बैठा काम निबटाता रहता हूं। बाकी दो-चार घण्टे नींद लेने के बाद नये दिन के साथ यही गोरखधंधा शुरू हो जाता है। आज तो आप लोग यहीं हैं। शाम को मेरे साथ ही भोजन करें। नीच दीजी गये बार आये थे तब स्वदेशी छोड़ देने की कह रहे थे। ले रहे हो या छोड़ दी।

कहाँ छूटती है भुवनेशजी।

और आप देवीजी।

यह भी चख लेती है। पर अधिक नहीं।

वह तो समझ गया था मैं। आपके साथ रहने वाला कोई भी कैसे बच सकता है। अच्छा है मन बहल जाता है आपका भी।

हाँ, यही समझ लो।

तो शाम का निश्चित हुआ आप दोनों मेरे यहां ही भोजन करेंगे।

सोच लेंगे।

ऐस नही। निश्चित करो। आपके लिये विशेष व्यवस्था करानी होगी मुझे।

आपका आग्रह है। टाल भी नही सकता मैं और काम क्या है आज आपको।

कुछ विशेष नही। थोडी देर के लिये पी० एम० हाऊस जाऊगा। पी० एम० ने मीटिंग रखी है। मुश्किल से एक घण्टे म आ जाऊगा। उसके बाद सीधे घर। आपका क्या कायक्रम है।

कोई विशेष नही। साहिलाजी को कुछ खरीददारी करनी है कनाट प्लेस के खादी भण्डार से। कुछ देर घूमेगे फिर आपके यहा पहुच जायेंगे। आठ-साडे आठ बजे ही पहुच जायेंगे।

बिल्कुल ठीक है। मैं भी नौ बजे के आसपास ही घर पहुच पाऊगा।

तो हमे आज्ञा दीजिये। ताकि हम लोग भी घूमते-फिरते अपने काम पूरे कर लें। शाम को आ रहे हैं हम।

फिर चलिये आप लोग। मैं भी दो-चार लोग बाहर बठे हैं उनसे बात कर लू। आज का समय दे रखा था इन लोगो को। दूर के राज्यो से आये हुये ह।

अच्छा, नमस्कार।

साहिलाजी, आप भी आमन्त्रित ह भोजन पर।

धन्यवाद। जरूर आऊगी।

हम आ गाडी मे बैठ गये हैं। नौच दीबाबू ड्राईवर से कहते हैं—

हुसन। कनाटप्लेस वाले खादी भण्डार ले चलो।

हमारी कार तजी से चल दी है। नौच दीजी के चेहरे पर मुस्कान है।



सताईस

शाम के आठ बजे होंगे। खादी भंडार से खरीददारी करने के बाद ब्यूटी पालर से निवृत्त हो नीचन्दीबाबू के पास आ गई थी। उन्हें अपने कुछ जरूरी काम निबटाने थे। इसलिये उन्होंने गाडी मुझे दे दी थी। मुझे देख नीच दी बाबू ने मुस्कराते कहा था—

तुम्हारा तो रूप ही बदल गया। कहां से आ रही हो।

थोडी देर कनाटप्लेस के ब्यूटी पालर में ठहर गई थी। साडी भी वहीं बदल ली। सोचा भुवनेशजी के यहां चलना है सो कपडे बदल लूं मैं।

बडी समझदार हो। बैठो एक एक पैग ले लें फिर चलेंगे। भुवनेशजी भी नौ बजे से पहिले तो लौट नहीं पायेंगे। जल्दी जाकर भी क्या करना है वहां। बैठो और पैग बना दो बढिया से।

नीचन्दीजी बैठे अपनी स्वदेशी की बोतल से पी रहे थे। उनके आग्रह पर पलंग पर बैठे दो पैग पूरे मन से तैयार किये। एक उनकी ओर बढा दिया।

लीजिये।

और तुम्हारा पैग कहां है।

मेरे पास है। आप तो लीजिये। मैं भी ले लूंगी।

ऐसे नहीं। अपने हाथों से पिलाऊंगा तुम्हें।

मेरी ओर झुकते स्वयं के हाथ वाला ग्लास मेरे मुंह पर लगा दिया और मेरी आंखों में देखते रहे थे।

अधिक देर मत करो। ग्लास खाली कर डालो एकदम।

उन्होंने स्वयं के हाथ को ऊंचा कर पूरा ग्लास पिला दिया था मुझे। धीरे से बोले—साहिला। सौंदर्य के साथ नशा भी जुड़ जाय तो आनन्द सौ गुना बढ़ जाता है। तुम्हारा रूप और शराब मिलकर क्या हो जाता है शब्दों में नहीं कह सकता मैं। इसे बस महसूस ही किया जा सकता है। तुम जब

पास होती हो तो कई बोतलो का नशा तो बिना पिये ही हो जाता है। तुम्हारी ग्राखो मे हजार सागरो का नशा है।

ग्राप तो शायरी भी जानते है नीचन्दीजी। बिना वजह तारीफ कर रहे है ग्राप तो।

साहिला। शायर नही होने का दुख ज्यादा है। हम शायर या कवि होते तो तुम्हारी तारीफ मे इतना कह देते कि किसी ने ग्राज तक न तो किसी सुन्दरी के लिये कहा होगा न कोई भविष्य कह ही पाता। लो ग्रब तुम ग्रपने हाथों से हमारी प्यास बुझाग्रो। बडा पैग बनाकर दो। साथ ही थोडा पास ग्रौर हो जाग्रो। जिससे तुम्हारे रूप का नशा भी हम पर हो जाये।

लो पिया। ग्रापके पास हो तो हू।

नही। कहा पास हो। जिसे तुम पास कह रही हो वह तो शरीर से है मैं तो चाहता हू मेरी ग्रात्मा के साथ जुड जाग्रो। शरीर से पास तो हो ही तुम।

इसके साथ ही नीचन्दीजी ने दोनो बाहो मे भर लिया था मुझे। फुस-फुसाने के ढग से कहने लगे—

साहिला। तुम खुद एक कविता हो, महाकाव्य भी कह दू तो गलत नही होगा। वैसी ही नाजुकता, लचक, खुशबू तुम्हारे मे है। कितनी सरस हो तुम। कविता मे कमी लग सकती है नीरसता ग्रा जाये पर तुम हमेशा एक सुन्दर कृति ही बनी रहोगी विश्वास है मुझे।

लगातार मेरा ललाट चूमते रहे थे। ग्रचानक उनकी दृष्टि दीवार घडी पर गई। चौकते से कहते है—

सवा नौ बज गये साहिला। चलें। समय हो गया। भुवनेश बाबू भी लौट ग्राये होगे ग्रब तक।

ग्रब रहने भी दीजिये। यही ग्रच्छा लग रहा है। क्या करगे वहा जाकर कल चले चलेंगे।

ऐसा नही होता साहिला। भोजन का कह दिया था उन्हे। नही जायेंगे तो बुरा मानेंगे वे। पार्टी के महासचिव भी हैं। इतना तो शिष्टाचार रखना पडता है उनके साथ।

चलिये फिर। ग्रधिक देर नही करें।

ग्राग्रो चलें।

लडखडाते से उठे थ व। गलियार म चलते हुए बिल्कुल सतुलित हो ग्य थे। ध्यान से देखन पर ही अन्दाजा लगाया जा सकता है कि उन्होने पी रखी है। सीढ़िया म उतरते मेरे कन्धे पर हाथ रख लिया था उन्होने। नीच पोच मे खडी गाडी म जा बैठ थ। हुसैन केन्टीन म खडा चाय पी रहा था। चाय छोड हमारे पास आ गया।

कहा चलना है साहब।

नाथ एवेन्यु भुवनशजी के यहा चलेंग। तुम तो कई बार चल थे। रास्ता याद है ना तुम्ह।

जी हा याद आ गया महासचिवजी के यहा चलना है ना।

बिल्कुल ठीक जगह पहुच गये हो हुसैन। देर मत करो। तेजी से चल चलो।

गाडी चल दी थी। गोल मार्केट से होते क्नाटप्लेस, कर्जन रोड से होत हमारी गाडी निकल रही थी। नौच दोजी, पिछली सीट का सहारा ले बाहर पीछे छूटती दुकानो को एक टक देखे जा रह थे। उन्होने मेरा एक हाथ अपन हाथो मे ले रखा था। बैठे हल्के, कभी जोर से दबाये जा रहे थे। उन्ह सुखद लग रहा था। आगे खुली चौडी सडक पर बाएँ हाथ की सडक पर मुड गई थी। कुछ आगे चल रुक गई। कोठी के बाहर लगी बडी नेमप्लेट पर लिखा था— भुवनेश त्रिवेदी। नौचन्दीबाबू दरवाजा खोल बाहर निकल गये थे।

आओ, साहिला। भुवनेश बाबू भी आ गये हैं। उनकी गाडी अन्दर ही खडी है।

दोनो कोठी से बरामदे तक पहुचत ह। नौच दीबाबू ने घटी बजाने का सकेत किया। घटी बजी। दरवाजा खोलत बूढे ने पूछा—

किससे मिलना है आपको।

भुवनेशजी से।

अरे। नौच दीबाबू हैं आप। माईय। बूढा हो गया हू मो साफ दिखाई नही देता रात को मुझको।

क्या कर रहे हैं भुवनेशजी।

अपने कमरे म बैठे फोन पर बात कर रहे हैं किसी से। आपक आगे-आग तो आये ही हैं। चलो अदर।

बाहर हवा मे तेज ठडक है। तोनो अन्दर घुस आये हैं।

इधर बैठे हे भुवनेश बाबू। अदर चले आओ। हम भोजन की व्यवस्था म लगे हैं।

हम दोनो कमरे मे प्रवेश करत हैं। भुवनेशजी की दृष्टि नौचन्दीजी पर जाती है।

आईये। नौचन्दीबाबू, साहिला जी। बैठिये। देर करदी आने मे। साढे आठ ही आने वाले थे आप लोग।

हा। देर हो गई। साहिलाजी को खरीददारी मे बहुत देर लग गई। फिर हम भी थोडा आराम करने लग गये। आप कब आये पी० एम० हाऊस से।

नौ बजे के आसपास ही आगया था। पी० एम० तो छोड ही नही रहे थे। फिर उन्ह घर पर दो-तीन मुख्यमन्त्रियो को मिलने का समय दे रखा है वह कर ही आ पाये है हम तो। आपकी स्थिति के बारे मे कह दिया है उनको। आपको केन्द्र मे लिये जाने वाली बात अब खत्म सी ही समझें आप।

यह अच्छा किया आपने। मेरी वाली बात पर क्या कह रहे थे पी० एम०।

वह तो कहते ही रहते हैं। हमने आपको सकट से उबार दिया इतना ही समझ लें बहुत है।

अच्छा किया आपने। भोजन की व्यवस्था तो हो चुकी है। चलें।

एक तो देर से आये। आ गये हैं तो मेजबान पर छोड दें कि आप कब तक भोजन कर पाते हैं। वैसे आतिथ्य मे कोई कमी नही रहेगी विश्वास करें आप। पहिले एक-दो दौर हो जाये उसके। साहिला मेरी टेबल की दराज मे दो बोतलें रखी हैं एक निकाल लाओ।

टेबल की दराज मे रखी एक बोतल निकाल लाती हू। नीचे गद्दो पर ही बठत हैं सब। एक एक ग्लास बना दोनो को देती हू। भुवनेशजी मेरी ओर देखत कहते हैं—

आप भी तो एक ग्लास उठाईये। हमारा साथ तो देना ही पडेगा।

मेरी ओर से बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये नौचन्दीजी को कहते हैं—आप ही कहिये इनको।

साहिला । एक ग्लास खुद के लिये भी तो बना लो । भुवनेशजी तो दो-चार खास लोगों के साथ पी लेते हैं । इनको अधिक शौक नहीं है । तुम बेकार ही हिचकिचा रही हो । लाओ मैं बना दूँ तुम्हारे लिये ।

आप लीजिये । मैं बना लूँगी ।

तीनों ग्लास टकराते हैं । नौचदीजी ने भुवनेशजी के दीर्घायु होने की बात कही ।

लो । एक-एक ग्लास और बना दो साहिला ।

एक दौर और खत्म हुआ । तब भुवनेशजी बोले –

चलो भोजन करें अब ।

तीनों उठ भोजन कक्ष में चले गये । वहाँ बैठ भोजन करने लगे । उससे निवृत हो भुवनेशजी के कमरे में आये तब नौचदीबाबू ने कहा—

अब चलेंगे भुवनेशजी । समय हो गया हमारे आराम करने का । आप भी आराम करें ।

नौचदीबाबू ठीक कह रहे हैं आप । सुबह जल्दी एयरपोर्ट जाना है मुझे । पी० एम० विदेश जा रहे हैं कल । उन्हें विदा करने जाना है । आप गाडी में चलकर बैठिये । साहिलाजी से बात करनी है मुझे ।

जरूर करिये ।

कहते नौचदीबाबू जा गाडी में बैठ गये थे । भुवनेशजी मेरी ओर बढ़े और बोले—

अगली बार आओ तो जरूर मिलना । आज तो हम व्यस्त थे । फिर आपके प्रदेश की राजनीति पर तुमसे चर्चा करूँगा । नौचन्दीबाबू का प्रदेश के विधायकों, पार्टी के अन्दर-बाहर जितना विरोध है उतना किसी भी प्रदेश के मुख्यमंत्री के साथ नहीं है । पुराने आदमी हैं निबाह रहे हैं इनका । यहाँ दिल्ली में बैठा इनकी वकालत करता रहता हूँ । वरना पी० एम० तक दुखी हैं इनके कारनामों से । अधिक कुछ कह भी नहीं सकते । वहाँ रामबलि जैसे प्रभावशाली व्यक्ति से बिगाड रखी है उन्होंने । वह तो हमने ही नकेल डाल रखी है उसके वरना दो दिन में खदेड कर रख दे इनको । जैसे तैसे गाडी चला रहे हैं । अगली बार जरूर मिलना ।

अवश्य मिलूँगी । चलूँ । नौचदीबाबू प्रतीक्षा कर रहे होंगे ।

हां। रामबलि पाण्डेय को कहना मिलने बुलाया है मैंने। उसको जाते ही भिजवा देना।

कह दूंगी। अच्छा, नमस्कार।

नमस्कार। भाई नौच दीजी।

मेरे गाडी मे बैठते ही गाडी चल दी थी। नौचन्दीजी ने पूछा—

और क्या कह रहे थे भुवनेशजी।

कुछ विशेष नही। कह रहे थे प्रदेश का काम निष्ठा से करू मैं। साथ ही आपको पूरा सहयोग करने का कह रहे थे।

पुराने मित्र हैं। अभी तुम राजनीति मे आई हो तो उनका मार्गदर्शन भी जरूरी है। धीरे-धीरे सब सीख जाओगी। वैसे भुवनेश बाबू मुझसे थोड़े नाराज हैं।

आपसे नाराजगी क्यो हैं।

अपने प्रदेश के रामबलि पाण्डेय इनका भतीजा है। उसे मन्त्रीमण्डल से हटा दिया है। वह अक्सर इनसे मिलता रहता है। यह भी लगातार जोर डाल रहे हैं किसी निगम मे ही उसे अध्यक्ष बना दूं। इस बार वहां चलने पर सोचेंगे। उसका भी कुछ कर ही दें। इनको नाराज करना भी उचित नही है। लेकिन आगे से रामबलि से मैं कोई बात नही करना चाहता। तुम मेरी सहायता कर सकती हो। रामबलि से चाहे व्यक्तिगत चाहे फोन पर ही बात कर लेना। उसका क्या विचार है, मेरे लिये क्या सोचता है। तुम चाहो तो अपनी तरफ से हां भी कर लेना उसके प्रस्ताव पर। उसके आदेश करवा दूंगा। इससे वह खुश भी हो जायेगा। और तुम्हारा उस पर एहसान भी हो जायगा। मेरी ओर से कह देना कि बिलकुल नाराज नही हूं उससे।

आप कह रहे हैं तो पाण्डेयजी से बात कर लूंगी। वैसे आप जानते ही हैं आदमी टेढा है कुछ।

टेढा तो क्या है उसे तो कोई भी कुर्सी चाहिये हुकुम चलाने के लिये। भुवनेशजी का ही लिहाज सोचता हूं। वरना उसको कैसी भी घास डालने वाला नही मैं। ऐसे कई छुटभैये ठीक कर दिये हैं मैंने।

रामबलि से बात करके देखूंगी क्या कहते हैं वह।

तुम तो कह देना वह साफ-साफ बता दे किस जगह बैठना चाहता है वह। देखेंगे कही से अपना आदमी हटाना भी पडा तो हटा देंगे। पर उसको

तो कहीं बिठा ही देंगे। कल भी भुजनेशजी अलग ले जाकर उसके लिए तो कह रहे थे। वैसे मेरे हाथ से निकल गया वह नहीं तो आदमी बड़े काम का है। पंडित है ना टांग अपनी ही ऊंची रखेगा। अब सब जगह तो ऐसा चलता नहीं। वह गधे-घोड़ा सब को एक ही लकड़ी से हांकना चाहता है। उसे मालूम नहीं अब जनता कितनी जागरूक हो गई है। तुम पर छोड़ता हूं उसकी जिम्मेदारी। दो-चार दिन में उसकी मंशा बता देना मुझको।

बातें करते रेस्ट हाऊस आ पहुंचे थे हम। सीढ़ियां चढ़ते नौचंदीबाबू ने मेरा हाथ पकड़ लिया था। एक सीढ़ी नीचे थे वह मुझसे हर बार। लगा जैसे किसी बच्चे की अंगुली पकड़े उसे अपने साथ सीढ़ियों पर चढ़ा रही हूं मैं। सर्दी और शराब के झोंके में चुपचाप चढ़ते जा रहे थे। अपने कमरे तक आ मैंने दरवाजा खोला। अन्दर पहुंचने पर नौचंदीजी ने पैरों से जूतियां उतार एक ओर फेंकी एकदम कम्बल में घुस गये थे। मैं साड़ी बदलने लगी थी। इस बीच एकाध बार आंखें खोल मेरी ओर उन्होंने देखा फिर सो गये। मैंने भी साड़ी बदली और उसके पास ही बिस्तर पर जा लेटी थी। हाथ बढ़ा पास जलते बल्ब को बुझा दिया था।



अट्ठाईस

अपनी तीन दिन की देहली यात्रा पूरी कर मैं और नौधदीजी लौट आये थे। यात्रा कई दृष्टियों से अच्छी रही। पार्टी के तरीकों, लोगों को समझने का अवसर मिला साथ ही हाईकमान के उच्च पदाधिकारियों से मिलना भी हुआ। इन सब में विशेष बात थी कि रामबलि पाण्डेय देहली में किस प्रकार का प्रभाव रखते हैं यह भी जानने को मिला।

सुबह के कोई दस बजे होंगे। अपने ड्राइंग रूम में बैठी समाचार पत्र देख रही हूं। तभी फोन की घण्टी बज उठती है। उठा सुनती हूं—कौन ..
पाण्डेयजी। नमस्कार। धन्यवाद। हां, यात्रा अच्छी रही। और प्रदेश के क्या हाल हैं। आ रहे हैं आप। मैं घर पर ही हूं अभी बारह बजे तक फिर सचिवालय जाऊंगी। प्रतीक्षा कर रही हूं।

अन्दर घंटी बजाती हूं। नौकरानी आयी है।

दो जगह चाय-नाश्ता दे देना थोड़ी देर में। इला और तुम ठीक से रहना।

जी। मालकिन। खुश हैं हम लोग। बेबीजी खूब याद करती थी आपको।

एकदम बच्ची है वह। उसको मालूम कहां है मुझे कितने काम रहते हैं बाहर। रात-दिन एक हो जाता है।

कार रुकने की आवाज से मेरा ध्यान बट जाता है। देखती हूं। पाण्डेय जी हैं। कार से उतर अपनी मस्त चाल चलते मुझ तक आ गये हैं।

नमस्कार। साहिला जी।

आईये, पाण्डेयजी। कैसे हैं आप।

प्रसन्न हूं। हम तो रोज ही फोन मिलाकर पूछ लेते थे कि आप लौटी हैं कि नहीं। फोन पर आज आपकी आवाज सुनी तो भला गया।

क्यों कृपा तो है ना मुझ पर। रोज क्यों पूछ रहे थे मेरे लिये।

बस यो ही। सत्तापक्ष के मन्त्रियो मे बस आप ही हो जो मुझसे खुलकर बात तो कर लेती हो। बाकी मन्त्री लोग तो बात तक करने मे घबराते हैं। उन्हे डर रहता है कही नौचन्दी बाबू को खबर न पड जाय कि व लोग मुझसे बात तक तो नही करते कही। सब के सब हिजडे और कायर है। दिल्ली यात्रा कैसी रही यह बताईये आप तो। छोडिये यहा की नमक-हल्दी की राजनीति को।

वहा आपके चाचाजी भुवनशजी से मिलना हुआ। उनकी सादगी, उच्च विचारो ने मेरा मन मोह लिया। आपकी बडी तारीफ करते रहे थे।

क्या कह रहे थे चाचा। अच्छा किया उनसे मिल आई आप। पार्टी हाई-कमान, पी० एम० हाऊस तक उनका सिक्का चलता है। आप भी देखती जाईये। इन नौचन्दी बाबू की चिन्दिया नही उडा दी मैंने तो मेरा नाम भी रामबलि नही। मै भी देखता हू ठीक रास्ते पर आ जायें तो कोई बात नही।

आप तो बेकार ही परेशान हो रहे हैं। वहा भुवनेशजी को एक वायदा कर आई हू कि प्रदेश लौटने के बाद एक सप्ताह मे या तो मन्त्री मण्डल या किसी भी निगम में आपको शीर्षस्थ पद दिलाऊगी या मै अपना पद त्याग दूगी।

आप मेरे लिये पद छोडें अच्छी बात नही है। वैसे भी हम आराम मे हैं। आप हो सके तो किसी निगम मे अध्यक्ष ही बनवा दें। हम तो दो रोटी निकाल ही लेंगे वहा से।

आप ही बता दें आपकी रूचि किस मे है।

यह काम रूचि के तो होते नही। जहाँ गोट बैठ जाय वही अच्छा है। उद्योग निगम आपके पास ही है उसी मे अध्यक्ष लगवा दे। नौचन्दीजी जरूर कुछ दाँवपेच करेंगे मैं जानता हू।

उन्हे समझाने का काम मेरा है। और सोच लीजिये।

सोचना क्या है सरकार से आदेश निकलवा दें। फिर देखिये आपके उद्योग विभाग का कैसे तराश देते हैं हम। उधर श्रेयास बाबू का तो पूरा पटरा ही बिठा देते हैं हम चुटकियो मे।

हा। श्रेयासजी के क्या हाल हैं।

वह तो खराब ही हैं। श्रेयास सूटिंग्स तो अग्नि की भेंट हो ही गया था बाद मे श्रेयास सीमेंट, श्रेयास फर्टीलाईजर मिल की तालाबन्दी करवा दी

थी हमने। वीरनगर के लोगो ने श्रेयास के घर जाकर उसके ही पुतल जला दिये। हमारे हत्थे चढ़ा है इस बार वह। देखती जाईये। आपके चरणा मे दस बार नाक रगडेगा आकर। उसने सबको हरिबाबू जैसा लडकीबाज ही समझ रखा है क्या।

पाण्डेयजी, आप तो उत्तेजित हो रहे है व्यथ म ही।

देखिये। साहिलाजी आपका अपमान करने वाले को मैं क्षमा नही कर सकता है। कुछ अपशब्द जरुर निकल गये है मेरे मुह से उनके लिये खेद प्रकट करता हू। चाचा कैसे है।

प्रसन हैं। दिन-रात पार्टी के कामो म लगे रहते हैं। उन्होने हम भोजन पर बुलाया था।

उन्होने नीचन्दीजी को इस बार झाड लगाई या नही मेरी बात को लेकर।

आपके लिये जरुर कहा था उन्होने। पूरी बात तो मै सुन नही पाई थी।

भुवनेश चाचा कहगे कैसे नही। उनका सगा भतीजा लगता हू म। एक बार मुझ पर उबल पडे कहने लगे-रामबलि, हटा साले नीच दी को मुख्यमत्री बन कर बठ जा बाकी मै सभाल लूगा। पर मैंन ही मना कर दिया। मुख्य मत्री बनना और मधुमक्खी के छत्ते मे हाथ डालना बराबर है। अपने आराम से मन्त्री बने रहो और चैन की बासुरी बजाओ। दुनिया भर के सिरदद हैं उसमे। म तो किंगमेकर हू और रहूगा।

वह तो ठीक पाण्डेयजी। पर जिस तरह की जल्दबाजी आप करत हैं उससे काम नही चलता।

कौन सी जल्दबाजी है मरी।

श्रेयासजी के सम्बन्ध म की गई कायवाही। उसम थोडा भी धय नही रखा आपन।

साहिलाजी। जहा उबाल की जरुरत है हमे लगगो वहा रुकेंगे नही हम। यही बात ही हम म है जिससे पार्टी और विपक्ष क मत्री, विधायक घबरात हैं हमारे से। वरना हिजडा की कोई कमी तो नही वहो भी। डके का चोट जो कहते हैं पूरा करके दिखाते हैं। आखिर पाण्डेय कुल म जन्म लिया है हमन। हमार शब्द ही ब्रह्मवाक्य होते हैं।

लीजिये नाश्ता करिये आप।

दोनों बैठे चाय नाश्ता करते रहे थे। इसी बीच एक दूसरी कार आकर रुकती है कोठी में। हरिबाबू निकलते हैं।

हरिबाबू हैं।

कोई बात नहीं पाण्डेयजी। आने दीजिये उन्हें।

नमस्कार, हरिबाबू।

नमस्कार साहिलाजी, पाण्डेयजी।

बैठिये।

जल्दी में हूं। यों ही मिलने चला आया। और देहली में कैसा रहा।

आप बैठिये भी।

नहीं। अभी तो चलूंगा मैं। नीचीवीजी याद कर रहे थे उनसे मिल लेना। आप लोग बैठें।

कहते हरिबाबू तेज कदमों से चलते अपनी कार में जा बैठे। उनके बैठने के साथ कार तेजी से बाहर निकल गई थी।

हरिबाबू, कुछ नाराज लगे यहां मेरी उपस्थिति से क्यों साहिलाजी गलत तो नहीं कह रहा मैं।

उनकी नाराजगी और प्रसन्नता से क्या होता पाण्डेयजी। आप पार्टी के प्रभावशाली विधायक हैं आपसे मिलकर पार्टी हित की कोई भी बात तो की ही जा सकती है। नीचीवाबू भी नाराज होते हैं तो मुझे क्या फर्क पड़ता है। संभालो अपनी दुकान। मैं अपने काम में अनावश्यक दखल पसन्द नहीं करती।

आपकी इस दृढ़ता का कायल हूं मैं। हमें देखिये मन्त्रीमण्डल में रहें नहीं रहें कैसा भी दुख नहीं हमें। रामवलि पाण्डेय आज भी उतना ही अलमस्त है। साहिलाजी। अब चलेंगे हम। उद्योग निगम वाले काम को भूल मत जाना आप।

पाण्डेयजी। वह आपका नहीं मेरा काम है। समझिये हो चुका वह काम। कल ही देख लें समाचार पत्रों में अपना नाम आप।

देखते हैं। अच्छा चलते हैं।

ठीक है। मुझे भी नौच-दीजी से मिलने जाना है।

रामबलि कार मे जा बैठे है। कार चल देती है। उसमे ड्राईवर सीट पर तस्कर शकरसेन बैठा गाडी चला रहा है। मेरे से दृष्टि मिलते ही दोनो हाथ जोड नमस्ते *किया है* उसने। मैने भी उत्तर म हल्के से *अपना* हाथ हिला दिया। कमरे अा वाहर जाने की तैयारी में जुट जाती हू। 

लीजिये नाश्ता करिये आप।

दोनों बैठे चाय नाश्ता करते रहे थे। इसी बीच एक दूम रुकती है कोठी मे। हरिबाबू निकलते हैं।

हरिबाबू हैं।

कोई बात नही पाण्डेयजी। आने दीजिये उ हे।

नमस्कार, हरिबाबू।

नमस्कार साहिलाजी, पाण्डेयजी।

बैठिये।

जल्दी मे हू। यो ही मिलने चला आया। और देहली मे कैसा र

आप बैठिये भी।

नही। अभी तो चलूँगा मैं। नीच दीजी याद कर रहे थे उनस लेना। आप लोग बैठे।

कहते हरिबाबू तेज कदमो से चलत अपनी कार मे जा बठ। उनक के साथ कार तेजी से बाहर निकल गई थी।

हरिबाबू, कुछ नाराज लगे यहाँ मेरी उपस्थिति से क्यो साहिल तो नही कह रहा मैं।

उनकी नाराजगी और प्रसन्नता से क्या होता पाण्डेयजी। प्रभावशाली विधायक है आपसे मिलकर पार्टी हित की को ही जा सकती है। नीच दीबाबू भी नाराज होते है तो है। सभालो अपनी दुकान। मैं अपने काम मे अनावश् करती।

आपकी इस दृढ़ता का कायल हू मैं। हमे रहे कैसा भी दुख नही हमे। रामबलि पाण्डेय है। साहिलाजी। अब चलेंगे हम। उद्योग जाना आप।

पाण्डेयजी। वह आपका नही मेरा काम। कल ही देख लें समाचार पत्रा म

देखते हैं। अच्छा चलते हैं।

ठीक है। मुझे भी नौच-दोजी स मिलने जाना है।

रामबलि कार म जा बठे हैं। कार चल देती है। उसम ड्राईवर सीट पर नस्कर शक्करसेन वठा गाडी चला रहा है। मेरे से दृष्टि मिलते ही दोनो हाथ जोड़ नमस्त किया है उसन। मैंने भी उत्तर म हल्के से अपना हाथ हिला दिया। कमरे आ बाहर जाने की तयारी म जुट जाती [illegible]।

☼

उनतीस

शीघ्रता म तैयार हो नौचन्दी बाबू की कोठी पहुचती हू। बाहर गेट पर खड़े सुरक्षा कर्मचारी स सी० एम० के बारे म जानकारी कर पाच म जा पटो बजाती हू। नौचन्दी बाबू के नौकर न दरवाजा खोला है। म दर जा प्रतीक्षा कक्ष मे बठ जाती हू। कुछ दर बाद व मेरे पास आते हैं। खड़े हो अभिवादन करती हू।

बैठिये साहिलाजी। कस चल रहा है।

कृपा है आपकी।

हरिबाबू का फोन आया था। आगबबूला हो रह थे। रामबलि को तुम्हार यहा देखा होगा उन्होने। कह रह थे पार्टी की जो लोग छवि खराब करने पर तुल हुए हैं उन्ही को आप प्रश्रय दे रहो हैं। बहुत समझाया पर उनकी समझ म नहीं आया। हरिबाबू ने अपना असतोष और तुम्हारे प्रति उनके मन मे दबे असतोष को प्रकट किया उन्होने।

आपके निर्देश पर ही बुलवाया था पान्डेयजी को मन। वरना मुझे क्या आवश्यकता है उनसे मिलने की। इस बात का आपने हरिबाबू स कहा या नही।

क्या कहू उससे। समझना तो चाहता नही वह। उस पर तो उस सठ का भूत जो चढा हुआ है। सुनना ही नही चाहता वह। छोडो हरिबाबू की बात। पान्डेय का क्या हाल है। उसके दिमाग मे कुछ समझ आई या नही या वही ढाक के तीन पात।

नही मेरी बात मान ली उन्होने। उद्योग निगम म अध्यक्ष बन जाने का प्रस्ताव मैंने रखा था। और बिना किसी बहस के तैयार हो गये वह।

अच्छा किया तुमने। कर देंगे।

आज ही आदेश निकलवाने का कह रहे थे।

वह भी हो जायगा। तुम अपन विभाग से एक पनल बनाकर भिजवा दो।

मरी स्वीकृति के बाद आदेश जारी हो जायेंगे। पर एक बार तुम और सोच लो। एसा न हो तुम्हे परशान कर दे वह। आदमी सीधा नही है वह।

देखो जायगी। सब सभाल लूगी। अभी सचिवालय जा रही हू पैनल बनवाकर भिजवा देती हू। आप देख लें। आज ही समाचार पत्रो को उनका नाम चला जाय तो ठीक रहेगा मैंने इस ढग स ही बात की है उनसे। तब ही मेरी बात मान पाये हैं वह।

करवा देंगे। चिन्ता मत करो।

हरिबाबू से भी बात करके देखना। तुमसे बिना वजह ही नाराज क्यो है। पाण्डेय को मेरे कहने से बुलवाया था। तुमने कह देना।

कोई लाभ नही दिखता मुझे। आगे हो इस सम्बन्ध मे कोई बात नही करना चाहती उनस। खुद क्यो नही समझ जाते है वे। पाण्डेयजी पार्टी के विधायक है, आपके कहने से बुलवाकर बात करली तो क्या बुरा हो गया। हरिबाबू जिस छवि की बात करते ह पार्टी की वह तो दिल्ली म आपने देख ही ली। उनकी खुद की तस्वीर साफ नही है वहा पर। प्रदेश की अच्छी बुरी छवि से क्या होता है। हाईकमान क्या सोचता है, इसे नजरअदाज तो नही किया जा सकता।

तुम्हारी बात से शत-प्रतिशत सहमत हू। हरिबाबू इस बात को कहा समझ पा रहे हैं। ऊपर से चाबुक पडा तो ठीक होने म एक मिनिट भी नहीं लगगा।

वसे पाण्डेय मेरे लिये कुछ कर रहा था।

वह भी जिद्दी तो है ही। मैंन खूब ठण्डे छींटे मार दिये है। आपके प्रति उनका विद्रोही स्वर कुछ ढीला पडा है। उद्योग निगम मे लेलें। सरकारी गाडी, थोडा रोबदाब बढ जायेगा तो बिल्कुल ठीक हो जायेंगे ऐसा मानती हू मैं।

वह तो कर ही देंगे। पाण्डेय से एक बार मिलना जरूर चाहता हू।

मेरा विचार है एक-डेढ महीने उन्हे काम करने दें। फिर देखते है शायद व स्वय आपसे मिलने आ जायें।

यह उचित रहेगा। मेरे आगे हो मिलने का अर्थ कहीं मरी कमजोरी ही नहीं मानले वह। तुम ठीक कह रही हो। फिर भी एक नजर हमेशा उसकी गतिविधियो पर रखना जरूरी है। कोई उल्टी-सीधी बात न कर बैठे वह।

क्या कर पायेंगे वे। जब मन्त्री थे तब ही नही कर पाये तो एक निगम के अध्यक्ष बन जाने से क्या हो जायेंगे। आप पूर्णत निश्चित रहे। मेरा पूरा ध्यान रहेगा उन पर। आप भी थोडा विश्वास मे लेकर काम लें उनसे तो मैं समझती हू हानिकारक तो है नही वह। बस जोश म जल्दी आ जाते है। कुछ बडबोले अधिक है। वे कह रहे थे किसी समय आपके दायें हाथ की तरह काम करते थे वे।

गलत नही कहता वह। पर उसकी ऊटपटाग गतिविधियो से परेशान हो गया था मैं। पाण्डेय होकर कट्टर ढग से तानाशाही चलाना चाहता है और वह भी जनतन्त्र म। सोचता है जैसे चाहेगा हाँक लेगा जनता को। उनके भतीजे रामावतार के दिन रात गुणगान करते रहेंगे। जो बदमाश और हिस्ट्रीशीटर है। कोई पचास बार तो उसको, उसके गिरोह के लोगो को पुलिस से मैंने छुडवाया। पता नही इतनी हिम्मत कैसे कर लेते हैं यह लोग।

हिम्मत तो जवान लोग ही करते हैं जब आपका, रामबलिजी का उसे आशीर्वाद प्राप्त हो।

साहिला। मुझे ही दोष दे रही हो तुम। करें भी तो क्या पार्टी के आदमी या रिश्तेदार जो है वह। अपने बच्चे भी ऐसा करें तो निबाहना ही पडता है। हा, सुनो। आज रात्रि को एक दिन के लिये देहली जा रहा हू। वहा मुख्यमन्त्रियो की बैठक है। केन्द्र सरकार ने सभी प्रान्तो के मुख्यमन्त्रियो की बैठक बुलवाई है।

आप हो आयें। लेकिन जाने से पहिले पाण्डेयजी वाला काम जरूर करते जाना। नही तो मेरा सिर खा जायेंगे वे। कठिनाई से तो समझाया है उनको।

वह हो जायगा। तुम भोजन करती जाओ।

नही रहने दीजिये। सचिवालय जाकर पनल बना, उसकी औपचारिकताएँ पूरी कर फाईल भिजवा देती हू।

यह ठीक है। आज यहा घर पर बैठकर सारे पुराने काम निबटाना चाहता हू। सचिवालय जाते ही पहिला काम पाण्डेयजी वाला कर देना।

मुझे आज्ञा दो।

हा। तुम चलो। कोई दिक्कत हो तो फोन पर बात कर लेना मुझसे।



नमस्कार।

खुश रहो।

तीस

गत रात्रि की गहरी नींद से मेरा शरीर और मस्तिष्क तरोताजा और स्फूर्त हो गया था। अन्यथा गये कई दिनों की भागदौड़, यात्राओं की थकान से अजीब बैचेनी सी पैदा हो गई थी।

सुबह के सूरज की रोशनी खिड़कियों से छनकर मेरे कमरे में फैल रही है। बाहर बगीचे से चिड़ियों की चहचहाहट धीरे-धीरे बढ़ने लगी है। कोठी के बाहर की सड़क पर आवागमन भी बढ़ रहा है। अपने बिस्तरों में लेटी छत की ओर देखे जा रही हूं। कोई विशेष उद्देश्य नहीं बस यों ही। नींद खुल गई है। साढ़े-सात, आठ बजे होंगे। सोचती हूं कुछ देर लेटी अलसा लूं फिर तो सारा दिन सामने पड़ा है जिसमें विभिन्न काय करने हैं। पास टेबल पर रखे फोन की घण्टी बज उठती है। कुछ देर तो उठाती नहीं। एक बार बंद होने के बाद फिर से बज उठती है। इस बार उठा सुनती हूं—

कौन। नमस्कार पाण्डेय जी। अजी, धन्यवाद देकर क्यों शर्मिंदा कर रहे हैं मुझे। नहीं-नहीं नौचंदीजी को समझाने की जिम्मेदारी मेरी थी। गये दिन ही प्रेस नोट जारी हो गया था। अब तो प्रसन्न हैं। हां वे दिल्ली गये हैं। घर ही आ जायें, कोई दस और ग्यारह बजे के बीच में। हां, उद्योग भवन चलें, चलेंगे। आपके सम्मान कार्यक्रम में शामिल होकर खुशी होगी मुझे। फोन रख रही हूं आप आ जायें। चाय पर प्रतीक्षा कर रही हूं। नमस्कार।

सोचती हूं पाण्डेयजी को उद्योग निगम में स्थान देकर अच्छा ही रहा। कम से कम सी० एम० साहब का सिरदर्द कुछ तो कम हुआ। इनको लेकर वे अनावश्यक तनाव मस्तिष्क पर बनाएं रखते हैं। बिस्तर से निकल दैनिक कार्यों को निबटाने में लग जाती हूं। अधिक समय है नहीं पाण्डेयजी के आने में।

बाथरूम से निवृत्त हो बाहर जाती हूं। कपड़े बदलती हूं। तब ही फोन की घंटी बज उठती है। कुछ देर नहीं उठाती। पता नहीं किन-किन के फोन आते रहते हैं। घंटी लगातार बज रही है। बालों को ठीक करने के बाद फोन उठाती हूं।

हा कहिये । कौन । गहमन्त्रिव वाल रहे ह । वस तक्लीफ की । वया रह रह हैं तौच दो बाबू की कार दुघटना म मृत्यु हो गई । वहा से मिला समाचार । दिल्ली से वायरलैस मैसेज है । वहुत बुरा हुआ । हा, मैं दिल्ली चली जाती हू । आप भी पहुच रहे हं । नही । एसा मत करिय । आप यहा रहकर राज्य की व्यवस्था देखें । अभी एक घटा यही हू । दावारा सम्पक करें आप । तब तक मैं जाने की व्यवस्था कर लती हू । फान रख रही हू । आप देहली से और विस्तार से जानकारी ल ल । ठीक है ।

मेरी आखो के सामने अधेरा सा छा गया है । अभी कल की ही तो बात है उनसे आराम से बातचीत हुई । कुछ साच नहा पाती । वाहर किसी गाडी के रुकने की आवाज आई, दरवाजा खोलती हू । पाण्डय जी हैं । फोन की घटी वजती है । उठा सुनती हू – कौन गहसचिव जो । हा । कहिये । वहा, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अस्पताल म भर्ती कराया गया था । ठीक है पाच-सात मिनट म ही जा रही हू म ।

आईये । पाण्डेयजी गजब हो गया । नौच दीजी बाबू की देहली मे कार दुघटना म मृत्यु हो गई ।

अच्छा । आपको कहाँ से मिला यह समाचार । दुख की बात है ।

आपके आने से दो मिनिट पहिले ही गहसचिव ने फोन पर बताया है मुझे । पाण्डयजी आकाशवाणी को समाचार भिजवा दो फिर जल्दी स देहली चले चलत है । बहुत बुरा हुआ ।

आकाशवाणी का काम गृहसचिव करते रहगे । हम तो अभी ही चल दत है । मैं घर पर कह देता हू बस ।

कौन । रामावतार । अरे भया इसी समय दिल्ली जा रहा हू । वहाँ नौचन्दीबाबू की कार दुघटना म मृत्यु हो गई है । और बातें अभी नही हो सकती । मेरे आने का निश्चित नही है । देख लू गी । वहा जाकर सारी स्थिति साफ होगी ।

फोन रखने के साथ ही लगातार घटी वजती रही है । हम दोनो म से कोई नही उठाता ।

पाण्डयजी । चाय लीजिये ।

रहन दीजिये । विलम्ब करना उचित नहीं । बस चल दो एकदम ।

अपना सूटकेस उठाने लगती हूं। पाण्डेयजी ने आग्रह कर मेरे हाथ से ले लेते हैं।

मुझे दो। आप क्यों तकलीफ कर रही हैं।

बाहर खड़ी कार में आ बैठते हैं। ड्राईवर बंगले के गेट पर खड़ा पुलिस वालों से बात कर रहा है। साहिलाजी को गाड़ी में बैठते देख दौड़ता आता है।

कहिये मैडम। कहां जाना है।

देहली।

इसी समय चलना है।

रामप्रसाद गाड़ी में बैठो।

जी।

तेजी से हमारी कार मुख्य सड़क पर आ गई है। दुकानों, पान के ठेलों पर खड़े रेडियो पर समाचार सुन रहे हैं। उनके चेहरों पर अधिक जानने का भाव झलक रहा है। कार तेजी से दौड़ती राष्ट्रीय मार्ग पर आ गई है। रामप्रसाद पीछे मुड़ पूछता है—

अचानक दिल्ली का कार्यक्रम कैसे बन गया मैडम।

पाण्डेयजी उत्तर देते हैं – रामप्रसाद, नीरू दीदाबू इस दुनिया में नहीं रहे।

हैं। कैसे हो गया यह।

कार दुर्घटना हो गई है।

राम। राम। बुरा हुआ।

घबराओ नहीं। सीधे दिल्ली जितना जल्दी हो पहुंचा दो।

बस, चल ही रहे हैं।

ड्राईवर ने कार की गति बढ़ा दी है। गाड़ी हवा से बात करने लगी।

रामप्रसाद। ध्यान से जरा। दूसरी दुर्घटना मत कर बैठना।

चिन्ता नहीं करें पाण्डेयजी।

चलते – चलो। साहिलाजी वहां किनसे मिलना होगा।

सीधे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अस्पताल चलना है। वहीं भर्ती करा रखा है उन्हें।

ठीक है।

पाण्डेयजी। सारा मामला चौपट हो गया।

सब ठीक हो जायेगी। अभी पहुंच जाते हैं हम। जो होनी थी उसको कौन टाल सकता है। अब तो साहिला जी आप ही सभालिये प्रदेश के काम को।

मेरे वश की बात नहीं है पाण्डेयजी।

आप बिल्कुल मत घबराईये। हम जो आपके साथ हैं। वहां चाचा भुवनेशजी से भी सलाह कर लेंगे। सच तो यह है कि प्रदेश को नेतृत्व आप ही दे सकती है। और तो सारे के सारे अयोग्य और हिजड़े हैं।

एसा नहीं है पाडेयजी।

ठीक कह रहा हू मैं। वैसे हरिबाबू ने तो भागदौड शुरू भी कर दी होगी। पर जायेंगे कहा वे। हाई-कमान म तो भुवनेश चाचा ही देखेंगे मामले को। वहा पहुचने पर उनकी कमर ही टूट जायगी। वहा चलने पर एक एक चीज साफ हो जायगी। आप तो साहस करके इस चुनौती को स्वीकार कर लें। चाचा से मैं बात कर लूंगा।

पाण्डेयजी, आप ही सभाल लें इस जिम्मेदारी को।

आप समझती नहीं। मेरे नाम पर कई दिक्कतें आयेगी। मेरी रुचि भी नहीं है। मुझे तो किंगमेकर ही बना रहने दें। बाकी आप चाहगी तो सेवा करता ही रहूगा। आपने कम समय म अपनी कार्यशली की जो प्रदेश मंत्री-मंडल, जनता मे छवि बनाई है उन सबको देखते हुए आपको ही इस काम को संभालना चाहिये। मैं और मेरे सहयोगी विधायक आपके इशारों पर काम करते रहेंगे।

रामप्रसाद ने सडक के बाई ओर गाडी रोक ली है। सामने खेत म कुए पर पानी का पम्प चल रहा है।

मेडम। रेडिएटर म पानी डाल लू। गाडी गम हो गई है। आपने अचानक यहा चलने के लिये।

कोई बात नहीं। कर लो।

जल्दी ही काम पूरा कर ड्राईवर अपनी सीट पर जा बैठा और गाड़ी चल दी थी।

साहिलाजी। नीचन्दीबाबू के शव को आज ही ले आयें या कल पर रखें।

इस बारे म तो वहां चलकर ही मालूम हो पायेगा।

भुवनेश चाचा स भी बात कर लेंग इस सम्ब ध मे।

देख लेंगे।

पूरे छ घटे की लम्बी यात्रा के बाद देहली की सीमा म पहुच गये थ हम।

रामप्रसाद, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अस्पताल चले चलो अब।

जी हां।

कुछ ही समय म अस्पताल के अहाते मे कार जा रूकती है। मै और पाडेयजी बाहर आ तेज कदमा स चलते स्वागत कक्ष पर पहुचते है। पाडेयजी वह जानकारी प्राप्त करते हैं। मालूम होता है दो घटे पूव ही उनके शव को पार्टी महासचिव और अ य कायकर्ता आकर ले गये हैं और पार्टी कार्यालय मे जनता के दशनाथ रखा गया है।

पाण्डेयजी और मैं गाड़ी म आ बठते हैं। पार्टी के कार्यालय चलेंगे वहीं लोगो के दशनाथ उनका शव रखा हुआ है।

मुख्यमाग पर आ कार पार्टी कार्यालय के लिये चल दी। 

इकतीस

स्वर्गीय मुख्यमन्त्री का शव विशेष विमान द्वारा प्रदेश के विमान तल पर उतरा। वहां उपस्थित विशाल जनसमूह से नौच दीवानू अमर रहे के नारों से आकाश गुंजित हो गया था। विमान का दरवाजा खुला, उतरने के लिये सीढ़ियां लगा दी गई थी। पुलिस की पूरी व्यवस्था थी। विमान में सर्वप्रथम हरिबाबू महानिरीक्षक, सेना के जवान तेजी से ऊपर बढ़ आये और मुख्यमन्त्रीजी के शव को लेकर धीरे-धीरे सीढ़ियां से उतर विमानतल पर लाये। फूलों से सज्जित ट्रक पर उनके शव को रखा गया। चारों ओर उपस्थित जनसमुदाय, मन्त्रीमण्डल के सदस्य, विधायकों ने एक बार फिर नौच दीवानू अमर रहे के नारों से आकाश को गुंजा दिया। शव को लिये ट्रक धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। पीछे विशाल जनसमुदाय, कारों, जीपों को दूर तक दिखने वाला काफिला चलने लगा। लगातार नौच दीबाबू अमर रहे के नारों से आकाश गूंज उठता था। सड़क के दोनों ओर खड़े नागरिकों की भीड़ देखा जा सकती थी। ट्रक के ऊपर आगे की ओर हरिबाबू, रामबलि पाडेय, माहिला देवी दिखाई दे रहे थे जो नागरिकों द्वारा बीच-बीच में रोक कर उन पर रखी जा रही मालाओं फूलों को ढंग से नौच दीवानू पर डालते जा रहे थे। मन्त्रीमंडल के अन्य सदस्य पीछे कारों जीपों में बैठ जुलूस के साथ बढ़ रहे थे।

जुलूस पार्टी कार्यालय पर जा पहुंचा वहां उपस्थित पार्टी कार्यकर्ताओं ने ट्रक पर चढ़ सावधानी से नौच दीवानू के शव को उतार पहिले से बने मंच पर ले जाकर जनता के दर्शनार्थ रख दिया। पार्टी के कार्यकर्ता, जनता के लोग, दिल्ली से प्रधानमन्त्री के ओर से भेजे गये प्रतिनिधी, नौच दीबाबू के सम्बन्धी लोग बैठ शोक कर रहे हैं। प्रदेश में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जा चुका है।

शाम होने को आई। दाह संस्कार के लिये तैयारियां शुरू हो गई। एक बार फिर शव को सज्जित ट्रक पर रखा गया। सेवा के जवान, पुलिस के लोगों ने उमड़ते जन सैलाब को नियन्त्रण में रखने की व्यवस्था कर ली।

शवयात्रा आगे की ओर बढ़ने लगी। सब ओर से नौचन्दीबाबू अमर रहे के नारे लग रहे हैं।

श्मशानघाट तक शवयात्रा पहुंच चुकी है। सेना के लोगों के सहयोग से नौचन्दी के शव को उतारा गया। लोग चिता जमाने लगे। उनके शव को रख दिया गया। सेना के बैण्ड ने मातमी धुन बजाई, सलामी दी इसके साथ अग्नि प्रज्वलित की गई। चारों ओर एक बार फिर पूरे जोर से — नौचन्दी बाबू अमर रहे की आवाज से आकाश गूंज उठा। चिता तेजी से जल उठी।

दिल्ली से आये प्रतिनिधि ने साहिला देवी के पास जा कान में कुछ कहा।

लगभग डेढ़ घंटे तक सब लोग वहां उपस्थित थे। बाद में धीरे-धीरे सब बाहर आ अपने वाहनों में बैठ लौट गये। साहिला देवी, हरिबाबू, रामबलि पाण्डेय एक ही कार से लौटे। साहिला देवी ने पांडेय और हरिबाबू से कहा—

कल सुबह आठ बजे पार्टी दफ्तर में नये मुख्यमन्त्री के चुनाव के लिये सभी को उपस्थित होना है। देहली से पार्टी महासचिव भुवनेशजी आज रात्रि ही यहां पहुंच रहे हैं। उनसे भी बातचीत होगी। वे विधायकों से नये नेता के सम्बन्ध में उनकी राय लेंगे। सभी विधायकों को कार्यालय में उनसे एक एक कर मिलने को कह दिया गया है।

पाण्डेयजी बीच में ही बोलते हैं—साहिलाजी आप घर जाकर स्नान आदि से निवृत्त हो जायें। मैं आपके यहां आ रहा हूं। फिर हवाई अड्डे चल भुवनेशजी की अगुवानी करनी है।

ठीक है। आप आजायें मैं तैयार मिलूंगी। हरिबाबू आप भी मेरे यहीं आ जायें। साथ ही चलेंगे।

साहिला जी मैं सीधे हवाई अड्डे पहुंच जाऊंगा।

इन्हीं बातों को करते गाड़ी साहिलाजी के बंगले जा पहुंची थी। साहिला जी दरवाजा खोल बाहर निकल आई।

अच्छा, पांडेयजी आप घर हो आयें मैं तब तक तैयार हो लूं।

हरिबाबू और पांडेयजी को ले कार बंगले के अहाते से बाहर निकल जाती है। साहिलाजी थके कदमों से घर में प्रवेश करती हैं। ✲

हवाई अड्डे पर पार्टी के महामंत्री भुवनेशजी की अगवानी में विधायक, साहिलाजी, रामबलि पांडेय, हरिबाबू, पार्टी कार्यकर्त्ता उपस्थित हैं। अगले कुछेक क्षणों में विमान उतरता है। सब लोग विमान के पास जा पहुंचते हैं। भुवनेशजी, उनके साथ दो अन्य पदाधिकारी नीचे आते हैं। तब ही भुवनेशजी जिन्दाबाद के नारों के साथ उपस्थित लोगों ने उन्हें मालाओं से लाद दिया है। वे सीधे कुछ दूर पर खड़ी कार में जा बैठते हैं। फिर साहिलाजी, हरिबाबू, रामबलि पांडेय, कार में आगे रामावतार भी अपना स्थान ले बैठ गये हैं। कारों का काफिला पार्टी के दफ्तर के लिये चल दिया है।

पार्टी कार्यालय पर भुवनेशजी के पहुचने के साथ वहां उपस्थित कार्यकर्त्ताओं ने फिर-भुवनेशजी, जिन्दाबाद के नारे लगाये। बिना उन पर कोई भी ध्यान दिये भुवनेशजी कार्यालय में जा बैठते हैं। वे कहते हैं-

आप लोग सब बाहर जायें तो काम शुरु किया जाये। काफी समय लग जायेगा सभी विधायकों की राय मालूम करने में।

सब लोग एक-एक कर बाहर आने लगते हैं। भुवनेशजी ने रामबलि पांडेय और साहिला को उनके पास रुकने को कहा है। वे दोनों उनके पास ही बैठ गये हैं। फिर एक-एक कर विधायकों को अन्दर बुलाया गया, उनसे बातचीत की गई।

रात के कोई चार बज गये। बीच बीच में चाय-काफी, नाश्ते के कई दौर चलते रहे। महामंत्रीजी ने सबकी राय जानने के बाद पांडेयजी के कान में कुछ कहा। पांडेयजी के चेहरे पर मुस्कान फैल जाती है। उन्होंने भुवनेशजी को बधाई दी। भुवनेशजी ने साहिलाजी को बधाई दी कि अधिकांश विधायकों ने उन्हें ही मुख्यमंत्री पद के लिये योग्य उम्मीदवार माना था। भुवनेशजी इस समाचार को बाहर उपस्थित विधायकों कार्यकर्त्ताओं को सुना देने के लिये कहा। पांडेयजी अपने स्थान से उठ बाहर गये उन्होंने वहाँ उपस्थित लोगों से दूसरे दिन प्रातः ग्यारह बजे राज्यपाल के यहां साहिलाजी के शपथ कार्यक्रम

की सूचना भी दी। मत्रीमण्डल के सम्बन्ध मे पूछे जाने पर पत्रकारो को उन्होने बताया कि कल दिन म मत्रीमण्डल की घोषणा कर दी जायेगी।

इनके बाद भी विधायक वही जमे रहे। साथ के कमरो में बैठे मत्रीमण्डल म किन लोगो को लिये जान की सम्भावना रहगी पर चर्चा, गपशपबाजी करते रहे।

भुवनेशजी ने साहिला से कहा—

साहिला, प्रसन्नता की बात है आपके यहा सभी विधायको ने आपको मुख्यमत्री बनाये जाने की बात कही। इनके अलावा पार्टी हाईकमान का भी आपके लिये ही निर्देश था। जनतान्त्रिक ढग स सब काम सम्पन्न हो गया अच्छा रहा। अब आप प्रदेश की बागडोर मजबूती से पकड कर चलाए। मत्रीमण्डल के सम्बन्ध म भी बात कर लेंगे। नौबदजी के मत्रीमण्डल के पार्टी विरोधी, लोगो मे से एक का भी दोबारा मत लाइये। तब ही आपका उद्धार हो सकता है।

आप ठीक कह रहे हैं। अच्छा होगा आप ही इस सम्बन्ध मे अपनी राय जाहिर कर दें।

मुझे विशेष कुछ कहना नही है। रामबलि आपके विश्वासपात्र रहे हैं उनकी अवश्य सिफारिश करता हू।

उनके लिये आपको सिफारिश करनी पडे तो अच्छी बात नही होगी। मेरे लिये हमेशा सीधे हाथ के रुप मे रह हू व। हरिबाबू के लिये क्या कहेगे आप।

उन्हें लेकर ज्यादा दुविधा म पड जायेंगी आप। काले धन और पूजी पतियो के साथ उनके गठजोड पहिले ही पार्टी की छवि खराब कर चुके है वे।

समझ गई आपका सकेत। चुस्त प्रशासन और पार्टी के लिये आपका यह कदम उचित और आवश्यक है।

इन्हीं बातो म सुबह हो गई। मेरा मन भविष्य की जिम्मदारियो, मुख्यमत्री जैसे प्रभावशाली पद, उसके आत्मिक सुख मे उलझ गया था। आखो म तज नीद जसा जो कुछ समय पहिले लग रहा था वसा कुछ भी नही था। मन हवा मे पतग की तरह कभी ऊपर कभी नीचे फर्राटे के साथ उड रहा था। मेरी चुप्पी को देख पाण्डेयजी सहसा बोले—

कहा खोगई साहिलाजी।

बस यों ही सोचने लगी थी कि आप लोगों ने मुझ पर इतनी बड़ी जिम्मेदारी डाल दी है। पता नहीं कैसे कर पाऊँगी इतना काम।

आप हमारी नेता हैं। काम तो हम सबको मिलजुल कर ही करना होगा। एकदम निश्चिन्त रहें आप। सब हो जायगा। घबराने से कुछ नहीं होगा। अब मैं और चाचा भुवनेशजी घर जायेंगे। विश्राम के बाद सीधे राज्यपालजी के यहाँ पहुँच जायेंगे। आपको साथ लेने आने की आवश्यकता नहीं समझता मैं।

नहीं। आप घर पर आईये साथ ही चलेंगे राज्यपालजी के यहाँ। चलें फिर।

भुवनेशजी, पाण्डेयजी, हरिबाबू और मैं बाहर खड़ी कार में आ बैठते हैं। ड्राईवर को तेज नींद आ रही थी। गाड़ी के दरवाजों के खुलने से जाग उठा था वह।

पाण्डेयजी कहाँ चलना है।

साहिलाजी का घर छोड़ दो। फिर मेरे घर चलो।

कार चल दी। सामने सूर्योदय हो रहा था। आज का दिन मेरे जीवन में उन्नति का सबसे बड़ा दिन लग रहा था मुझे। पाण्डेयजी भुवनेशजी से चुपचाप बैठे बातें कर रहे थे। मेरे मन पर भी गंभीरता मुझ पर हावी हो रही थी। पता ही नहीं चला कब मेरे बंगले पर आकर रुक गयी थी। बाहर निकल भुवनेशजी, पाण्डेयजी सबको नमस्कार किया।

आप दस बजे तक आ जायें। मैं तैयार मिलूँगी।

हम आ रहे हैं।



तैंतीस

दिन में राज्यपाल महोदय के यहां शपथ समारोह सादे ढंग से सम्पन्न हुआ। बाईस सदस्यों के मंत्रीमण्डल ने शपथ ली। अधिकांश मंत्रियों की सिफारिश भुवनेशजी या रामबलि पाण्डेय की ओर से ही थी। पाण्डेयजी प्रदेश के गृह, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विभागों को झटक लेने में चतुरता कर गये थे। वित्त विभाग भुवनेशजी ने जोर डालकर मेरे को ही दे दिया था अन्य मंत्रियों में अधिकांश के पास नाममात्र जैसे विभाग ही थे। उन्हें लगता था मात्र संतुष्ट कर देने की दृष्टि से अनुग्रह के रूप में मंत्रीमण्डल में शामिल कर लिया गया था। ताकि पार्टी विधायकों के पार्टी के अन्दर बनी धड़ेबन्दी से छुटकारा पाया जा सके। इस सब में भुवनेशजी की पहल सूझबूझ की रही थी। हरिबाबू मंत्रीमण्डल में नहीं लिये गये थे। इससे व्यक्तिगत रूप से मुझ से नाराज दिखाई दिये थे वे।

शाम ढल चुकी थी। भुवनेशजी, रामबलिजी को मेरे निवास पर भोजन के लिये आमंत्रित किया हुआ था मैंने। घर की व्यवस्था पूर्ण हो चुकी थी। बाहर पुलिस, सुरक्षा का बड़ा प्रबंध था। आज की रात्रि इस बंगले में और बितानी थी। कल से मुख्यमंत्री निवास में रहने जाने की सारी तैयारियां पूरी की जा चुकी थीं। पाण्डेयजी तो चाहते थे आज की रात्रि भोजन मुख्यमंत्री निवास में ही आयोजित किया जाये। पर मैंने आग्रह कर उन्हें समझा लिया था।

पूरे दिन प्रदेश के विभिन्न स्थानों, व्यक्तियों, कर्मचारी संगठनों, उद्योग पतियों के लगातार बधाई के तार, टेलीफोन, संदेश आते रहे। मालाओं, फूलों का तो यह हाल हो गया कि बंगले के पिछवाड़े में बड़ा पहाड़ सा बन गया था। इला की सहेलियां दिन भर यहां से वहां चिहुकती फिर रही थीं। बधाई संदेशों में श्रेयांसजी का तार भी था। उसी से मेरा मन उनके साथ रहे मेरे व्यवहार ने पीड़ित कर दिया था मुझे। मेरे में आत्मग्लानि का भाव उमड़ आया था। मैं अपने को स्वयं की दृष्टि में बौना अनुभव करने लगी थी। पर विचार करने पर इस निष्कर्ष पर भी पहुंची कि उन्होंने जिस चतुराई

से मुझे मेरे पति से अलग किया फिर कैसे प्रत्येक कदम पर मेरा सतत दैहिक शोषण करते रहे थे वे। मुझे याद नहीं आता उन्होंने शायद ही कोई अवसर छोड़ा था जिसमें उनके लाभ के लिये मेरा उपयोग नहीं किया हो। व्यतीत के हर क्षण को दोबारा स्मृतिपटल पर चित्र रूप में देख मेरा मन उनके प्रति एक गहरी घृणा में डूब गया था। उन्हें मैंने एक मीठे जहर के रूप में ही निष्कपट रूप में पाया था। अभी भी मेरी समझ में नहीं आ रहा कि जिस स्तर पर आज मैं पहुंची हूं उसमें उनका योगदान किस रूप में है। सच तो यह है कि बीती जिन्दगी को कितना भी मैं कुरेदती जाऊं उसमें मुझे कुछ भी नहीं मिलेगा ग्लानि, पश्चाताप और खुद पर तरस खाने के अतिरिक्त। इसलिये सोचती हूं व्यतीत की ओर से आंखें फेर वतमान के बारे में सोच काम करूं। क्योंकि जो समय निकल गया उसने मुझे नये अनुभव, पुरुष चरित्र को समझने का अवसर तो दिया ही है।

बाहर लान में कार आ रुकती है। अपने सोफे से उठ बाहर आ देखती हूं भुवनेशजी, पाण्डेजी आ पहुंचे हैं।

नमस्कार। त्रिवेदी जी।

साहिलाजी, नमस्कार। ठीक समय पर आ गये हैं हम। आपको शिकायत नहीं होनी चाहिये।

आईये। आपसे कैसी शिकायत।

आप कर भी नहीं सकती। रामबलि को हमने कहा भाई साहिलाजी से नहीं प्रदेश की मुख्यमंत्री के यहां चल रहे हैं समय का पूरा ध्यान रखना।

मुख्यमंत्री भी आपकी कृपा से ही बनी हूं मैं।

तीनों ड्राइंग रूम में आ गये थे। सोफा पर आ बैठे। कमरे में हल्का हल्का संगीत बज रहा था। भुवनेशजी उसका आनन्द लेने लगे। अचानक बोले—

कितनी सुन्दर, सुरुचिपूर्ण सजावट कर रखी है कमरे में। मन में बड़ा सुकून मिल रहा है। लग रहा है शांति में डूबे उपवन में आ गये हों हम। क्यों रामबलि जी।

सच! आप ठीक कह रहे हैं। यहां पर मुझे आज बड़ा सुख मिल रहा है। पहिले भी आता रहा हूं पर पहिले मुझे स्वर्गीय चौधरी बाबू का हल्का

सा भय लगा रहता था। आज साहिलाजी मुख्यमंत्री है प्रदेश को फिर भी कैसा भी नयापन नही लग रहा।

पाडेयजी मुख्यमत्री आप ही बन जाते तो मुझे जिम्मेदारियो से छूट्टी मिल जाती।

कसे बन जाता है। चाचा ने हवाई अड्डे पर कदम रखते ही पहली बात कान म कही थी कि साहिलाजी के अलावा वे किसी और के नाम को विधायको के मु ह से सुनना भी नही चाहगे यह। फिर क्या था हमने ब्रह्मअस्त्र उठा लिया विरोधियो के खिलाफ। आपको पता नही है शकरसेन नोटो के बक्से के बक्से उठा लाया था और मागन वाल विधायको के आगे डाल दिये थे कि उन्ह जितने रुपये चाहिये उठा ले जाय। पर किसी की मजाल थी कोई उसे मेरे रहते हाथ भी लगा लेता। जितने नये मत्री बने हैं उनमे से ज्यादातर हरिबाबू के आदमी थे। पर चाचा ने ऐसे शतरज जमाई कि हरिबाबू को सबसे पहले मात दे डाली। उन्ह अलग बुलाकर इ होने साफ कह दिया कि साहिला देवी के नाम के अलावा यह किसी भी नाम पर सहमत नही होगे दूसरा यदि उ होने कसी भी गडबड की तो उनके खिलाफ सारे काडो की फाइल प्रदेश मे आई० जी० पुलिस को उसी क्षण भिजवा दी जायेगी उधर पार्टी से भी निष्कासित कर दिया जायगा। तब जाकर हरिबाबू के लगाम डाली जा सकी है। वरना वह तो चाचा भुवनेशजी के यहा पहुचने से पहिले मुख्यमत्री बन जाने के स्वप्न सजोकर बैठा हुआ था।

रामबलि, हरिबाबू को जितना मैंने कह डाला बाद मे सोचा तो लगा ठीक नही किया। पर वह मेरी बात समझने की कोशिश ही नही कर रहा था। अत मे मजबूर होकर डाट लगानी पडी मुझे। साहिलाजी, उससे बचकर रहना। व स रामबलि पूरी नजर रखेंगे उसकी गतिविधियो पर।

त्रिवेदी साहिब! सच्चाई तो यह है रामबलिजी को पूरा ध्यान देना होगा, साथ ही हर कदम पर मेरा सहयोग करना होगा।

यह करेगा क्यो नही। आप चिता नही करें हमारा एक मिशन था आपको सत्ता की बागडोर सभालने का पूरा कर दिया हमने तो। आप जानें, पाडेय जानें। कितना समय हुआ है अभी।

सा े आठ बज रहे हैं।

रामबलिजी, आप राज्यपालजी क यहा मिल आईये। तीन प्रमुख बातें जो मैंने बताई थी सी० एम० के सदेश के रूप मे समझा द उन्ह। यही

आजायें फिर। साथ ही भोजन करेंगे। आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं तब तक। अधिक समय नहीं लगाना वहां।

आप बातचीत करें। उनसे मिलकर आता हूं।

रामबलिजी अपने स्थान से उठ कमरे से बाहर चल गये हैं। उनकी कार स्टार्ट होने और बंगले से बाहर निकलने की आवाज आती है। भुवनेशजी मेरी ओर देखते कहते हैं—

पी० एम० ने दो-चार जरूरी बातें कहा थी भेंट के दौरान। दिन में राज्यपालजी से बात करने का अवसर ही नहीं मिला। रामबलि सब समझ आयेगा उन्हें। साहिलाजी अब बताईये क्या सेवा करेंगी आप।

आप आदेश करें। सब व्यवस्थाएँ हैं।

सबसे पहिले तो हमें स्वदेशी आशा के दो-तीन ग्लास बना दें। आगे की फिर सोचेंगे।

भुवनेशजी को प्रसन्न करने के लिये पास रखी टेबल के नीचे से आशा की बोतल निकाल एक ग्लास बना उन्हें देती हूं।

और आपका ग्लास।

आप लीजिये। मेरा मन नहीं है लेने का।

साहिला। मन पर ध्यान मत दो। यह देखो कि तुम्हें मैं कह रहा हूं। चलो, मेरे ग्लास से ही पी लो। मेरे पास आओ अपने हाथों से ही पिलाता हूं तुम को।

इतना कहकर भुवनेशजी मेरे पास खिसक आये थे। उन्होंने एक बांह मेरे गले में डाल दी थी। कंधे पर पड़ी साड़ी को हटा नीचे गिरा दिया था। अपने हाथ के ग्लास को मेरे मुंह पर लगा बोले थे—

एक बार में खाली कर डालो इसे। यह ग्लास तुम्हारे नाम।

आप जिद कर रहे हैं इसलिये पी लेती हूं मैं।

क्यों। दिल्ली में तो पी ली थी ना तुमने। यहां तो तुम्हारा घर है। जी भरकर पी सकती हो तुम। लाओ, बोतल ही दे दो मुझे।

मेरे हाथ से बोतल ले पहिले पूरा ग्लास भर टेबल पर रख दिया उसके बाद मुंह पर लगा आधी से अधिक हलक के नीचे उतार ली थी उन्होंने।

उनके कानो के रोएँ कपकपा गये थ। आखो मे तेज चमक फूट पडी थी, गाल लाल हो गये थ। टेबल स ग्लास उठा एक बार फिर मेरे होठो पर लगा दिया था। कापते बोले—

लो इसे भी पूरा करो। इसके बिना मजा नही आयेगा।

यह ज्यादा हो जायेगी। इससे तज नशा हो जाता है, मुझे।

वही तो मैं चाहता हू। सारे तनावो से मुक्त हो जाओ तुम। लो, खत्म करो इस।

उनके हाथा स एक घूट पी ग्लास अपन हाथो मे से पास की टेबल पर रख देती हू। देखती हू भुवनेशजी की आखो मे तेज नशा उतर आया है। मुझ दोनो बाहो म भरत कहते हैं—

साहिला। पानी मे क्या रखा है। असली नशा तो तुम हो। उससे क्यो अलग कर रखा है मुझको तुमने।

इन शब्दो के साथ भुवनेशजी सोफे पर बैठे-बैठे मेरी गोद म लेट गये और दोनो हाथो स मेरे बालो को सहलाने लगे बोल—

दिल्ली जब भी आओ घर तुम्हारा है आना मत भूलना। बस फोन पर पूछ लेना।

बगले में कार रुकने की आवाज आती है। वे पूरी सतकता से बैठ जाते हैं

रामबलि लौट आया है शायद। भोजन करा दो इसे तो। फिर चलेंगे हम।

दरवाजा खुलता है। रामबलि ही है। उन्ह देख भुवनेशजी पूछते हैं—

ठीक से समझा दिया ना उनको।

वे एक बात पर अड गये फिर कहने लगे सुबह आपसे फोन पर और बात कर लग।

समझा देंगे उनको भी। चलो, भोजन करलें हम लोग। तुम्हारा ही इन्तजार कर रहे थ।

तीनो उठ भोजन कक्ष मे जा बठने हैं। भोजन समाप्ति पर भुवनशजी कहते हैं—

रामबलि। बहुत थकान हो गई आज सुबह से तो। अब तुम घर चलो।

हम आज तो साहिलाजी के यहाँ सो जाते हैं। सुबह नौ बजे तक आ जाना तुम। फिर दोनों साथ चलें चलेंगे राज्यपाल के यहाँ। क्या ठीक है ना। फिर कल ही दिल्ली निकल जायेंगे। हम वहाँ भी बहुत काम करने हैं जरूर।

फिर मुझे आज्ञा दें। सुबह नौ बजे आ जाऊंगा।

ठीक है। तुम भी आराम करो। थक गये होगे।

रामबलि हम दोनों को अभिवादन कर बाहर चले गये हैं। कार की आवाज से लगा कि उनकी गाड़ी बंगले से बाहर जा चुकी है।

साहिला। हमारे सोने की क्या व्यवस्था रहेगी।

आप उधर कमरे में आराम से सोएँ। चलिए।

उन्हें हाथ का सहारा दे पास वाले कमरे में ले जा बिस्तर पर सुला देती हूं। उन पर कम्बल डाल दिया है। उन्हें तेज नींद आ रही है। मैं अपने कमरे में जा लेटती हूं।



चौंतीस

राज्य की मुख्यमन्त्री बनने के बाद आज पहली सचिवालय आकर बैठी हू । गये दिनो विभिन्न स्थानो पर स्वागत कार्यक्रम चलते रहे । सबसे शानदार स्वागत वीरनगर की जनता की ओर से हुआ । जहा के सारे कार्यक्रम की व्यवस्था शकरसेन ने की थी । रामबलिजी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की । वहा के लोगो की प्रसन्नता सर्वाधिक थी । फोन की घटी बज उठती है । उठा सुनती हू —

कौन । पाण्डेयजी । मुझसे मिलना चाहते है आप । आ जाईये । कोई विशेष काय नही कर रही मै ।

फोन रख देती हू । बाहर नीचे खिडकी से देखती हू । सचिवालय परिसर म लगातार लोगो का आना-जाना, कारो का तेजी से आ रूकना, चले जाने का क्रम सा बना हुआ है । दरवाजा खुलता है । पाण्डेयजी है ।

आईये रामबलिजी ।

उनके साथ शकरसेन भी है । वे उसे पास वाली कुर्सी पर बठने का सकेत करते हैं ।

साहिलाजी, हमारे शकरजी बडी परेशानी म आ गये है । पेट्रोलियम मत्रालय से अपने प्रदेश के लिये एल० पी० जी० गैस रिफिलिंग स्टेशन की अनुमति ले आये हैं । लेकिन अपने यहा राजधानी में कोई जमीन ही नही मिल रही । आप ही बतायें कहा लगाएँ उस प्लाट को । पता नही कितनी मुसीबतो के बाद इन्ह लाईसेन्स मिल पाया है ।

शकरसेनजी आप कहां लगाना चाहते हैं । गैस का मामला है नगर क्षेत्र मे तो खतरा ही रहेगा ।

खतरे जैसी तो मैडम कोई बात नही है । आप तो हम जमीन एलाट करवा दें यही । तो कृपा होगी मुझ पर ।

वीरनगर हमारे विधान सभा क्षेत्र मे लगा लें । श्रेयासजी को तो वहां के लोग जमीन दे नही रहे । आपका उनसे अच्छा सबध है वहां ठीक रहेगो ।

वहा से लाने-लेजाने की परेशानी रहगी। यातायात मे ही बडा खच हो जायगा।

रामवलिजी मेरे विचार से तो वीरनगर श्रेष्ठ रहगा।

ठीक है शकरजी से ग्रोर बात कर लूगा। यह चाहते हैं आपका सकेत हो जाये तो जमीन सस्ते दामो पर मिल जायेगी इह।

इसम क्या परेशानी है। आप करवा दें इनका नाम। मुझे प्रसन्नता ही ही होगी। कितनी जमीन चाहिये आपको।

रामवलिजी, प्रदेश का एकमात्र रिफिलिग स्टेशन होगा इसलिए ग्राप समझते ही ह जमीन कितनी चाहिये।

शकरसेन जी, मैडम की ग्रोर से झडी मिल गई है बाकी हम सब करवा देग। चिन्ता नही करें ग्रब ग्राप। मेरा काम ही समझो आप।

ग्रापका ही काम है।

ग्रच्छा। साहिलाजी, मैं चलूगा। काफी काम निबटाना है मुझे। भुवनेशजी से सुबह फोन पर बातचीत हुई थी। ग्रापस मिलना चाहत है व। दिल्ली बुलवाया है ग्रापको। उनका फोन भी ग्रा जायेगा। ग्रापके पास।

ठीक है। बात कर लूगी उनसे। आपका काय कैसे चल रहा है।

श्रेयासबाबू की बन्द पडी मिला, कारखाना के कमचारी, उनके नेता रोज मिल रह हैं। हडताल, तालाबन्दी हुये कइ महीन हान ग्राये कसी भी शान्ति का माहौल बन नही पा रहा। श्रेयासजी बीमार पडे हैं उ ह मिला की कोई चिन्ता नही उन्होने मजदूर नेताग्रो से साफ कह दिया है कि वे किसी प्रकार की सहायता नही कर पायेंग। ग्राथिक रूप से टूट चुके हैं वे। उनका लडका विनीत ही इन दिना काम सभाल रहा है। सारे कार्यों का बागडोर इसी ने समाल रखी है। श्रेयासजी न केवलस के कारखाने के लिये पास गाव म जमीन ले ली है उसका निर्माण काय विनीत ही देख रहा है। श्रेयासजी तो सप्ताह - दस दिन मे एक बार जा देख ग्राते हैं।

चलिय ग्रच्छा है उनका लडका काम कर रहा है। वह कम से कम पिता के पदचिन्हो पर तो नही होगा। नवयुवक है उत्साह से काम कर रहा होगा। पूरे जीवन श्रेयासजी उस पर किसी प्रकार का ध्यान नही दे पाये। दो-एक बार उसस घर पर मिली ह कुठित ही लगा मुझे।

ग्राप कब मिली उससे।

वह मेरे यहा लडकी से मिलने कभी-कभी आता रहता है। मैंने समझा था कालज म पढ़ रहा होगा। पर लडकी ने बताया कि वह पढाई पूरी करके अपना व्य साय करता है। एक दिन मैंन उसी से पूछा तब मालूम हुआ श्रेयास जी का लडका है वह। जवान बच्चे को दखकर खुशी हुई मुझे। वह श्रेयास जी से स्वभाव में बिल्कुल अलग है। गंभीर और कम बात करने वाला है।

अच्छा साहिलाजी मैं चलूँगा। केबिनेट मीटिंग कब रखी है आपने।

बस सूचना भिजवानी है सब लोगो को। इक्कीस तारीख को रखी है। कोई खास मुद्दे आपकी नजर में हो तो मुझसे बात कर लेना। बाकी तो बजट पर ही मुख्य रूप से चर्चा रहेगी।

दो-एक मुख्य बिंदु हैं उन पर घर जाकर आपसे चर्चा कर लूँगा।

ठीक है। जैसा उचित समझें।

आईये, शंकरजी चलें। नमस्कार साहिलाजी।

नमस्कार।

पाण्डेयजी के जाने के बाद इला और विनीत के बारे में सोचने लगी हू। विनीत को अक्सर घर पर इला से बातें करती देखती हू। लगता है दोनो में अनकही आपसी समझ पैदा होने लगी है इस सब में मुझे कोई बुराई नही लगती। जैसे चल रहा है देखते हैं आगे कैसी स्थितिया बन पाती है। तब ही फोन की घण्टी बज उठती है। फोन उठा सुनती हू। सचिव ने बताया देहली से पार्टी महासचिव श्री का फोन है।

भुवनेशजी बोल रहे हैं। नमस्कार। कहिये क्या आदेश है। पी० एम० ने ग्यारह तारीख को मिलने का रखा है। आ जाऊगी। योजना आयोग के अध्यक्ष से भी मिलना है। अच्छी बात है। आपसे एक ही निवेदन है हमारे राज्य के अगले वर्ष के लिये अधिकतम राशि जो सभव हो मंजूर करवाईयेगा। आपको ही देखना है हमारे राज्य के बारे में तो। मैं दस की शाम ही आ जाऊँगी। हा, हा। आपकी ही मेहमान हू। आपका स्नेह है मुझ पर। नमस्कार। रामबलिजी पूरे उत्साह से काम कर रहे हैं। पूरा सहयोग है मुझे। आप चिन्ता नही करें। धन्यवाद। नमस्कार।

फोन रख कैलेण्डर पर नजर डालती हू नौ तारीख तो हो भी गई आज। कल ही जाना देहली। सोचती हू रामबलिजी भी साथ चलें तो अच्छा रहेगा। सचिव से पाण्डेयजी से बात कराने को कहती हू। फिर घंटी बजती है।

पाण्डेयजी बोल रहे हैं। अभी भुवनेशजी का देहली से फोन आया था। पी० एम० ने मिलने बुलाया है परसों। योजना आयोग के अध्यक्ष से भी बात होगी। आप भी चलेंगे तो मुझे बड़ी सरलता हो जायेगी। ठीक है। कल रात्रि नौ बजे के आसपास चलेंगे। मजी, विमान से ही चलेंगे। फोन बन्द कर रही हूं।

दोबारा फोन कर सचिव को योजना मन्त्री, योजना आयुक्त को शाम घर बुलवाने के लिये कहती हूं। यहां मन नहीं लग रहा है। सचिव से नीचे गाड़ी की व्यवस्था के लिये कह अपने कमरे से बाहर निकल आई हूं। लिफ्ट से नीचे आ गाड़ी में बैठती हूं। ड्राईवर पूछता है—

मैडम कहां चलना है।

घर।

और कार मुख्यमन्त्री निवास की ओर चल पड़ती है। 

पैंतीस

एक पखवाडे से अधिक समय बीता, अजीब बचैनी जागते मस्तिष्क मे लगातार चलती रहती है। देर रात्रि खुली आखो से जागता करवटें बदलता रहता हू। पास सो रही पत्नी मनोरमा बीच-बीच मे जब भी जागती है मुझे सुलाने का प्रयास करती है पर स्वय सो जाती है। दिन और रात म मुझे कैसा भी अन्तर नही लगता। चुप लेटा छत पर लगे पखे को लगातार दखता जाता हू। वहाँ से नजर हटती है तो पता नही क्यो मेरे दाये हाथ पर रखी टेबल जिस पर दवाईया की शीशियाँ, इजेक्शन पडे हैं वहाँ जाकर टिक जाती है।

अभी सुबह के नौ ही बजे हैं। पत्नी सुबह के आवश्यक कार्यों मे लगी है। मेरे अधिकाँश औद्योगिक प्रतिष्ठानो की तालाबन्दी को, साथ ही मेरी चिन्ताओ से पूणत परिचित है। उसकी बाता का अधिकाश समय मुझे नैतिक साहस बनाये रखने का होता हैं। जो कही अच्छा भी लगता है। पर व्यवहार मे, सासारिक आधारो पर वैसा होता नही है। मेरे मिला के मजदूर, उनके घर वाले आ जब मुझे बेरोजगारी से उनके जीवन की त्रासदी के लिये बताते हैं तो भला नही लगता। उन मजदूरो मे अधिकाशत वे लोग है जो अपने यौवन म मेरे यहाँ काम करने लगे और अब वृद्ध हो चले है। इन लोगो से मेरा लम्बा और परिवार सा सम्बन्ध है। इ ही लोगो ने दिन-रात काम करके मेरे व्यवसाय की श्रीवृद्धि की। उनके दुख से कैसे आँख बद कर सकता हू। पत्नी चाय ले आई और मेरी ओर देखे जा रही है। कहती है—

चाय लीजिये। फिर क्या सोचने लगे।

कुछ नही बस या ही। विनीत क्या कर रहा है।

कपडे पहिन नीचे आ हो रहा है। दिन-रात मिल क काम मे लगा रहता है। तुम्हारे पर ही गया है वह। न खाने को न सोने की फुसत उसे।

मनोरमा जिन लोगो के जीवन म कुछ प्राप्त करना है उन्ह इसी लगन से काम करना पडता है। मुझे प्रसन्नता है।

आओ, विनीत बेटा। बैठो नाश्ता कर लो।

आपकी तबियत कैसी है अब। आपके आशीर्वाद से कल मेरे मिल भारत टेक्सटाइल का उद्घाटन होगा। आपको, माताजी को चलना होगा उसमें।

जरूर चलेंगे। पर समझ नहीं आया इतना बड़ा कार्य तुमने कैसे कर लिया।

मुझे करना था सो हो गया।

अच्छा है। उद्घाटन कौन कर रहा है।

प्रदेश की मुख्यमन्त्री साहिलाजी काम कर रही हैं।

कौन। साहिला मुख्यमन्त्री।

जी। हां। आप तो चौंक से गये। उन्होंने मुझे प्रोत्साहन दिया है। गये दिनों भी मिला उनसे उनका रुख हमेशा सहयोगी रहा।

कैसी हैं अब साहिलाजी।

अच्छी हैं।

तुम्हारा उनसे परिचय कैसे हुआ।

उनकी लड़की मेरे साथ यूनिवर्सिटी में दो साल पीछे पढ़ती थी। पहिले मेरा उससे परिचय हुआ था। उस समय साहिलाजी राजनीति में भी नहीं थी। उन दिनों दो-चार बार उनके घर भी गया था।

ठीक है। खूब काम करो। पर यह लोग राजनीति के हैं इनसे चौकन्ना रहना भी आवश्यक है। यह बात हमेशा तुम्हारे मन में रहनी चाहिये। एक कदम भी इधर से उधर नहीं होना चाहिये।

वह मुझे याद रहेगा। डाक्टर आता ही होगा। आप दवाएँ लगातार लेते रहें।

लेता ही हूं। तुम्हारी माँ सेवा करती है। सच कहूं जब से बीमार हुआ हूं घर में रहने का अवसर ही अब मिला है मुझे। वरना जीवन का अधिकांश हिस्सा मैंने घर से बाहर ही निकाल दिया। तुम पर अधिक ध्यान नहीं दे पाया। यह कमी हमेशा खटकती रहती है।

पिताजी आप द्वारा लगाए भौतिक सुविधाओं के जंगल में कभी आपको नींद में चहचहाती मेरी आवाज तक भी सुनने का आपको अवसर नहीं

मिला। किशोरावस्था से यौवन के देहलीज पर कब मैंने पैर रखे यह सारे क्षण आपकी भाषा में कभी स्थिर नहीं कर पाये आप। बस चाहते नहीं चाहते मैं बड़ा होता गया। पैतृक संस्कार के रूप मे आपसे सच कहू मुझे क्या मिला याद नहीं कर पाता मैं। एक पिता के रूप में आपको महज देखा और समझा इससे अधिक कुछ नहीं। पर बीत समय ने जरूर इस आयु मे ही समझा दिया है कि जिन्दगी की राह मुझे स्वयं खोजनी होगी और उसी मे लगा भी हू।

विनीत। मेरे दोष ढूढने से तुम्हे कोई लाभ नही होगा। प्रसन्नता है जीवन की कडी सच्चाई को तुम समझ गये हो। जिस संस्कारहीनता को लेकर मैंने जीवन जिया है उससे अधिक तुम्हे और दे भी क्या सकता था। व्यतीत का मुझे कैसा भी सुख अनुभव नहीं होता। जो बात है हर क्षण अनुभव करता रहा उसे तुमने इस कटुसत्य के रूप में मेरे सामने उधेड कर रख दिया आश्चर्यचकित हू मैं। नई पीढी के हो तुम और इतने समझदार हो जानकर भला लगा। तुम बिना हिचक जीवन मे आगे बढो मेरा आशीर्वाद है।

कहते-कहते पिताजी बेहोश हो गये थे। झकझोरते मैंने कहा था—

पिताजी, क्या बात है।

पीछे खड़ी मा ने साड़ी के पल्लू से आँसू पोछते कहा था—

विनीत। घबराओ नहीं होश आ जायेगा इन्हें। एक बात ध्यान से सुनो तुम ही नहीं समाज के हजारो युवक-युवतियाँ ऐसे ही जीवन को जी रहे हैं। तुम तो विश्वविद्यालय मे पढे हो वहाँ कुछ भी नहीं देखा क्या। यह सच है तुम्हारी नई पीढी इस अभिशाप को भोगने को विवश है लेकिन बुजुर्ग पीढी के लिये सहानुभूति यदि मन मे ला पाओ तो तुम दोनो अपने-अपने समय में सुख से अभी भी जी सकते हो। स्वयं के जीवन निर्माण मे आज का सत्य ही काम आता है कल के आदर्श नहीं। क्योंकि आदर्श, मान्यताएँ युग के सत्य बदलते रहते हैं। इस समय मैं इतना ही कहना चाहती हू। डाक्टर प्रसाद आ गये हैं तुम जाओ काम करो। मैं सभाल लूँगी इन्हें। होश आने पर तुम्हें देख विचलित हो जायेंगे। आईये। डाक्टर प्रसाद।

नमस्कार। विनीतजी। कैसे है श्यामजी। आप बैठें चैक अप कर लेता हूं।

मा ने मुझे बाहर जाने को कहा है। मैं अपना ब्रीफकेस उठाए बाहर चला जाता हू।

मनोरमाजी। इन्हें आराम करने दें। अधिक बातचीत से यह अपना मानसिक नियंत्रण खो देते हैं। और उत्तेजित हो जाते हैं। मेरी राय में इन्हें आप मेरे अस्पताल में भर्ती करवा दें। कुछ दिनों वहां रहने परिवर्तन भी हो जायेगा। आप चाहें तो आप भी रह सकती हैं। सारी व्यवस्था है वहां पर।

जैसा आप उचित समझें। यहां घर पर जागते-सोते हमेशा घोर चिंताओं में डूबे छत को देखते रहते हैं। मिलों के बंद हो जाने के बाद सोचते हुए ही अचेत हो जाते हैं। आपकी दी हुई दवा से इन्हें लाभ है। मिल के मजदूरों की खराब हालत पर परेशान रहते हैं। वे लोग इनसे मिलने आते रहते हैं।

आप यह दवाएँ और इन्जेक्शन और मंगवा लीजिये। बाकी मैं इनके अस्पताल आने पर सोचकर बताऊँगा। आपने विनीत के विचारों को बताया था। इन्हें कम से कम बात करने दें उनसे। क्योंकि यह कहते अधिक नहीं बस सोचते रहते हैं उसी से इनका स्वास्थ्य और खराब होता है। इस बात का विशेष ध्यान रखें।

डाक्टर प्रसाद, कोशिश करती हूं ऐसा नहीं हो पर इनकी अस्वस्थता, विनीत की इच्छाओं को टोक पाना दोनों के धर्मसंकट से उबर नहीं पाती। फिर भी ध्यान रखूंगी।

मनोरमाजी। मैं चलता हूं।

डाक्टर प्रसाद अपना बैग उठाये शांत कदमों से दरवाजे की ओर बढ़ गये हैं। उन्हें जाते देखती रहती हूं।

छत्तीस

देहली म पार्टी हाईकमान की मीटिंग के बाद सचिवालय के अपने कमरे म आकर बैठी हू। देहली मे भुवनेशजी, पार्टी के अन्य उच्चस्तरीय पदाधिकारियो के साथ विचार-विमश, उनके निर्देशो से मुझे लाभ हो हुआ है। साथ ही मुझमे काय को निष्ठा से करते चले जाने की भावना को बल मिला और मेरा आत्मविश्वास दृढ भी हुआ। रामबलिजी के साथ होने से मुझे किसी प्रकार की असुविधा नही हुई। राज्य के कई मामलो पर पार्टी हाईकमान स अकेले ही बातचीत की। सच तो यह है उन विषयो पर मुझे बात करनी होती तो मेरे लिये कठिनाई हो सकती थी। टेलीफोन की घटी बज उठती है —

कौन है माथुर साहब। हरिबाबू है। अन्दर भेज दो उन्ह। आईये हरि बाबू, बठिये, क्स हैं आप।

कृपा है आपकी।

कहिये। कोई विशेष काय।

हा, विशेष भी मान सकती है आप। श्रेयासजी गम्भोर रूप से बीमार हैं। आज अस्पताल गया था। आपसे मिलकर अत्यन्त आवश्यक बात करना चाहत ह। आपकी सुपुत्री से भी कहा था उन्होने।

श्रेयास बाबू को मुझसे क्या काय हो सकता है। खैर, प्रयास करूंगी मिलन का।

प्रयास नही मैडम आप मिल ही लीजियेगा। व शायद उनके बन्द पडे औद्योगिक सस्थानो के बारे म बात करना चाहते हैं।

ठीक है मिलने जाऊंगी। किस अस्पताल म है व।

डाक्टर प्रसाद के यहाँ हैं।

समझ गई मैं। आपका कार्य कैसा चल रहा है।

अच्छा ही है। आप क्या नही जानती।

काम करते रहिये।

आपकी देहली यात्रा कैसी रही।

सुखद रही। नया बहुत कुछ सीखने को मिला।

मैडम। आप बुरा नहीं मानें तो कुछ पूछना चाहता हूं।

जरूर पूछिये। वैसे भी मेरे मुख्यमन्त्री बनने के बाद शायद आज ही पहली बार भेंट हो पा रही है आपसे।

आप किसी कारण नाराज तो नहीं है मुझसे।

कतई नहीं। आपसे नाराजगी का कारण क्या हो सकता है। आपकी तो आभारी हूं मैं। मुझे राजनीति में लाने का श्रेय आपको ही है। आपने ही पार्टी में सदस्य बनाया मुझे। आज जिस स्थान पर आई हूं आपके सहयोग के बिना सम्भव नहीं था। आप सच मानें उपकार मानती हूं आपका।

ऐसा मत कहिये आपके मुंह से ऐसा सुन भला नहीं लगता। आप में योग्यता है, कुछ कर गुजरने की भावना है। फिर आपको जो कुछ भी अवसर मिला है उसके लिये पूर्णतः योग्य है। एक उत्सुकता अवश्य है मुझ में। आप मेरे बारे में स्वस्थ दृष्टिकोण रखती है फिर भी आपने मुझे कैसे भी कार्यभार के योग्य नहीं समझा। इसका उत्तर नहीं खोज पाता मैं।

आप विधायक है, पार्टी के वफादार सैनिक हैं यही सेवा कौनसी कम है। रही मन्त्रीमंडल में नहीं लिये जाने का कारण उसके लिये स्पष्ट कर दूं आपको मन्त्रीमंडल के चयन में अधिकांश रूप से पार्टी हाईकमान के आदेशों के आगे कुछ भी नहीं कह सकती मैं। वैसे आप काम करते रहें, अपने क्रियाकलापों से यह विश्वास दिला दें कि अनुशासन की सीमा जिन्हें लांघने की आपने कोशिश की थी वह अब आपके मस्तिष्क से साफ हो गई है तो समय आने पर आपको जरूर कोई जिम्मेदारी दी जा सकती है।

आपको मेरे बारे में सही रिपोर्ट मिलती नहीं है या कुछ गलतफहमियां अवश्य हो गई हैं।

मुझे कभी भ्रम नहीं होता। तस्कर शंकरसेन के साथ मिल मन्त्रीमण्डल के गठन के समय जो तरीके आपने अपनाने चाहे किसी से छिपे तो हैं नहीं। मेरी बात का बुरा नहीं मानें आप। कई दिनों बाद आपसे बात करने का अवसर आया है तो मैंने कह भी दिया अन्यथा कहने जैसी आवश्यकता भी नहीं मानती मैं।

ऐसा कुछ भी नहीं था मैडम। रामबलिजी ने आपको। सही सूचना नहीं दी है मैं समझ गया।

हरिबाबू। सही क्या है आप और मैं दोनों ही जानते हैं। अनावश्यक चर्चा से कोई लाभ नहीं। आप इस बात को यो भी मान लें राजनीति है यह इसमें कई दृष्टिकोणों से एक बात को समझा, परखा, जाना जाता है। रही रामबलिजी की बात व्यक्तिगत जीवन में व क्या है अधिक जानकारी नहीं मुझे पर हर कदम पर मेरे दायें हाथ की तरह मेरा सहयोग किया है और आज भी करते हैं।

मैडम। आपने मेरे प्रति जो धारणा बना ली है मैं समझता हू उसे इतनी जल्दी साफ नहीं कर पाऊंगा मैं। समय के साथ हो सकता है स्थितियां, चेहरे आपके सामने साफ होते जाएँ और आप नई दृष्टि से कुछ सोचने लगें। अच्छा चलूंगा मैं। आप श्रेयासजी से अवश्य मिल लें। शायद अधिक समय के मेहमान नहीं हैं वे। कहीं यह न हो आपसे जो बात वे करना चाहते हैं मृत्यु से पूर्व कह नहीं पाएँ वे। नमस्कार। चलूंगा मैं।

एक कष्ट जरूर करें आप डाक्टर प्रसाद को फोन पर बता दें आज शाम ही उनके अस्पताल जाऊंगी मैं।

कितने बजे तक जा पायेंगी आप।

यही कोई पांच छः बजे के आसपास।

कह दूंगा मैं। आप मिल लेंगी तो उनकी आत्मा को शान्ति मिलेगी। चलूंगा मैं।

नमस्कार। हरिबाबू।

हरिबाबू उदास कदमों से चुपचाप मेरे कमरे से बाहर चले गये हैं। उन्हें मैंने जितना साफ-साफ कह दिया सोचती हू गलत नहीं या वह। अपने व्यतीत, श्रेयासजी, हरिबाबू के बारे में सोचने लगती हू।

सैंतीस

शाम पटो पर उतर आई है। पाँच सात गाडियां का लवाजमा डाक्टर प्रसाद के बडे अस्पताल के अहाते में रुकता है। डाक्टर प्रसाद निकल बाहर आते हैं। मालाओ से स्वागत करते। मेरे सचिव मायुर उन्हें श्रेयासजी के स्पेशल वार्ड के बारे म पूछते हैं। उत्तर म वे कहते हैं—

मायुर साहब दिन म आपका फोन आ गया था। आप लोगो की प्रतीक्षा ही कर रहे थे हम लोग। इधर से आ जाईये मैडम।

डाक्टर साहब कैसा स्वास्थ्य है श्रेयास बाबू का।

कैसा भी सुधार नही है। ईश्वर पर छोड दिया है उनके जीवन को। रहा हमसे जितना हो सकता है वह कर ही रहे हैं।

आओ, इला बेटी।

मेरे साथ बेटी इला भी है। घर से चलते समय कहने लगी सेठ श्रेयास जी को देखना और मिलना चाहती है वह। सो उसे भी साथ ले आई म। सोचा उसका घूमना भी हो जायेगा। चलते श्रेयासजी के काटेज तक पहुंचे हैं। डाक्टर प्रसाद कहते हैं—

मैडम आप और इलाजी दो ही अन्दर जायें तो श्रेष्ठ होगा। अन्दर सेठ साहब के सुपुत्र विनीत जी, उनकी माताजी भी हैं। अधिक लोगो से ठीक नही रहेगा।

हमारे साथ चल रहे अमला वही रूक गया है। मैं और इला अन्दर जाते हैं। श्रेयासजी के खून चढाया जा रहा है। मुझे देख चाहते हैं उठें वे। उनके पास जा लेटे रहने को कहती हू—

आपकी तबियत कैसी है श्रेयासजी।

हाथ के सकेत स पास बठने को कहते हैं। फिर बुदबुदाते स कहते हैं—

आपको इसलिए तकलीफ दी कि मेरे मिलो के हजारो मजदूर तालाबदी, हडतालो के कारण सडक पर आ गये हैं। आप कृपा करें मुझ पर केन्द्र सरकार से बात कर सारे औद्योगिक प्रतिष्ठानो का राष्ट्रीयकरण करा शुरू करादें

मुझे एक पैसा नहीं चाहिये। पर मजदूरों के चहरे पर लिखी भूख को नहीं देख सकता मैं। यह तुम्हारी बेटी है ना।

हां। श्रेयासजी। केन्द्र सरकार से बात कर जो भी हो सकता है किया जायेगा। आपकी इस हालत को देख पुरानी सारी बातों को भूल जाना चाहती हू मैं।

साहिला। तुमसे यही आशा थी मुझे। मेरे मन पर पड़ा भार दूर कर दिया है तुमने। मेरे लड़का विनोत तुम्हारी बेटी की प्रशंसा करता रहता है उसकी मां का।

हां। श्रेयासजी। एक-दो बार इन्हें इला के साथ अवश्य देखा है मैंने।

साहिला। जीवन समर से चलते-चलते एक बार और कहना चाहूंगा इला मुझे दे दो। बहू बनाना चाहता हू मैं।

इला और मेरी दृष्टि मिलती है। वह कहती है–

मम्मी। लोकसभा का चुनाव लड़ने का निश्चय कर लिया है मैंने। शादी करके अपने भविष्य को किसी एक के साथ बांध देना नहीं चाहती मैं। अभी लम्बी उम्र सामने पड़ी है मेरे।

इला। मुझे बहुत सी आशाएँ हैं तुमसे।

विनीत। मेरे हमसफर मित्र लेने का अर्थ ठीक से नहीं लगा पाये तुम। मैंने तुमसे विवाह जैसे बंधन में उलझकर फंस जाने की कभी सोची भी नहीं थी। मेरे जीवन के रास्ते अलग हैं, उद्देश्य अलग हैं।

इला बेटी। राजनीति जिसे तुम भविष्य मान रही हो कठिन रास्ता है वह। किसके सहारे चलना चाहती हो तुम।

मम्मी। यह दृढ़ निश्चय है मेरा। शंकरसेन मेरे साथ है।

क्या कहा शंकरसेन, तस्कर।

तुम कुछ भी कह सकती मम्मी। मुझे भी स्वतन्त्रता से जीने का अधिकार है और मेरे जीवन पर आपका कोई भी नियन्त्रण को बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगी मैं।

विनीत, श्रेयासजी चौंक के इला की ओर देख जा रहे हैं। मैं कुछ भी कह पाऊं हिम्मत नहीं रही मुझमें। पास रखी कुर्सी पर धड़ाम से बैठ जाती हू। कुछ देर बाद उपस्थित लोगों का ध्यान आता है साहस कर बोल पाती हू-

साहिला। क्षमा कर दो इन्हे उत्तराधिकार मे हम कुछ भी तो नही दे पायें हैं। दोष इनसे अधिक हमारा है। इला बेटी, इधर

कहते श्रेयासजी बेहोश हो जाते है। डाक्टर प्रसाद वहा आ गये हैं। उपस्थित लोगो से प्रार्थना के स्वर मे कहते हैं—

आप कृपा करके बाहर आ जायें। श्रेयासजी गभीर हैं।

एक-एक कर हम लोग बाहर आ गये है। सब साथ हैं पर अपने-अपने अजनबियो की तरह।

इतिश्री। 